# पैदाइश

*[illegible]*

यहूदी रिवायत और दीगर बाइबिल के मुसन्निफों में से एक मूसा है जो नबी और इस्राईल का छुड़ानेवाला, तमाम तौरेत का मुसन्निफ़ है यानी पुराने अहदनामे की पहली पांच किताबें — उस की तालीम कसर — ए — शाही (आमाल 7:22) और उसकी नज़दीकी रिफाक़त यह्वे से थी जो येसु ने खुद ही मूसा के तसनीफ की तस्दीक की है (यूहन्ना 5:45 — 47) जिस तरह फकीही और फरीसियों ने उस के वक़्त में किया (मत्ती 19:7; 22:24)।

*[illegible]*

इस के तसनीफ़ की तारीख़ 1446 - 1405 कबल मसीह के बीच है।

मुमकिन तौर से उन बरसों के दौरान जिन में बनी इस्राईल कौम बयाबान में सीना पहाड़ के नीचे ख़ेमों में सुकूनत करती थीं उन दिनों मूसा ने गालिबन इस किताब को लिखा होगा।

*[illegible]*

बनी इस्राईल वह इब्तिदाई जमाअत जो गुलामी से छूट कर अपने ख़ुरुज के बाद वायदा किए हुए मुल्क — ए — कनान में दाख़िल होने से पहले रहा करते थे।

*[illegible]*

बनी इस्राईल कौम की "खानदानी — तारिक को समझाने के लिए मूसा ने यह किताब यह बात समझाने के लिए मूसा ने इस किताब को लिखा कि बनी इस्राईल कौम ने किस तरह खुद को मिस्र की ग़ुलामी में पाया (ख़ुरुज 1:8) यह समझाने के लिए कि जिस मुल्क में वह दाखिल होने वाले थे वह उनका वायदा किया हुआ मुल्क" था (ख़ुरुज 17:8) यह जताने के लिए कि खुदा की

हुकूमत उन सब बातों पर जो बनी इस्राईल कौम पर वाक़े हुआ और उन की मिस्र की गुलामी एक हादसा नहीं बल्कि ख़ुदा के एक बड़े मनसूबे का हिस्सा था (ख़ुरुज 15:13 — 16, 50:20), यह दिखाने लिए कि अब्राहम, इस्हाक़ और या'क़ूब का ख़ुदा वही ख़ुदा है जिस ने कायनात की तखलीक की थी, (पैदाइश 3:15, 16) इस्राईल का ख़ुदा न सिर्फ़ तमाम देवताओं के ऊपर है बल्कि वह आसमान और ज़मीन का भी खालिक है।

*[illegible]*
शुरुआत

**बैरूनी ख़ाका**

1. तख़लीक़ — 1:1-2:25
2. इंसान का गुनाह — 3:1-24
3. आदम की नसल — 4:1-6:8
4. नूह की नसल — 6:9-11:32
5. अब्रहाम की तारीख़ — 12:1-25:18
6. इस्हाक़ और उसके बेटों की तारीक़ — 25:19-36:43
7. यूसुफ़ की नसल — 37:1-50:26

*[illegible]*

1 ख़ुदा ने सबसे पहले ज़मीन — ओ — आसमान को पैदा किया।
2 और ज़मीन वीरान और सुनसान थी और गहराओ के ऊपर अँधेरा था: और ख़ुदा की रूह* पानी† की सतह पर जुम्बिश करती थी।
3 और ख़ुदा ने कहा कि रोशनी हो जा, और रोशनी हो गई।
4 और ख़ुदा ने देखा कि रोशनी अच्छी है, और ख़ुदा ने रोशनी को अँधेरे से जुदा किया।

* **1:2** *[illegible]* ख़ुदा की क़ुव्वत या ख़ुदा के ज़रिये भेजी हुई हवा † **1:2** *[illegible]* तूफ़ानी तलातुम समुन्दर

5 और ख़ुदा ने रोशनी को तो दिन कहा और अँधेरे को रात।
और शाम हुई और सुबह हुई तब पहला दिन हुआ।‡
6 और ख़ुदा ने कहा कि पानियों के बीच फ़ज़ा हो ताकि पानी,
पानी से जुदा हो जाए।
7 फिर ख़ुदा ने फ़ज़ा को बनाया और फ़ज़ा के नीचे के पानी को
फ़ज़ा के ऊपर के पानी से जुदा किया; और ऐसा ही हुआ।
8 और ख़ुदा ने फ़ज़ा को आसमान कहा। और शाम हुई और
सुबह हुई — तब दूसरा दिन हुआ।
9 और ख़ुदा ने कहा कि आसमान के नीचे का पानी एक जगह
जमा हो कि ख़ुश्की नज़र आए, और ऐसा ही हुआ।
10 और ख़ुदा ने ख़ुश्की को ज़मीन कहा और जो पानी जमा हो
गया था उसको समुन्दर; और ख़ुदा ने देखा कि अच्छा है।
11 और ख़ुदा ने कहा कि ज़मीन घास और बीजदार बूटियों को,
और फलदार दरख़्तों को जो अपनी — अपनी क़िस्म के मुताबिक़
फलें और जो ज़मीन पर अपने आप ही में बीज रख्खें उगाए और
ऐसा ही हुआ।
12 तब ज़मीन ने घास, और बूटियों को, जो अपनी — अपनी
क़िस्म के मुताबिक़ बीज रख्खें और फलदार दरख़्तों को जिनके
बीज उन की क़िस्म के मुताबिक़ उनमें हैं उगाया; और ख़ुदा ने
देखा कि अच्छा है।
13 और शाम हुई और सुबह हुई — तब तीसरा दिन हुआ।
14 और ख़ुदा ने कहा कि फ़लक पर सितारे हों कि दिन को रात
से अलग करें; और वह निशान और ज़मानो और दिनों और बरसों
के फ़र्क़ के लिए हों।
15 और वह फ़लक पर रोशनी के लिए हों कि ज़मीन पर रोशनी
डालें, और ऐसा ही हुआ।

‡ **1:5** यह पूरे दिन को या एक दिन को जताने का इब्रानी तरीका है

16 फिर ख़ुदा ने दो बड़े चमकदार सितारे बनाए; एक बड़ा
चमकदार सितारा, कि दिन पर हुक्म करे और एक छोटा चमकदार
सितारा कि रात पर हुक्म करे और उसने सितारों को भी बनाया।
17 और ख़ुदा ने उनको फ़लक पर रख्खा कि ज़मीन पर रोशनी
डालें,
18 और दिन पर और रात पर हुक्म करें, और उजाले को अन्धेरे
से जुदा करें; और ख़ुदा ने देखा कि अच्छा है।
19 और शाम हुई और सुबह हुई — तब चौथा दिन हुआ।
20 और ख़ुदा ने कहा कि पानी जानदारों को कसरत से पैदा करे,
और परिन्दे ज़मीन के ऊपर फ़ज़ा में उड़ें।
21 और ख़ुदा ने बड़े बड़े दरियाई जानवरों को, और हर क़िस्म
के जानदार को जो पानी से बकसरत पैदा हुए थे, उनकी क़िस्म के
मुताबिक़ और हर क़िस्म के परिन्दों को उनकी क़िस्म के मुताबिक़,
पैदा किया; और ख़ुदा ने देखा कि अच्छा है।
22 और ख़ुदा ने उनको यह कह कर बरकत दी कि फलो और
बढ़ो और इन समुन्दरों के पानी को भर दो, और परिन्दे ज़मीन पर
बहुत बढ़ जाएँ।
23 और शाम हुई और सुबह हुई — तब पाँचवाँ दिन हुआ।
24 और ख़ुदा ने कहा कि ज़मीन जानदारों को, उनकी क़िस्म के
मुताबिक़, चौपाये और रेंगनेवाले जानदार और जंगली जानवर
उनकी क़िस्म के मुताबिक़ पैदा करे, और ऐसा ही हुआ।
25 और ख़ुदा ने जंगली जानवरों और चौपायों को उनकी क़िस्म
के मुताबिक़ और ज़मीन के रेंगने वाले जानदारों को उनकी क़िस्म
के मुताबिक़ बनाया; और ख़ुदा ने देखा कि अच्छा है।
26 फिर ख़ुदा ने कहा कि हम इंसान को अपनी सूरत पर
अपनी शबीह की तरह बनाएँ और वह समुन्दर की मछलियों और
आसमान के परिन्दों और चौपायों, और तमाम ज़मीन और सब
जानदारों पर जो ज़मीन पर रेंगते हैं इख़्तियार रख्खें।

27 और ख़ुदा ने इंसान को अपनी सूरत पर पैदा किया ख़ुदा की
सूरत पर उसको पैदा किया — नर — ओ — नारी उनको पैदा
किया।
28 और ख़ुदा ने उनको बरकत दी और कहा कि फलो और
बढ़ो और ज़मीन को भर दो और हुकूमत करो और समुन्दर की
मछलियों और हवा के परिन्दों और कुल जानवरों पर जो ज़मीन
पर चलते हैं इख़्तियार रक्खो।
29 और ख़ुदा ने कहा कि देखो, मैं तमाम रू — ए — ज़मीन की
कुल बीजदार सब्ज़ी और हर दरख़्त जिसमें उसका बीजदार फल
हो, तुम को देता हूँ; यह तुम्हारे खाने को हों।
30 और ज़मीन के कुल जानवरों के लिए, और हवा के कुल
परिन्दों के लिए और उन सब के लिए जो ज़मीन पर रेंगने वाले
हैं जिनमें ज़िन्दगी का दम है, कुल हरी बूटियाँ खाने को देता हूँ,
और ऐसा ही हुआ।
31 और ख़ुदा ने सब पर जो उसने बनाया था नज़र की, और
देखा कि बहुत अच्छा है, और शाम हुई और सुबह हुई तब छठा
दिन हुआ।

# 2

1 तब आसमान और ज़मीन और उनके कुल लश्कर* का बनाना
ख़त्म हुआ।
2 और ख़ुदा ने अपने काम को, जिसे वह करता था सातवें दिन
ख़त्म किया, और अपने सारे काम से जिसे वह कर रहा था, सातवें
दिन फ़ारिग़ हुआ।
3 और ख़ुदा ने सातवें दिन को बरकत दी, और उसे मुक़द्दस
ठहराया; क्यूँकि उसमें ख़ुदा सारी कायनात से जिसे उसने पैदा
किया और बनाया फ़ारिग़ हुआ।

* **2:1** ????? पूरी काइनात के साथ, पूरीफ़ौज

### [illegible]

4 यह है आसमान और ज़मीन की पैदाइश, जब वह पैदा हुए
जिस दिन ख़ुदावन्द ख़ुदा ने ज़मीन और आसमान को बनाया;
5 और ज़मीन पर अब तक खेत का कोई पौधा न था और न
मैदान की कोई सब्ज़ी अब तक उगी थी, क्यूँकि ख़ुदावन्द ख़ुदा ने
ज़मीन पर पानी नहीं बरसाया था, और न ज़मीन जोतने को कोई
इंसान था।
6 बल्कि ज़मीन से कुहर †उठती थी, और तमाम रू — ए —
ज़मीन को सेराब करती थी।
7 और ख़ुदावन्द ख़ुदा ने ज़मीन की मिट्टी से इंसान को बनाया
और उसके नथनों में ज़िन्दगी का दम फूंका इंसान जीती जान
हुआ।
8 और ख़ुदावन्द ख़ुदा ने मशरिक़ की तरफ़ अदन में एक बाग़
लगाया और इंसान को जिसे उसने बनाया था वहाँ रख्खा।
9 और ख़ुदावन्द ख़ुदा ने हर दरख़्त को जो देखने में ख़ुशनुमा
और खाने के लिए अच्छा था ज़मीन से उगाया और बाग़ के बीच
में ज़िन्दगी का दरख़्त और भले और बुरे की पहचान का दरख़्त भी
लगाया।
10 और अदन से एक दरिया बाग़ के सेराब करने को निकला
और वहाँ से चार नदियों में तक़सीम हुआ।
11 पहली का नाम फ़ैसून है जो हवीला की सारी ज़मीन को
जहाँ सोना होता है घेरे हुए है।
12 और इस ज़मीन का सोना चोखा है। और वहाँ मोती और
संग-ए-सुलेमानी भी हैं।
13 और दूसरी नदी का नाम जैहून है, जो कूश‡ की सारी ज़मीन
को घेरे हुए है।
14 और तीसरी नदी का नाम दिजला है जो असूर के मशरिक़
को जाती है। और चौथी नदी का नाम फ़रात है।

† **2:6** [illegible] कुहरा ‡ **2:13** [illegible] इथोपिया

15 और ख़ुदावन्द ख़ुदा ने आदम को लेकर बाग़ — ए — 'अदन
में रख्खा के उसकी बाग़वानी और निगहबानी करे।
16 और ख़ुदावन्द ख़ुदा ने आदम को हुक्म दिया और कहा कि
तू बाग़ के हर दरख़्त का फल बे रोक टोक खा सकता है।
17 लेकिन भले और बुरे की पहचान के दरख़्त का कभी न खाना
क्यूँकि जिस रोज़ तूने उसमें से खायेगा तू मर जायेगा।
18 और ख़ुदावन्द ख़ुदा ने कहा कि आदम का अकेला रहना
अच्छा नहीं मैं उसके लिए एक मददगार उसकी तरह बनाऊँगा।
19 और ख़ुदावन्द ख़ुदा ने सब जंगली जानवर और हवा के सब
परिन्दे मिट्टी से बनाए और उनको आदम के पास लाया कि देखे
कि वह उनके क्या नाम रखता है और आदम ने जिस जानवर को
जो कहा वही उसका नाम ठहरा।
20 और आदम ने सब चौपायों और हवा के परिन्दों और सब
जंगली जानवरों के नाम रख्खे लेकिन आदम§ के लिए कोई
मददगार उसकी तरह न मिला।
21 और ख़ुदावन्द ख़ुदा ने आदम पर गहरी नींद भेजी और वह
सो गया और उसने उसकी पसलियों में से एक को निकाल लिया
और उसकी जगह गोश्त भर दिया।
22 और ख़ुदावन्द ख़ुदा उस पसली से जो उसने आदम में से
निकाली थी एक 'औरत बना कर उसे आदम के पास लाया।
23 और आदम ने कहा कि यह तो अब मेरी हड्डियों में से हड्डी,
और मेरे गोश्त में से गोश्त है; इसलिए वह 'औरत कहलाएगी
क्यूँकि वह मर्द से निकाली गई।
24 इसलिए आदमी अपने माँ बाप को छोड़ेगा और अपनी
बीवी से मिला रहेगा और वह एक तन होंगे।
25 और आदम और उसकी बीवी दोनों नंगे थे और शरमाते न
थे।

§ **2:20** इब्रानी में आदम को आदमी कहा जाता है

# 3

## [illegible]

1 और साँप सब जंगली जानवरों से, जिनको ख़ुदावन्द ख़ुदा
ने बनाया था चालाक था, और उसने 'औरत से कहा क्या वाक़'ई
ख़ुदा ने कहा है, कि बाग़ के किसी दरख़्त का फल तुम न खाना?
2 'औरत ने साँप से कहा कि बाग़ के दरख़्तों का फल तो हम
खाते हैं।
3 लेकिन जो दरख़्त बाग़ के बीच में है उसके फल के बारे में
ख़ुदा ने कहा है कि तुम न तो उसे खाना और न छूना वरना मर
जाओगे।
4 तब साँप ने 'औरत से कहा कि तुम हरगिज़ न मरोगे!
5 बल्कि ख़ुदा जानता है कि जिस दिन तुम उसे खाओगे, तुम्हारी
आँखें खुल जाएँगी, और तुम ख़ुदा की तरह भले और बुरे के जानने
वाले बन जाओगे।
6 'औरत ने जो देखा कि वह दरख़्त खाने के लिए अच्छा और
आँखों को ख़ुशनुमा मा'लूम होता है और अक्ल बख़्शने के लिए
ख़ूब है तो उसके फल में से लिया और खाया और अपने शौहर को
भी दिया और उसने खाया।
7 *तब दोनों की आँखें खुल गई और उनको मा'लूम हुआ कि
वह नंगे हैं और उन्होंने अंजीर के पत्तों को †सी कर अपने लिए
लूंगियाँ बनाई।
8 और उन्होंने ख़ुदावन्द ख़ुदा की आवाज़ जो ‡ठंडे वक़्त बाग़
में फिरता था सुनी और आदम और उसकी बीवी ने अपने आप को
ख़ुदावन्द ख़ुदा के सामने से बाग़ के दरख़तों में छिपाया।
9 तब ख़ुदावन्द ख़ुदा ने आदम को पुकारा और उससे कहा कि
तू कहाँ है?

---

* **3:7** तब उनकी समझ की आँखें खुल गईं † **3:7** बंधकर, जकड़कर, सीकर या जोड़कर ‡ **3:8** शाम

10 उसने कहा, मैंने बाग़ में तेरी आवाज़ सुनी और मैं डरा क्यूँकि
मैं नंगा था और मैंने अपने आप को छिपाया।
11 उसने कहा, तुझे किसने बताया कि तू नंगा है? क्या तूने उस
दरख़्त का फल खाया जिसके बारे में मैंने तुझ को हुक्म दिया था
कि उसे न खाना?
12 आदम ने कहा कि जिस 'औरत को तूने मेरे साथ किया है
उसने मुझे उस दरख़्त का फल दिया और मैंने खाया।
13 तब ख़ुदावन्द ख़ुदा ने, 'औरत से कहा कि तूने यह क्या
किया? 'औरत ने कहा कि साँप ने मुझ को बहकाया तो मैंने खाया।
14 और ख़ुदावन्द ख़ुदा ने साँप से कहा, इसलिए कि तूने यह
किया तू सब चौपायों और जंगली जानवरों में ला'नती ठहरा; तू
अपने पेट के बल चलेगा, और अपनी उम्र भर खाक चाटेगा।
15 और मैं तेरे और 'औरत के बीच और तेरी नसल और औरत
की नसल के बीच 'अदावत डालूँगा वह तेरे सिर को कुचलेगा और
तू उसकी एड़ी पर काटेगा।
16 फिर उसने 'औरत से कहा कि मैं तेरे दर्द — ए — हम्ल को
बहुत बढ़ाऊँगा तू दर्द के साथ बच्चे जनेगी और तेरी रग़बत अपने
शौहर की तरफ़ होगी और वह तुझ पर हुकूमत करेगा।
17 और आदम से उसने कहा चूँकि तूने अपनी बीवी की बात
मानी और उस दरख़्त का फल खाया जिस के बारे मैंने तुझे हुक्म
दिया था कि उसे न खाना इसलिए ज़मीन तेरी वजह से ला'नती
हुई। मशक़्क़त के साथ तू अपनी उम्र भर उसकी पैदावार खाएगा
18 और वह तेरे लिए काँटे और ऊँटकटारे उगाएगी और तू खेत
की सब्ज़ी खाएगा।
19 तू अपने मुँह के पसीने की रोटी खाएगा जब तक कि ज़मीन
में तू फिर लौट न जाए इसलिए कि तू उससे §निकाला गया है
क्यूँकि तू ख़ाक है और ख़ाक में फिर लौट जाएगा।

---

§ **3:19** बनाया गया, घड़ा गया, ढाला गया

*[illegible]*

20 और आदम ने अपनी बीवी का नाम *हव्वा रख्खा, इसलिए
कि वह सब ज़िन्दों की माँ है।
21 और ख़ुदावन्द ख़ुदा ने आदम और उसकी बीवी के लिए
चमड़े के कुर्ते बना कर उनको पहनाए।
22 और ख़ुदावन्द ख़ुदा ने कहा, देखो इंसान भले और बुरे की
पहचान में हम में से एक की तरह हो गया: अब कहीं ऐसा न हो कि
वह अपना हाथ बढ़ाए और ज़िन्दगी के दरख़्त से भी कुछ लेकर
खाए और हमेशा ज़िन्दा रहे।
23 इसलिए ख़ुदावन्द ख़ुदा ने उसको बाग — ए — 'अदन से
बाहर कर दिया, ताकि वह उस ज़मीन की जिसमें से वह †लिया
गया था, खेती करे।
24 चुनाँचे उसने आदम को निकाल दिया और बाग — ए —
'अदन के मशरिक़ की तरफ़ करूबियों को और चारों तरफ़ घूमने
वाली शो'लाज़न तलवार को रख्खा, कि वह ज़िन्दगी के दरख़्त
की राह की हिफ़ाज़त करें।

# 4

*[illegible]*

1 और आदम अपनी बीवी हव्वा के पास गया, और वह हामिला
हुई और उसके क़ाइन पैदा हुआ। तब उसने कहा, *मुझे ख़ुदावन्द
से एक फ़र्ज़न्द मिला।
2 फिर क़ाइन का भाई हाबिल पैदा हुआ; और हाबिल भेड़
बकरियों का चरवाहा और क़ाइन किसान था।
3 कुछ दिन के बाद ऐसा हुआ कि क़ाइन अपने खेत के फल का
हदिया ख़ुदावन्द के लिए लाया।

* **3:20** ज़िन्दगी † **3:23** बनाया गया * **4:1** मैं ने यह्वे की मदद से एक आदमी पाया

4 और हाबिल भी अपनी भेड़ बकरियों के कुछ पहलौठे बच्चों
का और कुछ उनकी चर्बी का हदिया लाया। और ख़ुदावन्द ने
हाबिल को और उसके हदिये को क़ुबूल किया,
5 लेकिन क़ाइन को और उसके हदिये को क़ुबूल न किया।
इसलिए क़ाइन बहुत ग़ुस्सा हुआ और उसका मुँह बिगड़ा।
6 और ख़ुदावन्द ने क़ाइन से कहा, तू क्यूँ ग़ुस्सा हुआ? और
तेरा मुँह क्यूँ बिगड़ा हुआ है?
7 अगर तू भला करे तो क्या तू मक़्बूल न होगा? और अगर तू
भला न करे तो गुनाह दरवाज़े पर दुबका बैठा है और तेरा मुश्ताक़
है, लेकिन तू उस पर ग़ालिब आ।
8 और क़ाइन ने अपने भाई हाबिल †को कुछ कहा और जब वह
दोनों खेत में थे तो ऐसा हुआ कि क़ाइन ने अपने भाई हाबिल पर
हमला किया और उसे क़त्ल कर डाला।
9 तब ख़ुदावन्द ने क़ाइन से कहा कि तेरा भाई हाबिल कहाँ है?
उसने कहा, मुझे मा'लूम नहीं; क्या मैं अपने भाई का मुहाफ़िज़
हूँ?
10 फिर उसने कहा कि तूने यह क्या किया? तेरे भाई का ख़ून
ज़मीन से मुझ को पुकारता है।
11 और अब तू ज़मीन की तरफ़ से ला'नती हुआ, जिसने अपना
मुँह पसारा कि तेरे हाथ से तेरे भाई का ख़ून ले।
12 जब तू ज़मीन को जोतेगा, तो वह अब तुझे अपनी पैदावार
न देगी और ज़मीन पर तू ख़ानाख़राब और आवारा होगा।
13 तब क़ाइन ने ख़ुदावन्द से कहा कि मेरी सज़ा बर्दाश्त से
बाहर है।
14 देख, आज तूने मुझे रू — ए — ज़मीन से निकाल दिया
है, और मैं तेरे सामने से ग़ायब हो जाऊँगा; और ज़मीन पर

† **4:8** तब उनकी समझ की आँखें खुल गई

ख़ानाख़राब और आवारा रहूँगा, और ऐसा होगा कि जो कोई मुझे
पाएगा क़त्ल कर डालेगा।
15 तब ख़ुदावन्द ने उसे कहा, नहीं, बल्कि जो क़ाइन को क़त्ल
करे उससे सात गुना बदला लिया जाएगा। और ख़ुदावन्द ने
क़ाइन के लिए एक निशान ठहराया कि कोई उसे पा कर मार न
डाले।
16 इसलिए, क़ाइन ख़ुदावन्द के सामने से निकल गया और
अदन के मशरिक़ की तरफ़ ‡नूद के इलाक़े में जा बसा।

### [illegible]

17 और क़ाइन अपनी बीवी के पास गया और वह हामिला हुई
और उसके हनूक पैदा हुआ; और उसने एक शहर बसाया और
उसका नाम अपने बेटे के नाम पर हनूक रख्खा।
18 और हनूक से ईराद पैदा हुआ, और ईराद से महुयाएल पैदा
हुआ, और महुयाएल से मतूसाएल पैदा हुआ, और मत्तूसाएल से
लमक पैदा हुआ।
19 और लमक दो औरतें ब्याह लाया: एक का नाम अदा और
दूसरी का नाम ज़िल्ला था।
20 और अदा के याबल पैदा हुआ: वह उनका §बाप था जो ख़ेमों
में रहते और जानवर पालते हैं।
21 और उसके भाई का नाम यूबल था: वह बीन और बांसली
बजाने वालों का बाप था।
22 और ज़िल्ला के भी तूबलक़ाइन पैदा हुआ: जो पीतल
और लोहे के सब तेज़ हथियारों का बनाने वाला था; और नामा
तूबलक़ाइन की बहन थी।
23 और लमक ने अपनी बीवियों से कहा कि ऐ अदा और
ज़िल्ला मेरी बात सुनो; ऐ लमक की बीवियो, मेरी बात पर कान

‡ **4:16** घूमने वाला मुल्क § **4:20** 1: बापदादा, इन्हें भी देखें: 4:20, 15:15, 46:34, 47:3, 48:21

लगाओ: मैंने एक आदमी को जिसने मुझे ज़ख़्मी किया, मार
डाला। और एक जवान को जिसने मेरे चोट लगाई, क़त्ल कर
डाला।
24 अगर क़ाइन का बदला सात गुना लिया जाएगा, तो लमक
का सत्तर और सात गुना।

*[illegible]*

25 और आदम फिर अपनी बीवी के पास गया और उसके एक
और बेटा हुआ और उसका नाम सेत रख्खा: और वह कहने लगी
कि ख़ुदा ने हाबिल के बदले जिसको क़ाइन ने क़त्ल किया, मुझे
दूसरा फ़र्ज़न्द दिया।
26 और सेत के यहाँ भी एक बेटा पैदा हुआ, जिसका नाम उसने
अनूस रख्खा; उस वक़्त से लोग यहोवा का नाम लेकर दुआ करने
लगे।

# 5

*[illegible]*

1 यह आदम का नसबनामा है। जिस दिन ख़ुदा ने आदम को
पैदा किया; तो उसे अपनी शबीह पर बनाया।
2 मर्द और औरत उनको पैदा किया और उनको बरकत दी, और
जिस दिन वह पैदा हुए उनका नाम आदम रख्खा।
3 और आदम एक सौ तीस साल का था जब उसकी सूरत — ओ
— शबीह का एक बेटा उसके यहाँ पैदा हुआ; और उसने उसका
नाम सेत रख्खा।
4 और सेत की पैदाइश के बाद आदम आठ सौ साल ज़िन्दा
रहा, और उससे बेटे और बेटियाँ पैदा हुई।
5 और आदम की कुल उम्र नौ सौ तीस साल की हुई, तब वह
मरा।
6 और सेत एक सौ पाँच साल का था जब उससे अनूस पैदा
हुआ।

7 और अनूस की पैदाइश के बाद सेत आठ सौ सात साल ज़िन्दा
रहा, और उससे बेटे और बेटियाँ पैदा हुई।
8 और सेत की कुल उम्र नौ सौ बारह साल की हुई, तब वह
मरा।
9 और अनूस नव्वे साल का था जब उससे क़ीनान पैदा हुआ।
10 और क़ीनान की पैदाइश के बाद अनूस आठ सौ पन्द्रह साल
ज़िन्दा रहा, और उससे बेटे और बेटियाँ पैदा हुई।
11 और अनूस की कुल उम्र नौ सौ पाँच साल की हुई, तब वह
मरा।
12 और क़ीनान सत्तर साल का था जब उससे *महललेल पैदा
हुआ।
13 और महललेल की पैदाइश के बाद क़ीनान आठ सौ चालीस
साल ज़िन्दा रहाऔर उससे बेटे और बेटियाँ पैदा हुई।
14 और क़ीनान की कुल उम्र नौ सौ दस साल की हुई, तब वह
मरा।
15 और महललेल पैंसठ साल का था जब उससे यारिद पैदा
हुआ।
16 और यारिद की पैदाइश के बाद महललेल आठ सौ तीस
साल ज़िन्दा रहा, और उससे बेटे और बेटियाँ पैदा हुई।
17 और महललेल की कुल उम्र आठ सौ पचानवे साल की हुई,
तब वह मरा।
18 और यारिद एक सौ बासठ साल का था जब उससे हनूक पैदा
हुआ।
19 और हनूक की पैदाइश के बाद यारिद आठ सौ साल ज़िन्दा
रहा, और उससे बेटे और बेटियाँ पैदा हुई।
20 और यारिद की कुल उम्र नौ सौ बासठ साल की हुई, तब वह
मरा।
21 और हनूक पैंसठ साल का था उससे मतुसिलह पैदा हुआ।

---

* **5:12** खुदा की हम्द — ओ — तारीफ़ हो

22 और मतूसिलह की पैदाइश के बाद हनूक तीन सौ साल तक
ख़ुदा के साथ — साथ चलता रहा, और उससे बेटे और बेटियाँ
पैदा हुई।
23 और हनूक की कुल उम्र तीन सौ पैंसठ साल की हुई।
24 और हनूक ख़ुदा के साथ — साथ चलता रहा, और वह ग़ायब
हो गया क्यूँकि ख़ुदा ने उसे उठा लिया।
25 और मतूसिलह एक सौ सतासी साल का था जब उससे
लमक पैदा हुआ।
26 और लमक की पैदाइश के बाद मतूसिलह सात सौ बयासी
साल ज़िन्दा रहा, और उससे बेटे और बेटियाँ पैदा हुई।
27 और मतूसिलह की कुल उम्र नौ सौ उनहत्तर साल की हुई,
तब वह मरा।
28 और लमक एक सौ बयासी साल का था जब उससे एक बेटा
पैदा हुआ।
29 और उसने उसका नाम नूह रख्खा और कहा, कि यह हमारे
हाथों की मेहनत और मशक़्क़त से जो ज़मीन की वजह से है जिस
पर ख़ुदा ने ला'नत की है, हमें आराम देगा।
30 और नूह की पैदाइश के बाद लमक पाँच सौ पंचानवे साल
ज़िन्दा रहा, और उससे बेटे और बेटियाँ पैदा हुई।
31 और लमक की कुल उम्र सात सौ सत्तर साल की हुई, तब
वह मरा।
32 और नूह पाँच सौ साल का था, जब उससे सिम, हाम और
याफ़त, पैदा हुए।

# 6

### *[illegible]*

1 जब रु — ए — ज़मीन पर आदमी बहुत बढ़ने लगे और उनके
बेटियाँ पैदा हुई।

2 तो *ख़ुदा के बेटों ने आदमी की बेटियों को देखा कि वह
ख़ूबसूरत हैं; और जिनको उन्होंने चुना उनसे ब्याह कर लिया।
3 तब ख़ुदावन्द ने कहा कि मेरी †रूह इंसान के साथ हमेशा
मुज़ाहमत न करती रहेगी। क्यूँकि वह भी तो इंसान है; तो भी
उसकी उम्र एक सौ बीस साल की होगी।
4 उन दिनों में ज़मीन पर जब्बार थे, और बाद में जब ख़ुदा के
बेटे इंसान की बेटियों के पास गए, तो उनके लिए उनसे औलाद
हुई। यही पुराने ज़माने के सूर्मा हैं, जो बड़े नामवर हुए हैं।
5 और ख़ुदावन्द ने देखा कि ज़मीन पर इंसान की बदी बहुत बढ़
गई, और उसके दिल के तसव्वुर और ख़याल हमेशा बुरे ही होते
हैं।
6 तब ख़ुदावन्द ज़मीन पर इंसान के पैदा करने से दुखी हुआ
और दिल में ग़म किया।
7 और ख़ुदावन्द ने कहा कि मैं इंसान को जिसे मैंने पैदा किया,
रू — ए — ज़मीन पर से मिटा डालूँगा; इंसान से लेकर हैवान
और रेंगनेवाले जानदार और हवा के परिन्दों तक; क्यूँकि मैं उनके
बनाने से दुखी हूँ।
8 मगर नूह ख़ुदावन्द की नज़र में मक़्बूल हुआ।

### [illegible]

9 नूह का नसबनामा यह है: नूह मर्द — ए — रास्तबाज़ और
अपने ज़माने के लोगों में बे'ऐब था, और नूह ख़ुदा के साथ —
साथ चलता रहा।
10 और उससे तीन बेटे सिम, हाम और याफ़त पैदा हुए।
11 लेकिन ज़मीन ख़ुदा के आगे नापाक हो गई थी, और वह
ज़ुल्म से भरी थी।

* **6:2** आसमानी रूहें या फ़रिश्ते † **6:3** मेरी रूह जो ज़िन्दगी देती है

12 और ख़ुदा ने ज़मीन पर नज़र की और देखा, कि वह नापाक
हो गई है; क्यूँकि हर इंसान ने ज़मीन पर अपना तरीक़ा बिगाड़
लिया था।
13 और ख़ुदा ने नूह से कहा कि पूरे इंसान का ख़ातिमा मेरे
सामने आ पहुँचा है; क्यूँकि उनकी वजह से ज़मीन ज़ुल्म से भर
गई, इसलिए देख, मैं ज़मीन के साथ उनको हलाक करूँगा।
14 तू गोफर की लकड़ी की एक कश्ती अपने लिए बना; उस
कश्ती में कोठरियाँ तैयार करना और उसके अन्दर और बाहर राल
लगाना।
15 और ऐसा करना कि कश्ती की लम्बाई तीन सौ हाथ, उसकी
चौड़ाई पचास हाथ और उसकी ऊँचाई तीस हाथ हो।
16 और उस कश्ती में एक रौशनदान बनाना, और ऊपर से हाथ
भर छोड़ कर उसे ख़त्म कर देना; और उस कश्ती का दरवाज़ा
उसके पहलू में रखना; और उसमें तीन हिस्से बनाना निचला,
दूसरा और तीसरा।
17 और देख, मैं ख़ुद ज़मीन पर पानी का तूफ़ान लानेवाला हूँ,
ताकि हर इंसान को जिसमें जिन्दगी की साँस है, दुनिया से हलाक
कर डालूँ, और सब जो ज़मीन पर हैं मर जाएँगे।
18 लेकिन तेरे साथ मैं अपना 'अहद क़ाईम करूँगा; और तू
कश्ती में जाना — तू और तेरे साथ तेरे बेटे और तेरी बीवी और
तेरे बेटों की बीवियाँ।
19 और जानवरों की हर क़िस्म में से दो — दो अपने साथ कश्ती
में ले लेना, कि वह तेरे साथ जीते बचें, वह नर — ओ — मादा
हों।
20 और परिन्दों की हर क़िस्म में से, और चरिन्दों की हर क़िस्म
में से, और ज़मीन पर रेंगने वालों की हर क़िस्म में से दो दो तेरे
पास आएँ, ताकि वह जीते बचें।
21 और तू हर तरह की खाने की चीज़ लेकर अपने पास जमा'
कर लेना, क्यूँकि यही तेरे और उनके खाने को होगा।

22 और नूह ने ऐसा ही किया; जैसा ख़ुदा ने उसे हुक्म दिया था,
वैसा ही 'अमल किया।

# 7

*[illegible]*

1 और ख़ुदावन्द ने नूह से कहा कि तू अपने पूरे ख़ान्दान के साथ
कश्ती में आ; क्यूँकि मैंने तुझी को अपने सामने इस ज़माना में
रास्तबाज़ देखा है।
2 सब पाक जानवरों में से सात — सात, नर और उनकी मादा;
और उनमें से जो पाक नहीं हैं दो — दो, नर और उनकी मादा
अपने साथ ले लेना।
3 और हवा के परिन्दों में से भी सात — सात, नर और मादा,
लेना ताकि ज़मीन पर उनकी नसल बाक़ी रहे।
4 क्यूँकि सात दिन के बाद मैं ज़मीन पर चालीस दिन और
चालीस रात पानी बरसाऊंगा, और हर जानदार शय को जिसे
मैंने बनाया ज़मीन पर से मिटा डालूँगा।
5 और नूह ने वह सब जैसा ख़ुदावन्द ने उसे हुक्म दिया था
किया।
6 और नूह छः सौ साल का था, जब पानी का तूफ़ान ज़मीन
पर आया।
7 तब नूह और उसके बेटे और उसकी बीवी, और उसके बेटों की
बीवियाँ, उसके साथ तूफ़ान के पानी से बचने के लिए कश्ती में
गए।
8 और पाक जानवरों में से और उन जानवरों में से जो पाक नहीं,
और परिन्दों में से और ज़मीन पर के हर रेंगनेवाले जानदार में से
9 दो — दो, नर और मादा, कश्ती में नूह के पास गए, जैसा
ख़ुदा ने नूह को हुक्म दिया था।
10 और सात दिन के बाद ऐसा हुआ कि तूफ़ान का पानी ज़मीन
पर आ गया।

11 नूह की उम्र का छ: सौवां साल था, कि उसके दूसरे महीने
के ठीक सत्रहवीं तारीख़ को बड़े समुन्दर के सब सोते फूट निकले
और आसमान की खिड़कियाँ खुल गई।
12 और चालीस दिन और चालीस रात ज़मीन पर बारिश होती
रही।
13 उसी दिन नूह और नूह के बेटे सिम और हाम और याफ़त,
और
14 और हर क़िस्म का जानवर और हर क़िस्म का चौपाया और
हर क़िस्म का ज़मीन पर का रेंगने वाला जानदार और हर क़िस्म
का परिन्दा और हर क़िस्म की चिड़िया, यह सब कश्ती में दाख़िल
हुए।
15 और जो ज़िन्दगी का दम रखते हैं उनमें से दो — दो कश्ती
में नूह के पास आए।
16 और जो अन्दर आए वो, जैसा ख़ुदा ने उसे हुक्म दिया था,
सब जानवरों के नर — ओ — मादा थे। तब ख़ुदावन्द ने उसको
बाहर से बन्द कर दिया।
17 और चालीस दिन तक ज़मीन पर तूफ़ान रहा, और पानी बढ़ा
और उसने कश्ती को ऊपर उठा दिया; तब कश्ती ज़मीन पर से
उठ गई।
18 और पानी ज़मीन पर चढ़ता ही गया और बहुत बढ़ा और
कश्ती पानी के ऊपर तैरती रही।
19 और पानी ज़मीन पर बहुत ही ज़्यादा चढ़ा और सब ऊँचे
पहाड़ जो दुनिया में हैं छिप गए।
20 पानी उनसे पंद्रह *हाथ और ऊपर चढ़ा और पहाड़ डूब गए।
21 और सब जानवर जो ज़मीन पर चलते थे, परिन्दे और चौपाए
और जंगली जानवर और ज़मीन पर के सब रेंगनेवाले जानदार,
और सब आदमी मर गए।

---

* **7:20** लगभग सात मीटर

22 और ख़ुश्की के सब जानदार जिनके नथनों में ज़िन्दगी का
दम था मर गए।
23 बल्कि हर जानदार शय जो इस ज़मीन पर थी मर मिटी
— क्या इंसान क्या हैवान क्या रेंगने वाले जानदार क्या हवा का
परिन्दा, यह सब के सब ज़मीन पर से मर मिटे। सिर्फ़ एक नूह
बाक़ी बचा, या वह जो उसके साथ कश्ती में थे।
24 और पानी ज़मीन पर एक सौ पचास दिन तक बढ़ता रहा।

# 8

1 फिर ख़ुदा ने नूह को और सब जानदार और सब चौपायों को
जो उसके साथ कश्ती में थे याद किया; और ख़ुदा ने ज़मीन पर
एक हवा चलाई और पानी रुक गया।
2 और समुन्दर के सोते और आसमान के दरीचे बन्द किए गए,
और आसमान से जो बारिश हो रही थी थम गई;
3 और पानी ज़मीन पर से घटते — घटते एक सौ पचास दिन
के बाद कम हुआ।
4 और सातवें महीने की सत्रहवीं [*]तारीख़ को कश्ती अरारात के
पहाड़ों पर टिक गई।
5 और पानी दसवें महीने तक बराबर घटता रहा, और दसवें
महीने की पहली तारीख़ को पहाड़ों की चोटियाँ नज़र आईं।
6 और [†]चालीस दिन के बाद ऐसा हुआ, कि नूह ने कश्ती की
खिड़की जो उसने बनाई थी खोली,
7 और उसने एक कौवे को उड़ा दिया; इसलिए वह निकला और
जब तक कि ज़मीन पर से पानी सूख न गया इधर उधर फिरता
रहा।
8 फिर उसने एक कबूतरी अपने पास से उड़ा दी, ताकि देखे, कि
ज़मीन पर पानी घटा या नहीं।

[*] **8:4** उस वक़्त से जब से कि सैलाब शुरू हुआ था [†] **8:6** "तब से" जोड़ें

9 लेकिन कबूतरी ने पंजा टेकने की जगह न पाई और उसके
पास कश्ती को लौट आई, क्यूँकि तमाम रू — ए — ज़मीन पर
पानी था। तब उसने हाथ बढ़ाकर उसे ले लिया और अपने पास
कश्ती में रख्खा।
10 और सात दिन ठहर कर उसने उस कबूतरी को फिर कश्ती
से उड़ा दिया;
11 और वह कबूतरी शाम के वक़्त उसके पास लौट आई, और
देखा तो जैतून की एक ताज़ा पत्ती उसकी चोंच में थी। तब नूह ने
मा'लूम किया कि पानी ज़मीन पर से कम हो गया।
12 तब वह सात दिन और ठहरा, इसके बाद फिर उस कबूतरी
को उड़ाया, लेकिन वह उसके पास फिर कभी न लौटी।
13 और छ: सौ पहले साल के पहले महीने की पहली तारीख़ को
ऐसा हुआ, कि ज़मीन पर से पानी सूख गया; और नूह ने कश्ती
की छत खोली और देखा कि ज़मीन की सतह सूख गई है।
14 और दूसरे महीने की सताईस्वीं तारीख़ को ज़मीन बिल्कुल
सूख गई।
15 तब ख़ुदा ने नूह से कहा कि
16 कश्ती से बाहर निकल आ; तू और तेरे साथ तेरी बीवी और
तेरे बेटे और तेरे बेटों की बीवियाँ।
17 और उन जानदारों को भी बाहर निकाल ला जो तेरे साथ
हैं: क्या परिन्दे, क्या चौपाये, क्या ज़मीन के रेंगनेवाले जानदार;
ताकि वह ज़मीन पर कसरत से बच्चे दें और फल दायक हों और
ज़मीन पर बढ़ जाएँ।
18 तब नूह अपनी बीवी और अपने बेटों और अपने बेटों की
बीवियों के साथ बाहर निकला।
19 और सब जानवर, सब रेंगनेवाले जानदार, सब परिन्दे और
सब जो ज़मीन पर चलते हैं, अपनी अपनी क़िस्म के साथ कश्ती
से निकल गए।
20 तब नूह ने ख़ुदावन्द के लिए एक मज़बह बनाया; और सब

पाक चौपायों और पाक परिन्दों में से थोड़े से लेकर उस मज़बह
पर सोख़्तनी क़ुर्बानियाँ पेश कीं।
21 और ख़ुदावन्द ने उसकी राहत अंगेज़ ख़ुशबू ली, और
ख़ुदावन्द ने अपने दिल में कहा कि इंसान की वजह से मैं फिर
कभी ज़मीन पर ला'नत नहीं भेजूँगा, क्यूँकि इंसान के दिल का
ख़्याल लड़कपन से बुरा है; और न फिर सब जानदारों को जैसा
अब किया है, मारूँगा।
22 बल्कि जब तक ज़मीन क़ाईम है बीज बोना और फ़सल
कटना, सर्दी और तपिश, गर्मी और जाड़ा और रात ख़त्म न होंगे।

# 9

*[illegible]*

1 और ख़ुदा ने नूह और उसके बेटों को बरकत दी और उनको
कहा कि फ़ायदेमन्द हो और बढ़ो और ज़मीन को भर दो।
2 और ज़मीन के सब जानदारों और हवा के सब परिन्दों पर
तुम्हारी दहशत और तुम्हारा रौब होगा; यह और तमाम कीड़े जिन
से ज़मीन भरी पड़ी है, और समुन्दर की कुल मछलियाँ तुम्हारे
क़ब्ज़े में की गई।
3 हर चलता फिरता जानदार तुम्हारे खाने को होगा; हरी सब्ज़ी
की तरह मैंने सबका सब तुम को दे दिया
4 मगर तुम गोश्त के साथ ख़ून को, जो उसकी जान है न खाना।
5 मैं तुम्हारे ख़ून का बदला ज़रूर लुँगा, हर जानवर से उसका
बदला लूँगा; आदमी की जान का बदला आदमी से और उसके
भाई बन्द से लुँगा।
6 जो आदमी का ख़ून करे उसका ख़ून आदमी से होगा, क्यूँकि
ख़ुदा ने इंसान को अपनी सूरत पर बनाया है।
7 और तुम फल दायक हो और बढ़ो और ज़मीन पर ख़ूब अपनी
नसल बढ़ाओ, और बहुत ज़्यादा हो जाओ।
8 और ख़ुदा ने नूह और उसके बेटों से कहा,

9 देखो, मैं ख़ुद तुमसे और तुम्हारे बाद तुम्हारी नसल से,
10 और सब जानदारों से जो तुम्हारे साथ हैं, क्या परिन्दे क्या
चौपाए क्या ज़मीन के जानवर, या'नी ज़मीन के उन सब जानवरों
के बारे में जो कश्ती से उतरे, 'अहद करता हूँ
11 मैं इस 'अहद को तुम्हारे साथ क़ाईम रखूँगा कि सब जानदार
तूफ़ान के पानी से फिर हलाक न होंगे, और न कभी ज़मीन को
तबाह करने के लिए फिर तूफ़ान आएगा
12 और ख़ुदा ने कहा कि जो अहद मैंने अपने और तुम्हारे बीच
और सब जानदारों के बीच जो तुम्हारे साथ हैं, नसल — दर —
नसल हमेशा के लिए करता हूँ, उसका निशान यह है कि
13 मैं अपनी कमान को बादल में रखता हूँ, वह मेरे और ज़मीन
के बीच 'अहद का निशान होगी
14 और ऐसा होगा कि जब मैं ज़मीन पर बादल लाऊँगा, तो
मेरी कमान बादल में दिखाई देगी।
15 और मैं अपने 'अहद को, जो मेरे और तुम्हारे और हर तरह
के जानदार के बीच है, याद करूँगा; और तमाम जानदारों की
हलाकत के लिए पानी का तूफ़ान फिर न होगा।
16 और कमान बादल में होगी और मैं उस पर निगाह करूँगा,
ताकि उस अबदी 'अहद को याद करूँ जो ख़ुदा के और ज़मीन के
सब तरह के जानदार के बीच है।
17 तब ख़ुदा ने नूह से कहा कि यह उस 'अहद का निशान है जो
मैं अपने और ज़मीन के कुल जानदारों के बीच क़ाईम करता हूँ।

### ???? ?? ?????

18 नूह के बेटे जो कश्ती से निकले, सिम, हाम और याफ़त थे
और हाम कनान का बाप था।
19 यही तीनों नूह के बेटे थे और इन्हीं की नसल सारी ज़मीन
फैली।

20 और नूह काश्तकारी करने लगा और उसने एक अँगूर का
बाग़ लगाया।
21 और *उसने उसकी मय पी और उसे नशा आया और वह
अपने डेरे में नंगा हो गया।
22 और कनान के बाप हाम ने अपने बाप को नंगा देखा, और
अपने दोनों भाइयों को बाहर आ कर ख़बर दी।
23 तब सिम और याफ़त ने एक कपड़ा लिया और उसे अपने
कन्धों पर धरा, और पीछे को उल्टे चल कर गए और अपने बाप
की नंगे पन को ढाँका, इसलिए उनके मुँह उल्टी तरफ़ थे और
उन्होंने अपने बाप की नंगे पन को न देखा।
24 जब नूह अपनी मय के नशे से होश में आया, तो जो उसके
छोटे बेटे ने उसके साथ किया था उसे मा'लूम हुआ।
25 और उसने कहा कि कनान मल'ऊन हो, वह अपने भाइयों
के ग़ुलामों का ग़ुलाम होगा
26 फिर कहा, ख़ुदावन्द सिम का ख़ुदा मुबारक हो, और कनान
सिम का ग़ुलाम हो।
27 ख़ुदा याफ़त को फैलाए, कि वह सिम के डेरों में बसे, और
कनान उसका ग़ुलाम
28 और तूफ़ान के बाद नूह साढ़े तीन सौ साल और ज़िन्दा रहा।
29 और नूह की कुल उम्र साढ़े नौ सौ साल की हुई। तब उसने
वफ़ात पाई।

# 10

1 नूह के बेटों सिम, हाम और याफ़त की औलाद यह हैं। तूफान
के बाद उनके यहाँ बेटे पैदा हुए।

---

* **9:21** एक दिन जोड़ें

2 बनी *याफ़त यह हैं: जुमर और माजूज और मादी, और
यावान और तूबल और मसक और तीरास।
3 और जुमर के बेटे: अशकनाज़ और रीफ़त और तुजरमा।
4 और यावान के बेटे: इलिसा और तरसीस, किती और
दोदानी।
5 क़ौमों के जज़ीरे इन्हीं की नसल में बट कर, हर एक की ज़बान
और क़बीले के मुताबिक़ मुख़्तलिफ़ मुल्क और गिरोह हो गए।

### [illegible]

6 और बनी हाम यह हैं: कूश और मिस्र और फ़ूत और कना'न।
7 और बनी कूश यह हैं। सबा और हवीला और सबता और
रा'मा और सब्तीका। और बनी रा'मा यह हैं: सबा और ददान।
8 और कूश से नमरूद पैदा हुआ। वह रू — ए — ज़मीन पर
एक सूर्मा हुआ है।
9 ख़ुदावन्द के सामने वह एक शिकारी सूर्मा हुआ है, इसलिए
यह मसल चली कि, "ख़ुदावन्द के सामने नमरूद सा शिकारी
सूर्मा।"
10 और उस की बादशाही का पहला मुल्क सिन'आर में †बाबुल
और अरक और अक्काद और कलना से हुई।
11 उसी मुल्क से निकल कर वह असूर में आया, और नीनवा
और रहोबोत ईर और कलह को,
12 और नीनवा और कलह के बीच रसन को, जो बड़ा शहर है
बनाया।
13 और मिस्र से लूदी और अनामी और लिहाबी और नफ़तूही
14 और फ़तरूसी और कसलूही जिनसे फ़िलिस्ती निकले और
कफ़तूरी पैदा हुए।
15 और कनान से सैदा जो उसका पहलौठा था, और हित,

---

* **10:2** पुराने अहद में बनी बहित सी जगहों पर आया है जो लोगों की जमायत या पीढ़ी को ज़ाहिर करता है † **10:10** बाबुल

16 और यबूसी और अमोरी और जिरजासी,
17 और हव्वी और अरकी और सीनी,
18 और अरवादी और समारी और हमाती पैदा हुए; और बाद
में कना'नी क़बीले फैल गए।
19 और कना'नियों की हद यह है: सैदा से ग़ज़्ज़ा तक जो जिरार
के रास्ते पर है, फिर वहाँ से लसा' तक जो सदूम और 'अमूरा और
अदमा और ज़िबयान की राह पर है।
20 इसलिए बनी हाम यह हैं, जो अपने — अपने मुल्क और
गिरोहों में अपने क़बीलों और अपनी ज़बानों के मुताबिक़ आबाद
हैं।

### [illegible]

21 और सिम के यहाँ भी जो तमाम बनी इब्र का बाप और याफ़त
का बड़ा भाई था, औलाद हुई।
22 और बनी सिम यह हैं: ऐलाम और असुर और अरफ़कसद
और लुद और आराम।
23 और बनी आराम यह हैं; ऊज़ और हूल और जतर और मस।
24 और अरफ़कसद से सिलह पैदा हुआ और सिलह से इब्र।
25 और इब्र के यहाँ दो बेटे पैदा हुए; एक का नाम फ़लज
था क्यूँकि ज़मीन उसके दिनों में बटी, और उसके भाई का नाम
युक्तान था।
26 और युक्तान से अलमूदाद और सलफ़ और हसारमावत और
इराख़।
27 और हदूराम और ऊज़ाल और दिक़ला।
28 और ऊबल और अबीमाएल और सिबा।
29 और ओफ़ीर और हवील और यूबाब पैदा हुए; यह सब बनी
युक्तान थे।
30 और इनकी आबादी मेसा से मशरिक़ के एक पहाड़ सफ़ार
की तरफ़ थी।

31 इसलिए बनी सिम यह हैं, जो अपने — अपने मुल्क और
गिरोह में अपने क़बीलों और अपनी ज़बानों के मुताबिक़ आबाद
हैं।

*[illegible]*

32 नूह के बेटों के ख़ान्दान उनके गिरोह और नसलों के ऐतबार
से यही हैं, और तूफ़ान के बाद जो क़ौमें ज़मीन पर इधर उधर बट
गई वह इन्हीं में से थीं।

# 11

*[illegible]*

1 और तमाम ज़मीन पर एक ही ज़बान और एक ही बोली थी।
2 और ऐसा हुआ कि मशरिक़ की तरफ़ सफ़र करते करते उनको
मुल्क — ए — सिन'*आर में एक मैदान मिला और वह वहाँ बस
गए।
3 और उन्होंने आपस में कहा, 'आओ, हम ईंटें बनाएँ और उनको
आग में ख़ूब पकाएँ। तब उन्होंने पत्थर की जगह ईंट से और चूने
की जगह गारे से काम लिया।
4 फिर वह कहने लगे, कि आओ हम अपने लिए एक शहर
और एक बुर्ज जिसकी चोटी आसमान तक पहुँचे बनाए और यहाँ
अपना नाम करें, ऐसा न हो कि हम तमाम रु — ए — ज़मीन पर
बिखर जाएँ।
5 और ख़ुदावन्द इस शहर और बुर्ज, को जिसे बनी आदम बनाने
लगे देखने को उतरा।
6 और ख़ुदावन्द ने कहा, "देखो, यह लोग सब एक हैं और इन
सभों की एक ही ज़बान है। वह जो यह करने लगे हैं तो अब कुछ
भी जिसका वह इरादा करें उनसे बाक़ी न छूटेगा।
7 इसलिए आओ, हम वहाँ जाकर उनकी ज़बान में इख़्तिलाफ़
डालें, ताकि वह एक दूसरे की बात समझ न सकें।"

* **11:2** बाबुल

8 तब, ख़ुदावन्द ने उनको वहाँ से तमाम रू — ए — ज़मीन में
बिखेर दिया; तब वह उस शहर के बनाने से बाज़ आए।
9 इसलिए उसका नाम †बाबुल हुआ क्यूँकि ख़ुदावन्द ने वहाँ
सारी ज़मीन की ज़बान में इख़्तिलाफ़ डाला और वहाँ से ख़ुदावन्द
ने उनको तमाम रू — ए — ज़मीन पर बिखेर दिया।

### *[illegible]*

10 यह सिम का नसबनामा है: सिम एक सौ साल का था जब
उससे तूफ़ान के दो साल बाद अरफ़कसद पैदा हुआ;
11 और अरफ़कसद की पैदाइश के बाद सिम पाँच सौ साल
ज़िन्दा रहा, और उससे बेटे और बेटियाँ पैदा हुई।
12 जब अरफ़कसद पैंतीस साल का हुआ, तो उससे सिलह पैदा
हुआ;
13 और सिलह की पैदाइश के बाद अरफ़कसद चार सौ तीन
साल और ज़िन्दा रहा, और उससे बेटे और बेटियाँ पैदा हुई।
14 सिलह जब तीस साल का हुआ, तो उससे इब्र पैदा हुआ;
15 और इब्र की पैदाइश के बाद सिलह चार सौ तीन साल और
ज़िन्दा रहा, और उससे बेटे और बेटियाँ पैदा हुई।
16 जब इब्र चौंतीस साल का था, तो उससे फ़लज पैदा हुआ;
17 और फ़लज की पैदाइश के बाद इब्र चार सौ तीस साल और
ज़िन्दा रहा, और उससे बेटे और बेटियाँ पैदा हुई।
18 फ़लज तीस साल का था, जब उससे र'ऊ पैदा हुआ;
19 और र'ऊ की पैदाइश के बाद फ़लज दो सौ नौ साल और
ज़िन्दा रहा, और उससे बेटे और बेटियाँ पैदा हुई।
20 और र'ऊ बत्तीस साल का था, जब उससे सरूज पैदा हुआ;
21 और सरूज की पैदाइश के बाद र'ऊ दो सौ सात साल और
ज़िन्दा रहा, और उससे बेटे और बेटियाँ पैदा हुई।

† **11:9** बाबुल

22 और सरूज तीस साल का था, जब उससे नहूर पैदा हुआ।
23 और नहूर की पैदाइश के बाद सरूज दो सौ साल और ज़िन्दा
रहा, और उससे बेटे और बेटियाँ पैदा हुईं।
24 नहूर उन्तीस साल का था, जब उससे तारह पैदा हुआ।
25 और तारह की पैदाइश के बाद नहूर एक सौ उन्नीस साल
और ज़िन्दा रहा, और उससे बेटे और बेटियाँ पैदा हुई।
26 और तारह सत्तर साल का था, जब उससे इब्रहाम और नहूर
और हारान पैदा हुए।

### [illegible]

27 और यह तारह का नसबनामा है: तारह से इब्रहाम और नहूर
और हारान पैदा हुए और हारान से लूत पैदा हुआ।
28 और हारान अपने बाप तारह के आगे अपनी पैदाइशी जगह
यानी कसदियों के ऊर में मरा।
29 और अब्राम और नहूर ने अपना — अपना ब्याह कर लिया।
इब्रहाम की बीवी का नाम सारय और नहुर की बीवी का नाम
मिल्का था जो हारान की बेटी थी। वही मिल्का का बाप और
इस्का का बाप था।
30 और सारय बाँझ थी; उसके कोई बाल — बच्चा न था।
31 और तारह ने अपने बेटे इब्रहाम को और अपने पोते लूत को,
जो हारान का बेटा था, और अपनी बहू सारय को जो उसके बेटे
इब्रहाम की बीवी थी, साथ लिया और वह सब कसदियों के ऊर से
रवाना हुए की कनान के मुल्क में जाएँ; और वह हारान तक आए
और वहीं रहने लगे।
32 और तारह की उम्र दो सौ पाँच साल की हुई और उस ने
हारान में वफ़ात पाई।

# 12

### [illegible]

1 ख़ुदावन्द ने इब्रहाम से कहा, कि तू अपने वतन और अपने
*नातेदारों के बीच से और अपने बाप के घर से निकल कर उस
मुल्क में जा जो मैं तुझे दिखाऊँगा।
2 और मैं तुझे एक बड़ी क़ौम बनाऊँगा और बरकत दूँगा और
तेरा नाम सरफ़राज़ करूँगा; इसलिए तू बरकत का ज़रिया' हो।
3 जो तुझे मुबारक कहें उनको मैं बरकत दूँगा, और जो तुझ पर
ला'नत करे उस पर मैं ला'नत करूँगा, और ज़मीन के सब क़बीले
तेरे वसीले से बरकत पाएँगे।
4 तब इब्रहाम ख़ुदावन्द के कहने के मुताबिक़ चल पड़ा और
लूत उसके साथ गया, और अब्राम पच्छत्तर साल का था जब वह
हारान से रवाना हुआ।
5 और इब्रहाम ने अपनी बीवी सारय, और अपने भतीजे लूत
को, और सब माल को जो उन्होंने जमा किया था, और उन
आदमियों को जो उनको हारान में मिल गए थे साथ लिया, और
वह मुल्क — ए — कनान को रवाना हुए और मुल्क — ए —
कनान में आए।
6 और इब्रहाम उस मुल्क में से गुज़रता हुआ मक़ाम — ए —
सिकम में मोरा के बलूत तक पहुँचा। उस वक़्त मुल्क में कनानी
रहते थे।
7 तब ख़ुदावन्द ने इब्रहाम को दिखाई देकर कहा कि यही मुल्क
मैं तेरी †नसल को दूँगा। और उसने वहाँ ख़ुदावन्द के लिए जो उसे
दिखाई दिया था, एक क़ुर्बानगाह बनाई।
8 और वहाँ से कूच करके उस पहाड़ की तरफ़ गया जो बैत —
एल के मशरिक़ में है, और अपना डेरा ऐसे लगाया कि बैत — एल
मग़रिब में और 'ए मशरिक़ में पड़ा; और वहाँ उसने ख़ुदावन्द
के लिए एक क़ुर्बानगाह बनाई और ख़ुदावन्द से दुआ की।
9 और इब्रहाम सफ़र करता करता दख्खिन की तरफ़ बढ़ गया।

---

* **12:1** उस जगह से जहाँ तू पैदा हुआ है, या अपने लोगों के बीच में से † **12:7** बीज

## [illegible]

10 और उस मुल्क में काल पड़ा: और इब्रहाम मिस्र को गया कि
वहाँ टिका रहे; क्यूँकि मुल्क में सख़्त काल था।
11 और ऐसा हुआ कि जब वह मिस्र में दाख़िल होने को था
तो उसने अपनी बीवी सारय से कहा कि देख, मैं जानता हूँ कि तू
देखने में ख़ूबसूरत औरत है।
12 और यूँ होगा कि मिस्री तुझे देख कर कहेंगे कि यह उसकी
बीवी है, इसलिए वह मुझे तो मार डालेंगे मगर तुझे ज़िन्दा रख
लेंगे।
13 इसलिए तू यह कह देना, कि मैं इसकी बहन हूँ, ताकि तेरी
वजह से मेरा भला हो और मेरी जान तेरी बदौलत बची रहे।
14 और यूँ हुआ कि जब इब्रहाम मिस्र में आया तो मिस्रियों ने
उस 'औरत को देखा कि वह निहायत ख़ूबसूरत है।
15 और फ़िर'औन के हाकिमों ने उसे देख कर फ़िर'औन के
सामने में उसकी ता'रीफ़ की, और वह 'औरत फ़िर'औन के घर
में पहुँचाई गई।
16 और उसने उसकी ख़ातिर इब्रहाम पर एहसान किया; और
भेड़ बकरियाँ और गाय, बैल और गधे और ग़ुलाम और लौंडियाँ
और गधियाँ और ऊँट उसके पास हो गए।
17 लेकिन ख़ुदावन्द ने फ़िर'औन और उसके ख़ान्दान पर,
इब्रहाम की बीवी सारय की वजह से बड़ी — बड़ी बलाएं नाज़िल
कीं।
18 तब फ़िर'औन ने इब्रहाम को बुला कर उससे कहा, कि तूने
मुझ से यह क्या किया? तूने मुझे क्यूँ न बताया कि यह तेरी बीवी
है।
19 तूने यह क्यूँ कहा कि वह मेरी बहन है? इसी लिए मैंने उसे
लिया कि वह मेरी बीवी बने इसलिए देख तेरी बीवी हाज़िर है।
उसको ले और चला जा।

20 और फ़िर'औन ने उसके हक़ में अपने आदमियों को हिदायत
की, और उन्होंने उसे और उसकी बीवी को उसके सब माल के साथ
रवाना कर दिया।

# 13

## [illegible]

1 और इब्रहाम मिस्र से अपनी बीवी और अपने सब माल और
लूत को साथ ले कर कनान के दख्खिन की तरफ़ चला।
2 और इब्रहाम के पास चौपाए और सोना चाँदी बकसरत था।
3 और वह कनान के दख्खिन से सफ़र करता हुआ बैत — एल में
उस जगह पहुँचा जहाँ पहले बैत — एल और ए◌ के बीच उसका
डेरा था।
4 या'नी वह मक़ाम जहाँ उसने शुरु' में क़ुर्बानगाह बनाई थी,
और वहाँ इब्रहाम ने ख़ुदावन्द से दुआ की।
5 और लूत के पास भी जो इब्रहाम का हमसफ़र था भेड़ —
बकरियाँ, गाय — बैल और *डेरे थे।
6 और उस मुल्क में इतनी गुन्जाइश न थी कि वह इकट्ठे रहें,
क्यूँकि उनके पास इतना माल था कि वह इकट्ठे नहीं रह सकते थे।
7 और इब्रहाम के चरवाहों और लूत के चरवाहों में झगड़ा हुआ;
और कना'नी और फ़रिज़्ज़ी उस वक़्त मुल्क में रहते थे।
8 तब इब्रहाम ने लूत से कहा कि मेरे और तेरे बीच और मेरे
चरवाहों और तेरे चरवाहों के बीच झगड़ा न हुआ करे, क्यूँकि हम
भाई हैं।
9 क्या यह सारा मुल्क तेरे सामने नहीं? इसलिए तू मुझ से
अलग हो जा: अगर तू बाएँ जाए तो मैं दहने जाऊँगा, और अगर
तू दहने जाए तो मैं बाएँ जाऊँगा।
10 तब लूत ने आँख उठाकर यरदन की सारी तराई पर जो ज़ुग़र
की तरफ़ है नज़र दौड़ाई। क्यूँकि वह इससे पहले कि ख़ुदावन्द ने

* **13:5** खेमें

सदूम और 'अमूरा को तबाह किया, ख़ुदावन्द के बाग़ और मिस्र
के मुल्क की तरह ख़ूब सेराब थी।
11 तब लूत ने यरदन की सारी तराई को अपने लिए चुन लिया,
और वह मशरिक़ की तरफ़ चला; और वह एक दूसरे से जुदा हो
गए।
12 इब्रहाम तो मुल्क — ए — कना'न में रहा, और लूत ने तराई
के शहरों में सुकूनत इख़्तियार की और सदूम की तरफ़ अपना डेरा
लगाया।
13 और सदूम के लोग ख़ुदावन्द की नज़र में निहायत बदकार
और गुनहगार थे।
14 और लूत के जुदा हो जाने के बाद ख़ुदावन्द ने इब्रहाम से
कह कि अपनी आँख उठा और जिस जगह तू है वहाँ से शिमाल
दख्खिन और मशरिक़ और मग़रिब की तरफ़ नज़र दौड़ा।
15 क्यूँकि यह तमाम मुल्क जो तू देख रहा है, मैं तुझ को और
तेरी नसल को हमेशा के लिए दूँगा।
16 और मैं तेरी नसल को ख़ाक के ज़र्रों की तरह बनाऊँगा, ऐसा
कि अगर कोई शख़्स ख़ाक के ज़र्रों को गिन सके तो तेरी नसल
भी गिन ली जाएगी।
17 उठ, और इस मुल्क की लम्बाई और चौड़ाई में घूम, क्यूँकि
मैं इसे तुझ को दूँगा।
18 और इब्रहाम ने अपना डेरा उठाया, और ममरे के बलूतों में
जो हबरून में हैं जा कर रहने लगा; और वहाँ ख़ुदावन्द के लिए
एक क़ुर्बानगाह बनाई।

# 14

*[illegible]*

1 और सिन'आर के बादशाह अमराफ़िल, और इल्लासर के
बादशाह अर्युक, और 'ऐलाम के बादशाह किदरला उम्र, और
जोइम के बादशाह तिद'आल के दिनों में,

2 ऐसा हुआ कि उन्होंने सदूम के बादशाह बर'आ, और 'अमूरा
के बादशाह बिरश'आ और अदमा के बादशाह सिनिअब, और
ज़िबोईम के बादशाह शिमेबर, और बाला' या'नी ज़ुग़र के
बादशाह से जंग की।
3 यह सब सिद्दीम या'नी दरिया — ए — शोर की वादी में इकट्ठे
हुए।
4 बारह साल तक वह किदरला उम्र के फ़र्माबरदार रहे, लेकिन
तेरहवें साल उन्होंने सरकशी की।
5 और चौदहवें साल किदरला उम्र और उसके साथ के बादशाह
आए, और रिफ़ाईम को 'असतारात क़र्नेम में, और ज़ूज़ियों को
हाम में, और ऐमीम को सवीक़र्यतैम में,
6 और होरियों को उनके कोह — ए — श'ईर में मारते — मारते
एल-फ़ारान तक जो वीराने से लगा हुआ है आए।
7 फिर वह लौट कर 'ऐन — मिसफ़ात या'नी क़ादिस पहुँचे,
और 'अमालीक़ियों के तमाम मुल्क को, और अमोरियों को जो
हसेसून तमर में रहते थे मारा।
8 तब सदूम का बादशाह, और 'अमूरा का बादशाह, और अदमा
का बादशाह, और ज़िबोइम का बादशाह, और बाला' या'नी ज़ुग़र
का बादशाह, निकले और उन्होंने सिद्दीम की वादी में लड़ाई की।
9 ताकि 'ऐलाम के बादशाह किदरला उम्र, और जोइम के
बादशाह तिद'आल, और सिन'आर के बादशाह अमराफ़िल, और
इल्लासर के बादशाह अर्यूक से जंग करें; यह चार बादशाह उन
पाँचों के मुक़ाबिले में थे।
10 और सिद्दीम की वादी में जा — बजा नफ़्त के गढ़े थे; और
सदूम और 'अमूरा के बादशाह भागते — भागते वहाँ गिरे, और
जो बचे पहाड़ पर भाग गए।
11 तब वह सदूम 'अमूरा का सब माल और वहाँ का सब अनाज
लेकर चले गए;

12 और इब्रहाम के भतीजे लूत को और उसके माल को भी ले
गए क्यूँकि वह सदूम में रहता था
13 तब एक ने जो बच गया था जाकर इब्रहाम 'इब्रानी को ख़बर
दी, जो इस्काल और 'आनेर के भाई ममरे अमोरी के बलूतों में
रहता था, और यह अब्राम के हम 'अहद थे।
14 जब इब्रहाम ने सुना कि उसका भाई गिरफ़्तार हुआ, तो
उसने अपने तीन सौ अट्ठारह माहिर लड़ाकों को लेकर दान तक
उनका पीछा किया।
15 और रात को उसने और उसके ख़ादिमों ने गोल — गोल
होकर उन पर धावा किया और उनको मारा और ख़ूबा तक, जो
दमिश्क़ के बाएँ हाथ है, उनका पीछा किया।
16 और वह सारे माल को और अपने भाई लूत को और उसके
माल और 'औरतों को भी और और लोगों को वापस फेर लाया।

*????-?-??????? ?? ??????? ?? ????? ?????*

17 और जब वह किदरला उम्र और उसके साथ के बादशाहों को
मार कर फिरा तो सदूम का बादशाह उसके इस्तक़बाल को सवी
की वादी तक जो बादशाही वादी है आया।
18 और मलिक — ए — सिदक़, *सालिम का बादशाह, रोटी
और मय लाया और वह ख़ुदा ता'ला का काहिन था।
19 और उसने उसको बरकत देकर कहा कि ख़ुदा ता'ला की तरफ़
से जो आसमान और ज़मीन का मालिक है, इब्रहाम मुबारक हो।
20 और मुबारक है ख़ुदा ता'ला जिसने तेरे दुश्मनों को तेरे हाथ
में कर दिया। तब इब्रहाम ने सबका दसवाँ हिस्सा उसको दिया।
21 और सदूम के बादशाह ने इब्रहाम से कहा कि आदमियों को
मुझे दे दे और माल अपने लिए रख ले।
22 लेकिन इब्रहाम ने सदूम के बादशाह से कहा कि मैंने
ख़ुदावन्द ख़ुदा ता'ला, आसमान और ज़मीन के मालिक, की
क़सम खाई है,

* **14:18** यरूशलेम

23 कि मैं न तो कोई धागा, न जूती का तस्मा, न तेरी और कोई चीज़ लूँ ताकि तू यह न कह सके कि मैंने इब्राहाम को दौलतमन्द बना दिया।
24 सिवा उसके जो जवानों ने खा लिया और उन आदमियों के हिस्से के जो मेरे साथ गए; इसलिए 'आनेर और इस्काल और ममरे अपना — अपना हिस्सा ले लें।

# 15

### [illegible]

1 इन बातों के बाद ख़ुदावन्द का कलाम ख़्वाब में इब्राहाम पर नाज़िल हुआ और उसने फ़रमाया, "ऐ अब्राम, तू मत डर; मैं तेरी ढाल और तेरा बहुत बड़ा अज्र हूँ।"
2 इब्राहाम ने कहा, "ऐ ख़ुदावन्द ख़ुदा, तू मुझे क्या देगा? क्यूँकि मैं तो बेऔलाद जाता हूँ, और मेरे घर का मुख़्तार दमिश्क़ी इली'एलियाज़र है।"
3 फिर इब्राहाम ने कहा, "देख, तूने मुझे कोई औलाद नहीं दी और देख मेरा खानाज़ाद मेरा वारिस होगा।"
4 तब ख़ुदावन्द का कलाम उस पर नाज़िल हुआ और उसने फ़रमाया, "यह तेरा वारिस न होगा, बल्कि वह जो तेरे सुल्ब से पैदा होगा वही तेरा वारिस होगा।"
5 और वह उसको बाहर ले गया और कहा, कि अब आसमान कि तरफ़ निगाह कर और अगर तू सितारों को गिन सकता है तो गिन। और उससे कहा कि तेरी औलाद ऐसी ही होगी।
6 और वह ख़ुदावन्द पर ईमान लाया और इसे उसने उसके हक़ में रास्तबाज़ी शुमार किया। *
7 और उसने उससे कहा कि मैं ख़ुदावन्द हूँ जो तुझे कसदियों के ऊर से निकाल लाया, कि तुझ को यह मुल्क मीरास में दूँ।

---

* **15:6** 1: देखें गलतियों 3:6, रोमियों 4:3, या'क़ूब 2:23

8 और उसने कहा, “ऐ ख़ुदावन्द ख़ुदा! मैं क्यूँ कर जानूँ कि मैं
उसका वारिस हूँगा?”
9 उसने उस से कहा कि मेरे लिए तीन साल की एक बछिया,
और तीन साल की एक बकरी, और तीन साल का एक मेंढा, और
एक कुमरी, और एक कबूतर का बच्चा ले।
10 उसने उन सभों को लिया और उनके बीच से दो टुकड़े किया,
और हर टुकड़े को उसके साथ के दूसरे टुकड़े के सामने रख्खा, मगर
परिन्दों के टुकड़े न किए।
11 तब शिकारी परिन्दे उन टुकड़ों पर झपटने लगे पर इब्रहाम
उनकी हँकता रहा।
12 सूरज डूबते वक़्त इब्रहाम पर गहरी नींद ग़ालिब हुई और
देखो, एक बडा ख़तरनाक अँधेरा उस पर छा गया।
13 और उसने इब्रहाम से कहा, यक़ीन जान कि तेरी नसल के
लोग ऐसे मुल्क में जो उनका नहीं परदेसी होंगे और वहाँ के लोगों
की ग़ुलामी करेंगे और वह चार सौ साल तक उनको दुख देंगे।
14 लेकिन मैं उस कौम की 'अदालत करूँगा जिसकी वह ग़ुलामी
करेंगे, और बाद में वह बड़ी दौलत लेकर वहाँ से निकल आएँगे।
15 और तू सही सलामत अपने बाप — दादा से जा मिलेगा
और बहुत ही बुढापे में दफ़न होगा।
16 और वह चौथी पुश्त में यहाँ लौट आएँगे, क्यूँकि अमोरियों
के गुनाह अब तक पूरे नहीं हुए।
17 और जब सूरज डूबा और अन्धेरा छा गया, तो एक तनूर
जिसमें से धुंआ उठता था दिखाई दिया, और एक जलती मश'अल
उन टुकड़ों के बीच में से होकर गुज़री।
18 उसी रोज़ ख़ुदावन्द ने इब्रहाम से 'अहद किया और फ़रमाया,
यह मुल्क दरिया — ए — †मिस्र से लेकर उस बड़े दरिया या'नी
दरयाए — फ़रात तक,

† **15:18** मिस्र की सरहद तक

19 क़ैनियों और क़नीज़ियों और क़दमूनियों,
20 और हित्तियों और फ़रिज़्ज़ियों और रिफ़ाईम,
21 और अमोरियों और कना'नियों और जिरजासियों और
यबूसियों समेत मैंने तेरी औलाद को दिया है।

# 16

*[illegible]*

1 और इब्रहाम की बीवी सारय के कोई औलाद न हुई। उसकी
एक मिस्री लौंडी थी जिसका नाम हाजिरा था।
2 और सारय ने इब्रहाम से कहा कि देख, ख़ुदावन्द ने मुझे तो
औलाद से महरूम रख्खा है, इसलिए तू मेरी लौंडी के पास जा
शायद उससे मेरा घर आबाद हो। और इब्रहाम ने सारय की बात
मानी।
3 और इब्रहाम को मुल्क — ए — कना'न में रहते दस साल हो
गए थे जब उसकी बीवी सारय ने अपनी मिस्री लौंडी उसे दी कि
उसकी बीवी बने।
4 और वह हाजिरा के पास गया और वह हामिला हुई। और
जब उसे मा'लूम हुआ कि वह हामिला हो गई तो अपनी बीवी को
हक़ीर जानने लगी।
5 तब सारय ने इब्रहाम से कहा, जो ज़ुल्म मुझ पर हुआ वह
तेरी गर्दन पर है। मैंने अपनी लौंडी तेरे आग़ोश में दी और अब
जो उसने आपको हामिला देखा तो मैं उसकी नज़रों में हक़ीर हो
गई; इसलिए ख़ुदावन्द मेरे और तेरे बीच इन्साफ़ करे।
6 इब्रहाम ने सारय से कहा कि तेरी लौंडी तेरे हाथ में है; जो
तुझे भला दिखाई दे वैसा ही उसके साथ कर। तब सारय उस पर
सख़्ती करने लगी और वह उसके पास से भाग गई।
7 और वह ख़ुदावन्द के फ़रिश्ता को वीराने में पानी के एक चश्मे
के पास मिली। यह वही चश्मा है जो शोर की राह पर है।

8 और उसने कहा, “ऐ सारय की लौंडी हाजिरा, तू कहाँ से आई
और किधर जाती है?” उसने कहा कि मैं अपनी बीबी सारय के
पास से भाग आई हूँ।
9 ख़ुदावन्द के फ़रिश्ता ने उससे कहा कि तू अपनी बीबी के पास
लौट जा और अपने को उसके कब्ज़े में कर दे
10 और ख़ुदावन्द के फ़रिश्ता ने उससे कहा, कि मै तेरी औलाद
को बहुत बढ़ाऊँगा यहाँ तक कि कसरत की वजह से उसका शुमार
न हो सकेगा।
11 और ख़ुदावन्द के फ़रिश्ता ने उससे कहा कि तू हामिला है
और तेरा बेटा होगा, उसका नाम इस्मा'*ईल रखना इसलिए कि
ख़ुदावन्द ने तेरा दुख सुन लिया।
12 वह गोरखर की तरह आज़ाद मर्द होगा, उसका हाथ सबके
ख़िलाफ़ और सबके हाथ उसके ख़िलाफ़ होंगे और वह अपने सब
भाइयों के सामने बसा रहेगा।
13 और हाजिरा ने ख़ुदावन्द का जिसने उससे बातें कीं, †
अताएल — रोई नाम रख्खा या'नी ऐ ख़ुदा तू बसीर है; क्यूँकि
उसने कहा, क्या मैंने यहाँ भी अपने देखने वाले को जाते हुए
देखा?'
14 इसी वजह से उस कुएँ का नाम बैरलही ‡रोई पड़ गया; वह
क़ादिस और बरिद के बीच है।
15 और इब्रहाम से हाजिरा के एक बेटा हुआ, और इब्रहाम ने
अपने उस बेटे का नाम जो हाजिरा से पैदा हुआ इस्मा'ईल रख्खा।
16 और जब इब्रहाम से हाजिरा के इस्मा'ईल पैदा हुआ तब
इब्रहाम छियासी साल का था।

# 17

---

* **16:11** इस के मायने हैं, ख़ुदा ने सुना है † **16:13** ख़ुदा जोमुझ को देखता है
‡ **16:14** ज़िंदा ख़ुदा का कुआँ जो मुझ को देखता है

## [illegible]

1 जब इब्राहाम निनानवे साल का हुआ तब ख़ुदावन्द इब्राहाम को नज़र आया और उससे कहा कि मैं ख़ुदा — ए — क़ादिर हूँ; तू मेरे सामने में चल और कामिल हो।

2 और मैं अपने और तेरे बीच 'अहद बाँधूंगा और तुझे बहुत ज़्यादा बढ़ाऊँगा।

3 तब इब्राहाम सिज्दे में हो गया और ख़ुदा ने उससे हम — कलाम होकर फ़रमाया।

4 कि देख मेरा 'अहद तेरे साथ है और तू बहुत क़ौमों का बाप होगा।

5 और तेरा नाम फिर* इब्राहाम नहीं कहलाएगा बल्कि तेरा नाम† अब्रहाम होगा, क्यूँकि मैंने तुझे बहुत क़ौमों का‡ बाप ठहरा दिया है।

6 और मैं तुझे बहुत कामयाब करूँगा और क़ौमें तेरी नसल से होंगी और बादशाह तेरी औलाद में से निकलेंगे।

7 और मैं अपने और तेरे बीच, और तेरे बाद तेरी नसल के बीच उनकी सब नसलो के लिए अपना 'अहद जो अबदी 'अहद होगा, बांधूंगा ताकि मैं तेरा और तेरे बाद तेरी नसल का ख़ुदा रहूँ।

8 और मैं तुझ को और तेरे बाद तेरी नसल को, कनान का तमाम मुल्क जिसमें तू परदेसी है ऐसा दूँगा, कि वह हमेशा की मिल्कियत हो जाए; और मैं उनका ख़ुदा हूँगा।

## [illegible]

9 फिर ख़ुदा ने अब्रहाम से कहा कि तू मेरे 'अहद को मानना और तेरे बाद तेरी नसल पुश्त दर पुश्त उसे माने।

---

* **17:5** बड़ा बुज़ुर्ग बाप † **17:5** यह देखें कि पूरी बाइबिल में अब्राहम करके ही आया है ‡ **17:5** कई लोगों की जमाअतों का बाप

10 और मेरा 'अहद जो मेरे और तेरे बीच और तेरे बाद तेरी
नसल के बीच है, और जिसे तुम मानोगे वह यह है: कि तुम में से
हर एक फ़र्ज़न्द — ए — नरीना का ख़तना किया जाए।
11 और तुम अपने बदन की खलड़ी का ख़तना किया करना, और
यह उस 'अहद का निशान होगा जो मेरे और तुम्हारे बीच है।
12 तुम्हारे यहाँ नसल — दर — नसल हर लड़के का ख़तना,
जब वह आठ रोज़ का हो, किया जाए; चाहे वह घर में पैदा हो
चाहे उसे किसी परदेसी से ख़रीदा हो जो तेरी नसल से नहीं।
13 लाज़िम है कि तेरे ख़ानाज़ाद और तेरे ग़ुलाम का ख़तना
किया जाए, और मेरा 'अहद तुम्हारे जिस्म में अबदी 'अहद होगा।
14 और वह फ़र्ज़न्द — ए — नरीना जिसका ख़तना न हुआ
हो, अपने लोगों में से§ काट डाला जाए क्यूँकि उसने मेरा 'अहद
तोड़ा।

### [illegible]

15 और ख़ुदा ने अब्रहाम से कहा, कि* सारय जो तेरी बीवी है
इसलिए उसको सारय न पुकारना, उसका नाम †सारा होगा।
16 और मैं उसे बरकत दूँगा और उससे भी तुझे एक बेटा
बख़्शूँगा; यक़ीनन मैं उसे बरकत दूँगा कि क़ौमें उसकी नसल से
होंगी और 'आलम के बादशाह उससे पैदा होंगे।
17 तब अब्रहाम सिज्दे में हुआ और हँस कर दिल में कहने लगा
कि क्या सौ साल के बूढ़े से कोई बच्चा होगा, और क्या सारा के
जो नव्वे साल की है औलाद होगी?
18 और अब्रहाम ने ख़ुदा से कहा कि काश इस्मा'ईल ही तेरे
सामने ज़िन्दा रहे,

§ **17:14** वो आगे चल कर मेरे लोगों में से एक नहीं कहलायेगा, या निकल दिया जाएगा * **17:15** मेरी मलिका † **17:15** मलिका

19 तब ख़ुदा ने फ़रमाया, कि बेशक तेरी बीवी सारा के तुझ से
बेटा होगा, तू उसका नाम इस्हाक़ रखना; और मैं उससे और फिर
उसकी औलाद से अपना 'अहद जो अबदी 'अहद है बाँधूगा।
20 और इस्मा'ईल के हक़ में भी मैंने तेरी दुआ सुनी; देख
मैं उसे बरकत दूँगा और उसे कामयाब करूँगा और उसे बहुत
बढ़ाऊँगा; और उससे बारह सरदार पैदा होंगे और मैं उसे बड़ी
क़ौम बनाऊँगा।
21 लेकिन मैं अपना 'अहद इस्हाक़ से बाँधूगा जो अगले साल
इसी वक़्त — ए — मुक़र्रर पर सारा से पैदा होगा।
22 और जब ख़ुदा अब्रहाम से बातें कर चुका तो उसके पास से
ऊपर चला गया।
23 तब अब्रहाम ने अपने बेटे इस्मा'ईल की और सब ख़ानाज़ादों
और अपने सब ग़ुलामों को या'नी अपने घर के सब आदमियों को
लिया और उसी दिन ख़ुदा के हुक्म के मुताबिक़ उन का ख़तना
किया।
24 अब्रहाम निनानवे साल का था जब उसका ख़तना हुआ।
25 और जब उसके बेटे इस्मा'ईल का ख़तना हुआ तो वह तेरह
साल का था।
26 अब्रहाम और उसके बेटे इस्मा'ईल का ख़तना एक ही दिन
हुआ।
27 और उसके घर के सब आदमियों का ख़तना, ख़ानाज़ादों और
उनका भी जो परदेसियों से ख़रीदे गए थे, उसके साथ हुआ।

# 18

*[illegible]*

1 फिर ख़ुदावन्द ममरे के बलूतों में उसे नज़र आया और वह
दिन को गर्मी के वक़्त अपने ख़ेमे के दरवाज़े पर बैठा था।
2 और उसने अपनी आँखें उठा कर नज़र की और क्या देखता
है कि तीन मर्द उसके सामने खड़े हैं। वह उनको देख कर ख़ेमे के
दरवाज़े से उनसे मिलने को दौड़ा और ज़मीन तक झुका।

3 और कहने लगा कि ऐ मेरे ख़ुदावन्द, अगर मुझ पर आपने
करम की नज़र की है तो अपने ख़ादिम के पास से चले न जाएँ।
4 बल्कि थोड़ा सा पानी लाया जाए, और आप अपने पाँव धो
कर उस दरख़्त के नीचे आराम करें।
5 मैं कुछ रोटी लाता हूँ, आप ताज़ा — दम हो जाएँ; तब आगे
बढ़ें क्यूँकि आप इसी लिए अपने ख़ादिम के यहाँ आए हैं उन्होंने
कहा, जैसा तूने कहा है, वैसा ही कर।
6 और अब्रहाम डेरे में सारा के पास दौड़ा गया और कहा, कि
तीन *पैमाना बारीक आटा जल्द ले और उसे गूंध कर फुल्के बना।
7 और अब्रहाम गल्ले की तरफ़ दौड़ा और एक मोटा ताज़ा
बछड़ा लाकर एक जवान को दिया, और उस ने जल्दी — जल्दी
उसे तैयार किया।
8 फिर उसने मक्खन और दूध और उस बछड़े को जो उस ने
पकवाया था, लेकर उनके सामने रख्खा; और ख़ुद उनके पास
दरख़्त के नीचे खड़ा रहा और उन्होंने खाया।
9 फिर उन्होंने उससे पूछा कि तेरी बीवी सारा कहाँ है? उसने
कहा, वह डेरे में है।
10 तब† उसने कहा, "मैं फिर मौसम — ए — बहार में तेरे पास
आऊँगा, और देख तेरी बीवी सारा के बेटा होगा।" उसके पीछे
डेरे का दरवाज़ा था, सारा वहाँ से सुन रही थी।
11 और अब्रहाम और सारा ज़ईफ़ और बड़ी उम्र के थे, और सारा
की वह हालत नहीं रही थी जो 'औरतों की होती है।
12 तब सारा ने अपने दिल में हँस कर कहा, ख़ुदावन्द "क्या
इस क़दर उम्र — दराज़ होने पर भी मेरे लिए ख़ुशी हो सकती है,
जबकि मेरा शौहर भी बूढ़ा है?"
13 फिर ख़ुदावन्द ने अब्रहाम से कहा कि सारा क्यूँ यह कह कर
हँसी की क्या मेरे जो ऐसी बुढ़िया हो गई हूँ वाक़ई बेटा होगा?

---

* **18:6** किलोग्राम के लगभग † **18:10** उन में से एक, यह्वे

14 क्या ख़ुदावन्द के नज़दीक कोई बात मुश्किल है? मौसम
— ए — बहार में मुक़र्रर वक़्त पर मैं तेरे पास फिर आऊँगा और
सारा के बेटा होगा।
15 तब सारा इन्कार कर गई, कि मैं नहीं हँसी। क्यूँकि वह डरती
थी, लेकिन उसने कहा, "नहीं, तू ज़रूर हँसी थी।"

### [illegible]

16 तब वह मर्द वहाँ से उठे और उन्होंने सदूम का रुख़ किया,
और अब्रहाम उनको रुख़सत करने को उनके साथ हो लिया।
17 और ख़ुदावन्द ने कहा कि जो कुछ मैं करने को हूँ, क्या उसे
अब्रहाम से छिपाए रख्खूँ
18 अब्रहाम से तो यक़ीनन एक बड़ी और ज़बरदस्त क़ौम पैदा
होगी, और ज़मीन की सब क़ौमें उसके वसीले से बरकत पाएँगी।
19 क्यूँकि मैं जानता हूँ कि वह अपने बेटों और घराने को जो
उसके पीछे रह जाएँगे, वसीयत करेगा कि वह ख़ुदावन्द की
राह में क़ाईम रह कर 'अद्ल और इन्साफ़ करें; ताकि जो कुछ
ख़ुदावन्द ने अब्रहाम के हक़ में फ़रमाया है उसे पूरा करे।
20 फिर ख़ुदावन्द ने फ़रमाया, "चूँकि सदूम और 'अमूरा का
गुनाह बढ़ गया और उनका जुर्म निहायत संगीन हो गया है।
21 इसलिए मैं अब जाकर देखूँगा कि क्या उन्होंने सरासर वैसा
ही किया है जैसा गुनाह मेरे कान तक पहुँचा है, और अगर नहीं
किया तो मैं मा'लूम कर लूँगा।"
22 इसलिए वह मर्द वहाँ से मुड़े और सदूम की तरफ़ चले,
लेकिन अब्रहाम ख़ुदावन्द के सामने खड़ा ही रहा।
23 तब अब्रहाम ने नज़दीक जा कर कहा, क्या तू नेक को बद
के साथ हलाक करेगा?
24 शायद उस शहर में पचास रास्तबाज़ हों; "क्या तू उसे हलाक
करेगा और उन पचास रास्तबाज़ों की ख़ातिर जो उसमें हों उस
मक़ाम को न छोड़ेगा?

25 ऐसा करना तुझ से दूर है कि नेक को बद के साथ मार डाले
और नेक बद के बराबर हो जाएँ। ये तुझ से दूर है। क्या तमाम
दुनिया का इन्साफ़ करने वाला इन्साफ़ न करेगा?"
26 और ख़ुदावन्द ने फ़रमाया, कि अगर मुझे सदूम में शहर के
अन्दर पचास रास्तबाज़ मिलें, तो मैं उनकी ख़ातिर उस मक़ाम
को छोड़ दूँगा।
27 तब अब्रहाम ने जवाब दिया और कहा, कि देखिए! मैंने
ख़ुदावन्द से बात करने की हिम्मत की, अगरचे मैं मिट्टी और राख
हूँ।
28 शायद पचास रास्तबाज़ों में पाँच कम हों; क्या उन पाँच की
कमी की वजह से तू तमाम शहर को बर्बाद करेगा? उस ने कहा
अगर मुझे वहाँ पैंतालीस मिलें तो मैं उसे बर्बाद नहीं करूँगा।
29 फिर उसने उससे कहा कि शायद वहाँ चालीस मिलें। तब
उसने कहा कि मैं उन चालीस की ख़ातिर भी यह नहीं करूँगा।
30 फिर उसने कहा, "ख़ुदावन्द नाराज़ न हो तो मैं कुछ और
'अर्ज़ करूँ। शायद वहाँ तीस मिलें।" उसने कहा, "अगर मुझे वहाँ
तीस भी मिलें तो भी ऐसा नहीं करूँगा।"
31 फिर उसने कहा, "देखिए! मैंने ख़ुदावन्द से बात करने की
हिम्मत की; शायद वहाँ बीस मिलें।" उसने कहा, "मैं बीस के लिए
भी उसे बर्बाद नहीं करूँगा।"
32 तब उसने कहा, "ख़ुदावन्द नाराज़ न हो तो मैं एक बार और
कुछ 'अर्ज़ करूँ; शायद वहाँ दस मिलें।" उसने कहा, "मैं दस के
लिए भी उसे बर्बाद नहीं करूँगा।"
33 जब ख़ुदावन्द अब्रहाम से बातें कर चुका तो चला गया और
अब्रहाम अपने मकान को लौटा।

# 19

1 और वह दोनों फ़रिश्ता शाम को सदूम में आए और लूत सदूम
के फाटक पर बैठा था। और लूत उनको देख कर उनके इस्तक़बाल
के लिए उठा और ज़मीन तक झुका,
2 और कहा, "ऐ मेरे ख़ुदावन्द, अपने ख़ादिम के घर तशरीफ़ ले
चलिए और रात भर आराम कीजिए और अपने पाँव धोइये और
सुबह उठ कर अपनी राह लीजिए।" और उन्होंने कहा, "नहीं, हम
चौक ही में रात काट लेंगे।"
3 लेकिन जब वह बहुत बजिद्द हुआ तो वह उसके साथ चल
कर उसके घर में आए; और उसने उनके लिए खाना तैयार की
और बेख़मीरी रोटी पकाई; और उन्होंने खाया।
4 और इससे पहले कि वह आराम करने के लिए लेटें सदूम शहर
के आदमियों ने, जवान से लेकर बूढ़े तक सब लोगों ने, हर तरफ़
से उस घर को घेर लिया।
5 और उन्होंने लूत को पुकार कर उससे कहा कि वह आदमी जो
आज रात तेरे यहाँ आए, कहाँ हैं? उनको हमारे पास बाहर ले आ
ताकि हम उनसे सोहबत करें।
6 तब लूत निकल कर उनके पास दरवाज़ा पर गया और अपने
पीछे किवाड़ बन्द कर दिया।
7 और कहा कि ऐ भाइयो! ऐसी बदी तो न करो।
8 देखो! मेरी दो बेटियाँ हैं जो आदमी से वाकिफ़ नहीं; मर्ज़ी हो
तो मैं उनको तुम्हारे पास ले आऊँ और जो तुम को भला मा'लूम
हो उनसे करो, मगर इन आदमियों से कुछ न कहना क्यूँकि वह
इसलिए मेरी पनाह में आए हैं।
9 उन्होंने कहा, यहाँ से हट जा! "फिर कहने लगे, कि यह शख़्स
हमारे बीच क़याम करने आया था और अब हुकूमत जताता है;
इसलिए हम तेरे साथ उनसे ज़्यादा बद सलूकी करेंगे।" तब वह
उस आदमी या'नी लूत पर पिल पड़े और नज़दीक आए ताकि
किवाड़ तोड़ डालें।

10 लेकिन उन आदमियों ने अपना हाथ बढ़ा कर लूत को अपने
पास घर में खींच लिया और दरवाज़ा बन्द कर दिया।
11 और उन आदमियों को जो घर के दरवाज़े पर थे क्या छोटे
क्या बड़े, अंधा कर दिया; तब वह दरवाज़ा ढूँडते — ढूँडते थक
गए।
12 तब उन आदमियों ने लूत से कहा, क्या यहाँ तेरा और कोई
है? दामाद और अपने बेटों और बेटियों और जो कोई तेरा इस
शहर में हो, सबको इस मक़ाम से बाहर निकाल ले जा।
13 क्यूँकि हम इस मक़ाम को बर्बाद करेंगे, इसलिए कि उनका
गुनाह ख़ुदावन्द के सामने बहुत बुलन्द हुआ है और ख़ुदावन्द ने
उसे बर्बाद करने को हमें भेजा है।
14 तब लूत ने बाहर जाकर अपने दामादों से जिन्होंने उसकी
बेटियाँ ब्याही थीं बातें कीं और कहा कि उठो और इस मक़ाम से
निकलो क्यूँकि ख़ुदावन्द इस शहर को बर्बाद करेगा। लेकिन वह
अपने दामादों की नज़र में मज़ाक़ सा मा'लूम हुआ।
15 जब सुबह हुई तो फ़रिश्तों ने लूत से जल्दी कराई और कहा
कि उठ अपनी बीवी और अपनी दोनों बेटियों को जो यहाँ हैं ले
जा; ऐसा न हो कि तू भी इस शहर की बदी में गिरफ़्तार होकर
हलाक हो जाए।
16 मगर उसने देर लगाई तो उन आदमियों ने उसका और
उसकी बीवी और उसकी दोनों बेटियों का हाथ पकड़ा, क्यूँकि
ख़ुदावन्द की मेहरबानी उस पर हुई और उसे निकाल कर शहर
से बाहर कर दिया।
17 और यूँ हुआ कि जब वह उनको बाहर निकाल लाए तो उसने
कहा, “अपनी जान बचाने को भाग; न तो पीछे मुड़ कर देखना न
कहीं मैदान में ठहरना; उस पहाड़ को चला जा, ऐसा न हो कि तू
हलाक हो जाए।”
18 और लूत ने उनसे कहा कि ऐ मेरे ख़ुदावन्द, ऐसा न कर।

19 देख, तूने अपने ख़ादिम पर करम की नज़र की है और ऐसा
बड़ा फ़ज़्ल किया कि मेरी जान बचाई; मैं पहाड़ तक जा नहीं
सकता, कहीं ऐसा न हो कि मुझ पर मुसीबत आ पड़े और मैं मर
जाऊँ।
20 देख, यह शहर ऐसा नज़दीक है कि वहाँ भाग सकता हूँ और
यह छोटा भी है। इजाज़त हो तो मैं वहाँ चला जाऊँ, वह छोटा
सा भी है और मेरी जान बच जाएगी।
21 उसने उससे कहा कि देख, मैं इस बात में भी तेरा लिहाज़
करता हूँ कि इस शहर को जिसका तू ने ज़िक्र किया, बर्बाद नहीं
करूँगा।
22 जल्दी कर और वहाँ चला जा, क्यूँकि मैं कुछ नहीं कर सकता
जब तक कि तू वहाँ पहुँच न जाए। इसीलिए उस शहर का नाम
*ज़ुग़र कहलाया।
23 और ज़मीन पर धूप निकल चुकी थी, जब लूत ज़ुग़र में
दाख़िल हुआ।
24 तब ख़ुदावन्द ने अपनी तरफ़ से सदूम और 'अमूरा पर
गन्धक और आग आसमान से बरसाई,
25 और उसने उन शहरों को और उस सारी तराई को और उन
शहरों के सब रहने वालों को और सब कुछ जो ज़मीन से उगा था
बर्बाद किया।
26 मगर उसकी बीवी ने उसके पीछे से मुड़ कर देखा और वह
नमक का सुतून बन गई।
27 और अब्रहाम सुबह सवेरे उठ कर उस जगह गया जहाँ वह
ख़ुदावन्द के सामने खड़ा हुआ था;
28 और उसने सदूम और 'अमूरा और उस तराई की सारी ज़मीन
की तरफ़ नज़र की, और क्या देखता है कि ज़मीन पर से धुवां ऐसा
उठ रहा है जैसे भट्टी का धुवां।

---

* **19:22** छोटा

29 और यूँ हुआ कि जब ख़ुदा ने उस तराई के शहरों को बर्बाद
किया, तो ख़ुदा ने अब्रहाम को याद किया और उन शहरों की जहाँ
लूत रहता था, बर्बाद करते वक़्त लूत को उस बला से बचाया।

### *[illegible]*

30 और लूत जुग़्रसे निकल कर पहाड़ पर जा बसा और उसकी
दोनों बेटियाँ उसके साथ थीं; क्यूँकि उसे ज़ुग़र में बसते डर लगा,
और वह और उसकी दोनों बेटियाँ एक ग़ार में रहने लगे।
31 तब पहलौठी ने छोटी से कहा, कि हमारा बाप बूढ़ा है और
ज़मीन पर कोई आदमी नहीं जो दुनिया के दस्तूर के मुताबिक़
हमारे पास आए।
32 आओ, हम अपने बाप को मय पिलाएँ और उससे हम —
आग़ोश हों, ताकि अपने बाप से नसल बाक़ी रख्खें।
33 इसलिए उन्होंने उसी रात अपने बाप को मय पिलाई और
पहलौठी अन्दर गई और अपने बाप से हम — आग़ोश हुई,
लेकिन उसने न जाना कि वह कब लेटी और कब उठ गई।
34 और दूसरे दिन यूँ हुआ कि पहलौठी ने छोटी से कहा कि देख,
कल रात को मैं अपने बाप से हम — आग़ोश हुई, आओ, आज
रात भी उसको मय पिलाएँ और तू भी जा कर उससे हमआग़ोश
हो, ताकि हम अपने बाप से नसल बाक़ी रख्खें।
35 फिर उस रात भी उन्होंने अपने बाप को मय पिलाई और
छोटी गई और उससे हम — आग़ोश हुई, लेकिन उसने न जाना
कि वह कब लेटी और कब उठ गई।
36 फिर लूत की दोनों बेटियाँ अपने बाप से हामिला हुई।
37 और बड़ी के एक बेटा हुआ और उसने उसका नाम मोआब
रख्खा; वही मोआबियों का बाप है जो अब तक मौजूद हैं।
38 और छोटी के भी एक बेटा हुआ और उसने उसका नाम बिन
— 'अम्मी रख्खा: वही बनी — 'अम्मोन का बाप है जो अब तक

मौजूद हैं।

# 20

### [illegible]

1 और अब्रहाम वहाँ से दख्खिन के मुल्क की तरफ़ चला और
क़ादिस और शोर के बीच ठहरा और जिरार में क़याम किया।
2 और अब्रहाम ने अपनी बीवी सारा के हक़ में कहा, कि वह मेरी
बहन है, और जिरार के बादशाह अबीमलिक ने सारा को बुलवा
लिया।
3 लेकिन रात को ख़ुदा अबीमलिक के पास ख़्वाब में आया और
उसे कहा कि देख, तू उस 'औरत की वजह से जिसे तूने लिया है
हलाक होगा क्यूँकि वह शौहर वाली है।
4 लेकिन अबीमलिक ने उससे सोहबत नहीं की थी; तब उसने
कहा, ऐ ख़ुदावन्द, क्या तू सादिक़ क़ौम को भी मारेगा?
5 क्या उसने ख़ुद मुझ से नहीं कहा, कि यह मेरी बहन है? और
वह ख़ुद भी यही कहती थी, कि वह मेरा भाई है; मैंने तो अपने
सच्चे दिल और पाकीज़ा हाथों से यह किया।
6 और ख़ुदा ने उसे ख़्वाब में कहा, "हाँ, मैं जानता हूँ कि तूने
अपने सच्चे दिल से यह किया, और मैंने भी तुझे रोका कि तू मेरा
गुनाह न करे; इसी लिए मैंने तुझे उसको छूने न दिया।
7 अब तू उस आदमी की बीवी को वापस कर दे; क्यूँकि वह नबी
है और वह तेरे लिए दुआ करेगा और तू ज़िन्दा रहेगा। लेकिन
अगर तू उसे वापस न करे तो जान ले कि तू भी और जितने तेरे हैं
सब ज़रूर हलाक होंगे।"
8 तब अबीमलिक ने सुबह सवेरे उठ कर अपने सब नौकरों को
बुलाया और उनको ये सब बातें कह सुनाई, तब वह लोग बहुत
डर गए।
9 और अबीमलिक ने अब्रहाम को बुला कर उससे कहा, कि तूने
हम से यह क्या किया? और मुझ से तेरा क्या क़ुसूर हुआ कि

तू मुझ पर और मेरी बादशाही पर एक गुनाह — ए — अज़ीम
लाया? तूने मुझ से वह काम किए जिनका करना मुनासिब न था।
10 अबीमलिक ने अब्रहाम से यह भी कहा कि तूने क्या समझ
कर ये बात की?
11 अब्रहाम ने कहा, कि मेरा ख़्याल था कि ख़ुदा का ख़ौफ़ तो
इस जगह हरगिज़ न होगा, और वह मुझे मेरी बीवी की वजह से
मार डालेंगे।
12 और फ़िल — हक़ीक़त वह मेरी बहन भी है, क्यूँकि वह मेरे
बाप की बेटी है अगरचे मेरी माँ की बेटी नहीं; फिर वह मेरी बीवी
हुई।
13 और जब ख़ुदा ने मेरे बाप के घर से मुझे आवारा किया तो
मैंने इससे कहा कि मुझ पर यह तेरी मेहरबानी होगी कि जहाँ
कहीं हम जाएँ तू मेरे हक़ में यही कहना कि यह मेरा भाई है।
14 तब अबीमलिक ने भेड़ बकरियाँ और गाये बैल और ग़ुलाम
और लौंडियाँ अब्रहाम को दीं, और उसकी बीवी सारा को भी उसे
वापस कर दिया।
15 और अबीमलिक ने कहा कि देख, मेरा मुल्क तेरे सामने है,
जहाँ जी चाहे रह।
16 और उसने सारा से कहा कि देख, मैंने तेरे भाई को चाँदी के
हज़ार सिक्के दिए हैं, वह उन सब के सामने जो तेरे साथ हैं तेरे
लिए आँख का पर्दा है, और सब के सामने तेरी बड़ाई हो गी।
17 तब अब्रहाम ने ख़ुदा से दुआ की, और ख़ुदा ने अबीमलिक
और उसकी बीवी और उसकी — लौंडियों को शिफ़ा बख़्शी और
उनके औलाद होने लगी।
18 क्यूँकि ख़ुदावन्द ने अब्रहाम की बीवी सारा की वजह से
अबीमलिक के ख़ान्दान के सब रहम बन्द कर दिए थे।

# 21

1 और ख़ुदावन्द ने जैसा उसने फ़रमाया था, सारा पर नज़र की
और उसने अपने वादे के मुताबिक़ सारा से किया।
2 तब सारा हामिला हुई और अब्रहाम के लिए उसके बुढ़ापे में
उसी मुक़र्रर वक़्त पर जिसका ज़िक्र ख़ुदा ने उससे किया था, उसके
बेटा हुआ।
3 और अब्रहाम ने अपने बेटे का नाम जो उससे, सारा के पैदा
हुआ इस्हाक़ रख्खा।
4 और अब्रहाम ने ख़ुदा के हुक्म के मुताबिक़ अपने बेटे इस्हाक़
का ख़तना, उस वक़्त किया जब वह आठ दिन का हुआ।
5 और जब उसका बेटा इस्हाक़ उससे पैदा हुआ तो अब्रहाम सौ
साल का था।
6 और सारा ने कहा, कि ख़ुदा ने मुझे *हँसाया और सब सुनने
वाले मेरे साथ हँसेंगे।
7 और यह भी कहा कि भला कोई अब्रहाम से कह सकता था
कि सारा लड़कों को दूध पिलाएगी? क्यूँकि उससे उसके बुढ़ापे में
मेरे एक बेटा हुआ।

### *[illegible]*

8 और वह लड़का बढ़ा और उसका दूध छुड़ाया गया और
इस्हाक़ के दूध छुड़ाने के दिन अब्रहाम ने बड़ी दावत की।
9 और सारा ने देखा कि हाजिरा मिस्री का बेटा जो उसके
अब्रहाम से हुआ था, ठट्ठे मारता है।
10 तब उसने अब्रहाम से कहा कि इस लौंडी को और उसके बेटे
को निकाल दे, क्यूँकि इस लौंडी का बेटा मेरे बेटे इस्हाक़ के साथ
वारिस न होगा।
11 लेकिन अब्रहाम को उसके बेटे के ज़रिए' यह बात निहायत
बुरी मा'लूम हुई।

---

* **21:6** वह हँसता है, देखें 17:17 — 19

12 और ख़ुदा ने अब्रहाम से कहा कि तुझे इस लड़के और अपनी
लौंडी की वजह से बुरा न लगे; जो कुछ सारा तुझ से कहती है तू
उसकी बात मान क्यूँकि इस्हाक़ से तेरी नसल का नाम चलेगा।
13 और इस लौंडी के बेटे से भी मैं एक क़ौम पैदा करूँगा,
इसलिए कि वह तेरी नसल है।
14 तब अब्रहाम ने सुबह सवेरे उठ कर रोटी और पानी की एक
मश्क ली और उसे हाजिरा को दिया, बल्कि उसे उसके कन्धे पर
रख दिया और लड़के को भी उसके हवाले करके उसे रुख़सत कर
दिया। इसलिए वह चली गई और बैरसबा' के वीराने में आवारा
फिरने लगी।
15 और जब मश्क का पानी ख़त्म हो गया तो उसने लड़के को
एक झाड़ी के नीचे डाल दिया।
16 और ख़ुद उसके सामने एक टप्पे के किनारे पर दूर जा कर बैठी
और कहने लगी कि मैं इस लड़के का मरना तो न देखूँ। इसलिए
वह उसके सामने बैठ गई और †ज़ोर ज़ोर से रोने लगी।
17 और ख़ुदा ने उस लड़के की आवाज़ सुनी और ख़ुदा के
फ़रिश्ता ने आसमान से हाजिरा को पुकारा और उससे कहा, "ऐ
हाजिरा, तुझ को क्या हुआ? मत डर, क्यूँकि ख़ुदा ने उस जगह
से जहाँ लड़का पड़ा है उसकी आवाज़ सुन ली है।
18 उठ, और लड़के को उठा और उसे अपने हाथ से संभाल;
क्यूँकि मैं उसको एक बड़ी क़ौम बनाऊँगा।"
19 फिर ख़ुदा ने उसकी आँखें खोलीं और उसने पानी का एक
कुआँ देखा, और जाकर मश्क को पानी से भर लिया और लड़के
को पिलाया।
20 और ख़ुदा उस लड़के के साथ था और वह बड़ा हुआ और
वीराने में रहने लगा और तीरंदाज़ बना।
21 और वह फ़ारान के वीराने में रहता था, और उसकी माँ ने

† **21:16** 1: वह सिसकियाँ भरने लगी, लड़का बहुत ज़ियादा रोने लगा

मुल्क — ए — मिस्र से उसके लिए बीवी ली।

### [illegible]

22 फिर उस वक़्त यूँ हुआ, कि अबीमलिक और उसके लश्कर
के सरदार फ़ीकुल ने अब्रहाम से कहा कि हर काम में जो तू करता
है ख़ुदा तेरे साथ है।
23 इसलिए तू अब मुझ से ख़ुदा की क़सम खा, कि तू न मुझ से
न मेरे बेटे से और न मेरे पोते से दग़ा करेगा; बल्कि जो मेहरबानी
मैंने तुझ पर की है वैसे ही तू भी मुझ पर और इस मुल्क पर, जिसमें
तूने क़याम किया है, करेगा।
24 तब अब्रहाम ने कहा, “मैं क़सम खाऊँगा।”
25 और अब्रहाम ने पानी के एक कुएँ की वजह से, जिसे
अबीमलिक के नौकरों ने ज़बरदस्ती छीन लिया था, अबीमलिक
को झिड़का।
26 अबीमलिक ने कहा, “मुझे ख़बर नहीं कि किसने यह काम
किया, और तूने भी मुझे नहीं बताया, न मैंने आज से पहले इसके
बारे में कुछ सुना।”
27 फिर अब्रहाम ने भेड़ बकरियाँ और गाय — बैल लेकर
अबीमलिक को दिए और दोनों ने आपस में 'अहद किया।
28 अब्रहाम ने भेड़ के सात मादा बच्चों को लेकर अलग रख्खा।
29 और अबीमलिक ने अब्रहाम से कहा कि भेड़ के इन सात
मादा बच्चों को अलग रखने से तेरा मतलब क्या है?
30 उसने कहा, कि भेड़ के इन सात मादा बच्चों को तू मेरे हाथ
से ले ताकि वह मेरे गवाह हों कि मैंने यह कुआँ खोदा।
31 इसीलिए उसने उस मक़ाम का नाम बैरसबा' ‡रख्खा, क्यूँकि
वहीं उन दोनों ने क़सम खाई।

‡ **21:31** सात में से एक कुआँ, या क़सम का कुआँ

32 तब उन्होंने बैरसबा' में 'अहद किया, तब अबीमलिक
और उसके लश्कर का सरदार फ़ीकुल दोनों उठ खड़े हुए और
फ़िलिस्तियों के मुल्क को लौट गए।
33 तब अब्रहाम ने बैरसबा' में झाऊ का एक दरख़्त लगाया और
वहाँ उसने ख़ुदावन्द से जो अबदी ख़ुदा है दुआ की।
34 और अब्रहाम बहुत दिनों तक फ़िलिस्तियों के मुल्क में रहा।

# 22

### [illegible]

1 इन बातों के बाद यूँ हुआ कि ख़ुदा ने अब्रहाम को आज़माया
और उसे कहा, ऐ अब्रहाम! "उसने कहा, मैं हाज़िर हूँ।"
2 तब उसने कहा कि तू अपने बेटे इस्हाक़ को जो तेरा इकलौता
है और जिसे तू प्यार करता है, साथ लेकर मोरियाह के मुल्क में
जा और वहाँ उसे पहाड़ों में से एक पहाड़ पर जो मैं तुझे बताऊँगा,
सोख़्तनी क़ुर्बानी के तौर पर चढ़ा।
3 तब अब्रहाम ने सुबह सवेरे उठ कर अपने गधे पर चार जामा
कसा और अपने साथ दो जवानों और अपने बेटे इस्हाक़ को लिया,
और सोख़्तनी क़ुर्बानी के लिए लकड़ियाँ चीरी और उठ कर उस
जगह को जो ख़ुदा ने उसे बताई थी रवाना हुआ।
4 तीसरे दिन अब्रहाम ने निगाह की और उस जगह को दूर से
देखा।
5 तब अब्रहाम ने अपने जवानों से कहा, "तुम यहीं गधे के पास
ठहरो, मैं और यह लड़का दोनों ज़रा वहाँ तक जाते हैं, और सिज्दा
करके फिर तुम्हारे पास लौट आएँगे।"
6 और अब्रहाम ने सोख़्तनी क़ुर्बानी की लकड़ियाँ लेकर अपने
बेटे इस्हाक़ पर रख्खीं, और आग और छुरी अपने हाथ में ली और
दोनों इकट्ठे रवाना हुए।

7 तब इस्हाक़ ने अपने बाप अब्रहाम से कहा, ऐ बाप! "उसने
जवाब दिया कि ऐ मेरे बेटे, मैं हाज़िर हूँ। उसने कहा, देख, आग
और लकड़ियाँ तो हैं, लेकिन सोख़्तनी क़ुर्बानी के लिए बर्रा कहाँ
है?"
8 अब्रहाम ने कहा, "ऐ मेरे बेटे ख़ुदा ख़ुद ही अपने लिए
सोख़्तनी क़ुर्बानी के लिए बर्रा मुहय्या कर लेगा।" तब वह दोनों
आगे चलते गए।
9 और उस जगह पहुँचे जो ख़ुदा ने बताई थी; वहाँ अब्रहाम
ने क़ुर्बान गाह बनाई और उस पर लकड़ियाँ चुनीं और अपने
बेटे इस्हाक़ को बाँधा और उसे क़ुर्बानगाह पर लकड़ियों के ऊपर
रख्खा।
10 और अब्रहाम ने हाथ बढ़ाकर छुरी ली कि अपने बेटे को
ज़बह करे।
11 तब ख़ुदावन्द के फ़रिश्ता ने उसे आसमान से पुकारा, कि ऐ
अब्रहाम, ऐ अब्रहाम! उसने कहा, "मैं हाज़िर हूँ।"
12 फिर उसने कहा कि तू अपना हाथ लड़के पर न चला और न
उससे कुछ कर; क्यूँकि मैं अब जान गया कि तू ख़ुदा से डरता है,
इसलिए कि तूने अपने बेटे को भी जो तेरा इकलौता है मुझ से
दरेग न किया।
13 और अब्रहाम ने निगाह की और अपने पीछे एक मेंढा देखा
जिसके सींग झाड़ी में अटके थे; तब अब्रहाम ने जाकर उस मेंढे
को पकड़ा और अपने बेटे के बदले सोख़्तनी क़ुर्बानी के तौर पर
चढ़ाया।
14 और अब्रहाम ने उस मक़ाम का नाम *यहोवा यरी रख्खा।
चुनाँचे आज तक यह कहावत है कि ख़ुदावन्द के पहाड़ पर मुहय्या
किया जाएगा।
15 और ख़ुदावन्द के फ़रिश्ते ने आसमान से दोबारा अब्रहाम
को पुकारा और कहा कि।

---

* **22:14** जो तुम्हें ज़रूरत है उसे यह्वे देगा

16 “ख़ुदावन्द फ़रमाता है, चूँकि तूने यह काम किया कि अपने
बेटे को भी जो तेरा इकलौता है दरेग़ न रक्खा; इसलिए मैंने भी
अपनी ज़ात की क़सम खाई है कि
17 मैं तुझे बरकत पर बरकत दूँगा, और तेरी नसल को बढ़ाते —
बढ़ाते आसमान के तारों और समुन्दर के किनारे की रेत की तरह
कर दूँगा, और तेरी औलाद अपने दुश्मनों के फाटक की मालिक
होगी।
18 और तेरी नसल के वसीले से ज़मीन की सब क़ौमें बरकत
पाएँगी, क्यूँकि तूने मेरी बात मानी।”
19 तब अब्रहाम अपने जवानों के पास लौट गया, और वह उठे
और इकट्ठे बैरसबा' को गए; और अब्रहाम बैरसबा' में रहा।
20 इन बातों के बाद यूँ हुआ कि अब्रहाम को यह ख़बर मिली,
कि मिल्काह के भी तेरे भाई नहूर से बेटे हुए हैं।
21 या'नी ऊज़ जो उसका पहलौठा है, और उसका भाई बूज़
और क़मूएल, अराम का बाप,
22 और कसद और हज़ू और फ़िल्दास और इद्लाफ़ और
बैतूएल।
23 और बैतूएल से रिब्क़ा पैदा हुई। यह आठों अब्रहाम के भाई
नहूर से मिल्काह के पैदा हुए।
24 और उसकी बाँदी से भी जिसका नाम रूमा था, तिबख़ और
जाहम और तख़स और मा'का पैदा हुए।

# 23

*[illegible]*

1 और सारा की उम्र एक सौ सताईस साल की हुई, सारा की
ज़िन्दगी के इतने ही साल थे।

2 और सारा ने करयतअरबा' में वफ़ात पाई। यह कनान में है
और हबरून भी कहलाता है। और अब्रहाम सारा के लिए मातम
और नौहा करने को वहाँ गया।
3 फिर अब्रहाम मय्यत के पास से उठ कर बनी — हित से बातें
करने लगा और कहा कि।
4 मैं तुम्हारे बीच परदेसी और ग़रीब — उल — वतन हूँ। तुम
अपने यहाँ क़ब्रिस्तान के लिए कोई मिलिकयत मुझे दो, ताकि मैं
अपने मुर्दे को आँख के सामने से हटाकर दफ़्न कर दूँ।
5 तब बनीहित ने अब्रहाम को जवाब दिया कि।
6 ऐ *ख़ुदावन्द हमारी सुन: तू हमारे बीच† ज़बरदस्त सरदार है।
हमारी कब्रों में जो सबसे अच्छी हो उसमें तू अपने मुर्दे को दफ़्न
कर; हम में ऐसा कोई नहीं जो तुझ से अपनी क़ब्र का इन्कार करे,
ताकि तू अपना मुर्दा दफ़न न कर सके।
7 अब्रहाम ने उठ कर और बनी — हित के आगे, जो उस मुल्क
के लोग हैं, आदाब बजा लाकर
8 उनसे यूँ बातें की, कि अगर तुम्हारी मर्ज़ी हो कि मैं अपने मुर्दे
को आँख के सामने से हटाकर दफ़्न कर दूँ, तो मेरी 'अर्ज़ सुनो,
और सुहर के बेटे इफ़रोन से मेरी सिफ़ारिश करो,
9 कि वह मकफ़ीला के ग़ार को जो उसका है और उसके खेत
के किनारे पर है, उसकी पूरी क़ीमत लेकर मुझे दे दे, ताकि वह
क़ब्रिस्तान के लिए तुम्हारे बीच मेरी मिल्कियत हो जाए।
10 और 'इफ़रोन बनी-हित के बीच बैठा था। तब 'इफ़रोन हित्ती
ने बनी हित के सामने, उन सब लोगों के आमने सामने जो उसके
शहर के दरवाज़े से दाख़िल होते थे अब्रहाम को जवाब दिया,
11 "ऐ मेरे ख़ुदावन्द! यूँ न होगा, बल्कि मेरी सुन! मैं यह खेत
तुझे देता हूँ, और वह ग़ार भी जो उसमें है तुझे दिए देता हूँ। यह
मैं अपनी क़ौम के लोगों के सामने तुझे देता हूँ, तू अपने मुर्दे को

* **23:6** जनाब, 11, 15 भी देखें † **23:6** तुम हमारे बीच में बड़े राजकुमार हो

दफ़्न कर।”
12 तब अब्रहाम उस मुल्क के लोगों के सामने झुका।
13 फिर उसने उस मुल्क के लोगों के सुनते हुए 'इफ़रोन से कहा
कि अगर तू देना ही चाहता है तो मेरी सुन, मैं तुझे उस खेत का
दाम दूँगा; यह तू मुझ से ले ले, तो मैं अपने मुर्दे को वहाँ दफ़्न
करूँगा।
14 इफ़रोन ने अब्रहाम को जवाब दिया,
15 “ऐ मेरे ख़ुदावन्द, मेरी बात सुन; यह ज़मीन ‡चाँदी की चार
सौ मिस्काल की है इसलिए मेरे और तेरे बीच यह है क्या? तब
अपना मुर्दा दफ़्न कर।”
16 और अब्रहाम ने 'इफ़रोन की बात मान ली; इसलिए
अब्रहाम ने इफ़रोन को उतनी ही चाँदी तौल कर दी, जितनी का
ज़िक्र उसने बनी — हित के सामने किया था, या'नी चाँदी के चार
सौ मिस्काल जो सौदागरों में राइज थी।
17 इसलिए इफ़रोन का वह खेत जो मकफ़ीला में ममरे के
सामने था, और वह ग़ार जो उसमें था, और सब दरख़्त जो उस
खेत में और उसके चारों तरफ़ की हदूद में थे,
18 यह सब बनी — हित के और उन सबके आमने सामने जो
उसके शहर के दरवाज़े से दाख़िल होते थे, अब्रहाम की ख़ास
मिल्कियत क़रार दिए गए।
19 इसके बाद अब्रहाम ने अपनी बीवी सारा को मकफ़ीला के
खेत के ग़ार में, जो मुल्कए — कना'न में ममरे या'नी हबरून के
सामने है, दफ़्न किया।
20 चुनाँचे वह खेत और वह ग़ार जो उसमें था, बनी — हित
की तरफ़ से क़ब्रिस्तान के लिए अब्रहाम की मिल्कियत क़रार दिए
गए।

# 24

‡ **23:15** 4:6 किलोग्राम चांदी के बराबर

### [illegible]

1 और अब्रहाम ज़ईफ़ और उम्र दराज़ हुआ और ख़ुदावन्द ने
सब बातों में अब्रहाम को बरकत बख़्शी थी।
2 और अब्रहाम ने अपने घर के ख़ास नौकर से, जो उसकी सब
चीज़ों का मुख़्तार था कहा, तू अपना हाथ ज़रा मेरी रान के नीचे
रख कि। *
3 मैं तुझ से ख़ुदावन्द की जो ज़मीन — ओ — आसमान का
ख़ुदा है क़सम लें, कि तू कना'नियों की बेटियों में से जिनमें मैं
रहता हूँ, किसी को मेरे बेटे से नहीं ब्याहेगा।
4 बल्कि तू मेरे वतन में मेरे रिश्तेदारों के पास जा कर मेरे बेटे
इस्हाक़ के लिए बीवी लाएगा।
5 उस नौकर ने उससे कहा, "शायद वह 'औरत इस मुल्क में मेरे
साथ आना न चाहे; तो क्या मैं तेरे बेटे को उस मुल्क में जहाँ से
तू आया फिर ले जाऊँ?"
6 तब अब्रहाम ने उससे कहा ख़बरदार तू मेरे बेटे को वहाँ
हरगिज़ न ले जाना।
7 ख़ुदावन्द, आसमान का ख़ुदा, जो मुझे मेरे बाप के घर और
†मेरी पैदाइशी जगह से निकाल लाया, और जिसने मुझ से बातें
कीं और क़सम खाकर मुझ से कहा, कि मैं तेरी नसल को यह मुल्क
दूँगा; वही तेरे आगे — आगे अपना फ़िरिश्ता भेजेगा कि तू वहाँ
से मेरे बेटे के लिए बीवी लाए।
8 और अगर वह 'औरत तेरे साथ आना न चाहे, तो तू मेरी इस
क़सम से छूटा, लेकिन मेरे बेटे को हरगिज़ वहाँ न ले जाना।
9 उस नौकर ने अपना हाथ अपने आक़ा अब्रहाम की रान के
नीचे रख कर उससे इस बात की क़सम खाई।

* **24:2** क़दीम रिवायत के मुताबिक एक निशानी बतोर इशारा है कि खाई गई क़सम नहीं बदली जायेगी † **24:7** मेरे रिश्तेदारों के मुल्क से, उस मुल्क से जहाँ मैं पैदा हुआ

10 तब वह नौकर अपने आक़ा के ऊँटों में से दस ऊँट लेकर
रवाना हुआ, और उसके आक़ा की अच्छी अच्छी चीज़ें उसके पास
थीं, और वह उठकर ‡मसोपतामिया में नहूर के शहर को गया।
11 और शाम को जिस वक़्त 'औरतें पानी भरने आती है उस ने
उस शहर के बाहर बावली के पास ऊँटों को बिठाया।
12 और कहा, “ऐ ख़ुदावन्द, मेरे आक़ा अब्रहाम के खुदा, मैं
तेरी मिन्नत करता हूँ के आज तू मेरा काम बना दे, और मेरे आक़ा
अब्रहाम पर करम कर।
13 देख, मैं पानी के चश्मा पर खड़ा हूँ और इस शहर के लोगों
की बेटियाँ पानी भरने को आती हैं;
14 इसलिए ऐ ख़ुदावन्द ऐसा हो कि जिस लड़की से मैं कहूँ, कि
तू ज़रा अपना घड़ा झुका दे तो मैं पानी पी लूँ और वह कहे, कि
ले पी, और मैं तेरे ऊँटों को भी पिला दूँगी'; तो वह वही हो जिसे
तूने अपने बन्दे इस्हाक़ के लिए ठहराया है; और इसी से मैं समझ
लूँगा कि तूने मेरे आक़ा पर करम किया है।”
15 वह यह कह ही रहा था कि रिब्क़ा, जो अब्रहाम के भाई नहूर
की बीवी मिल्काह के बेटे बैतूएल से पैदा हुई थी, अपना घड़ा कंधे
पर लिए हुए निकली।
16 वह लड़की निहायत ख़ूबसूरत और कुंवारी, और मर्द से
नवाक़िफ़ थी। वह नीचे पानी के चश्मा के पास गई और अपना
घड़ा भर कर ऊपर आई।
17 तब वह नौकर उससे मिलने को दौड़ा और कहा कि ज़रा
अपने घड़े से थोड़ा सा पानी मुझे पिला दे।
18 उसने कहा, पीजिए साहब; “और फ़ौरन घड़े को हाथ पर
उतार उसे पानी पिलाया।
19 जब उसे पिला चुकी तो कहने लगी, कि मैं तेरे ऊँटों के लिए
भी पानी भर — भर लाऊँगी, जब तक वह पी न चुकें।”

---

‡ **24:10** आराम नहराइम का इलाक़ा, मेसोपोतामियाह

20 और फ़ौरन अपने घड़े को हौज़ में ख़ाली करके फिर बावली
की तरफ़ पानी भरने दौड़ी गई, और उसके सब ऊँटों के लिए भरा।
21 वह आदमी चुप — चाप उसे ग़ौर से देखता रहा, ताकि
मा'लूम करे कि ख़ुदावन्द ने उसका सफ़र मुबारक किया है या
नहीं।
22 और जब ऊँट पी चुके तो उस शख़्स ने आधे मिस्काल सोने
की एक §नथ, और दस मिस्काल सोने के दो *कड़े उसके हाथों के
लिए निकाले।
23 और कहा कि ज़रा मुझे बता कि तू किसकी बेटी है? और
क्या तेरे बाप के घर में हमारे टिकने की जगह है?
24 उसने उससे कहा कि मैं बैतूएल की बेटी हूँ। वह मिल्काह
का बेटा है जो नहूर से उसके हुआ।
25 और यह भी उससे कहा कि हमारे पास भूसा और चारा बहुत
है, और टिकने की जगह भी है।
26 तब उस आदमी ने झुक कर ख़ुदावन्द को सिज्दा किया,
27 और कहा, "ख़ुदावन्द मेरे आक़ा अब्रहाम का ख़ुदा मुबारक
हो, जिसने मेरे आक़ा को अपने करम और सच्चाई से महरूम नहीं
रख्खा और मुझे तो ख़ुदावन्द ठीक राह पर चलाकर मेरे आक़ा के
भाइयों के घर लाया।"
28 तब उस लड़की ने दौड़ कर अपनी माँ के घर में यह सब हाल
कह सुनाया।
29 और रिब्क़ा का एक भाई था जिसका नाम लाबन था; वह
बाहर पानी के चश्मा पर उस आदमी के पास दौड़ा गया।
30 और ऐसा हुआ कि जब उसने वह नथ देखी, और वह कड़े
भी जो उसकी बहन के हाथों में थे, और अपनी बहन रिब्क़ा का
बयान भी सुन लिया कि उस शख़्स ने मुझ से ऐसी — ऐसी बातें
कहीं, तो वह उस आदमी के पास आया और देखा कि वह चश्मा

§ **24:22** 5:6 ग्राम * **24:22** 150 ग्राम

के नज़दीक ऊँटों के पास खड़ा है।
31 तब उससे कहा, “ऐ, तू जो ख़ुदावन्द की तरफ़ से मुबारक है।
अन्दर चल, बाहर क्यूँ खड़ा है? मैंने घर को और ऊँटों के लिए भी
जगह को तैयार कर लिया है।”
32 तब वह आदमी घर में आया, और उसने उसके ऊँटों को
खोला और ऊँटों के लिए भूसा और चारा, और उसके और उसके
साथ के आदमियों के पॉव धोने को पानी दिया।
33 और खाना उसके आगे रख्खा गया, लेकिन उसने कहा कि
मैं जब तक अपना मतलब बयान न कर लूँ नहीं खाऊँगा। उसने
कहा, अच्छा, कह।
34 तब उसने कहा कि मैं अब्रहाम का नौकर हूँ।
35 और ख़ुदावन्द ने मेरे आक़ा को बड़ी बरकत दी है, और वह
बहुत बड़ा आदमी हो गया है; और उसने उसे भेड़ — बकरियाँ,
और गाय बैल और सोना चाँदी और लौंडिया और ग़ुलाम और
ऊँट और गधे बख़्शे हैं।
36 और मेरे आक़ा की बीवी सारा के जब वह बुढ़िया हो गई,
उससे एक बेटा हुआ। उसी को उसने अपना सब कुछ दे दिया है।
37 और मेरे आक़ा ने मुझे क़सम दे कर कहा है, कि तू कना'नियों
की बेटियों में से, जिनके मुल्क में मैं रहता हूँ किसी को मेरे बेटे से
न ब्याहना।
38 बल्कि तू मेरे बाप के घर और मेरे रिश्तेदारों में जाना और
मेरे बेटे के लिए बीवी लाना।
39 तब मैंने अपने आक़ा से कहा, 'शायद वह 'औरत मेरे साथ
आना न चाहे।
40 तब उसने मुझ से कहा, 'ख़ुदावन्द, जिसके सामने मैं चलता
रहा हूँ, अपना फ़रिश्ता तेरे साथ भेजेगा और तेरा सफ़र मुबारक
करेगा; तू मेरे रिश्तेदारों और मेरे बाप के ख़ान्दान में से मेरे बेटे
के लिए बीवी लाना।

41 और जब तू मेरे ख़ान्दान में जा पहुँचेगा, तब मेरी क़सम से
छूटेगा; और अगर वह कोई लड़की न दें, तो भी तू मेरी क़सम से
छूटा।
42 इसलिए मैं आज पानी के उस चश्मा पर आकर कहने लगा,
'ऐ ख़ुदावन्द, मेरे आक़ा अब्रहाम के ख़ुदा, अगर तू मेरे सफ़र को
जो मैं कर रहा हूँ मुबारक करता है।
43 तो देख, मैं पानी के चश्मा के पास खड़ा होता हूँ, और ऐसा
हो कि जो लड़की पानी भरने निकले और मैं उससे कहूँ, 'ज़रा अपने
घड़े से थोड़ा पानी मुझे पिला दे,
44 और वह मुझे कहे कि तू भी पी और मैं तेरे ऊँटों के लिए भी
भर दूँगी, तो वो वही 'औरत हो जिसे ख़ुदावन्द ने मेरे आक़ा के
बेटे के लिए ठहराया है।
45 मैं दिल में यह कह ही रहा था कि रिब्क़ा अपना घड़ा कन्धे
पर लिए हुए बाहर निकली, और नीचे चश्मा के पास गई, और
पानी भरा। तब मैंने उससे कहा, 'ज़रा मुझे पानी पिला दे।
46 उसने फ़ौरन अपना घड़ा कन्धे पर से उतारा और कहा, 'ले
पी और मैं तेरे ऊँटों को भी पिला दूँगी। तब मैंने पिया और उसने
मेरे ऊँटों को भी पिलाया।
47 फिर मैंने उससे पूछा, 'तू किसकी बेटी है?' उसने कहा, 'मैं
बैतूएल की बेटी हूँ, वह नहूर का बेटा है जो मिल्काह से पैदा हुआ;
फिर मैंने उसकी नाक में नथ और उसके हाथों में कड़े पहना दिए।
48 और मैंने झुक कर ख़ुदावन्द को सिज्दा किया और ख़ुदावन्द,
अपने आक़ा अब्रहाम के ख़ुदा को मुबारक कहा, जिसने मुझे ठीक
राह पर चलाया कि अपने आक़ा के भाई की बेटी उसके बेटे के
लिए ले जाऊँ।
49 इसलिए अब अगर तुम करम और सच्चाई से मेरे आक़ा के
साथ पेश आना चाहते हो तो मुझे बताओ, और अगर नहीं तो
कह दो, ताकि मैं दहनी या बाएँ तरफ़ फिर जाऊँ।

50 तब लाबन और बैतूएल ने जवाब दिया, कि यह बात
ख़ुदावन्द की तरफ़ से हुई है, हम तुझे कुछ बुरा या भला नहीं
कह सकते।
51 देख, रिब्क़ा तेरे सामने मौजूद है, उसे ले और जा, और
ख़ुदावन्द के क़ौल के मुताबिक़ अपने आक़ा के बेटे से उसे ब्याह
दे।
52 जब अब्रहाम के नौकर ने उनकी बातें सुनीं, तो ज़मीन तक
झुक कर ख़ुदावन्द को सिज्दा किया।
53 और नौकर ने चाँदी और सोने के ज़ेवर, और लिबास निकाल
कर रिब्क़ा को दिए, और उसके भाई और उसकी माँ को भी क़ीमती
चीजें दीं।
54 और उसने और उसके साथ के आदमियों ने खाया पिया और
रात भर वहीं रहे; सुबह को वह उठे और उसने कहा, कि मुझे मेरे
आक़ा के पास रवाना कर दो।
55 रिब्क़ा के भाई और माँ ने कहा, कि लड़की को कुछ दिन,
कम से कम दस दिन, हमारे पास रहने दे; इसके बाद वह चली
जाएगी।
56 उसने उनसे कहा, कि मुझे न रोको क्यूँकि ख़ुदावन्द ने मेरा
सफ़र मुबारक किया है, मुझे रुख़्सत कर दो ताकि मैं अपने आक़ा
के पास जाऊँ।
57 उन्होंने कहा, “हम लड़की को बुलाकर पूछते हैं कि वह क्या
कहती है।”
58 तब उन्होंने रिब्क़ा को बुला कर उससे पूछा, “क्या तू इस
आदमी के साथ जाएगी?” उसने कहा, “जाऊँगी।”
59 तब उन्होंने अपनी बहन रिब्क़ा और उसकी दाया और
अब्रहाम के नौकर और उसके आदमियों को रुख़सत किया।
60 और उन्होंने रिब्क़ा को दुआ दी और उससे कहा, “ऐ हमारी
बहन, तू लाखों की माँ हो और तेरी नसल अपने कीना रखने वालों
के फाटक की मालिक हो।”

61 और रिब्क़ा और उसकी सहेलियाँ उठकर ऊँटों पर सवार हुई,
और उस आदमी के पीछे हो लीं। तब वह आदमी रिब्क़ा को साथ
लेकर रवाना हुआ।
62 और इस्हाक़ बेरलही — रोई से होकर चला आ रहा था,
क्यूँकि वह दख्खिन के मुल्क में रहता था।
63 और शाम के वक़्त इस्हाक़ बैतुलख़ला को मैदान में गया,
और उसने जो अपनी आँखें उठाई और नज़र की तो क्या देखता
है कि ऊँट चले आ रहे हैं।
64 और रिब्क़ा ने निगाह की और इस्हाक़ को देख कर ऊँट पर
से उतर पड़ी।
65 और उसने नौकर से पूछा, "यह शख़्स कौन है जो हम से
मिलने की मैदान में चला आ रहा है?" उस नौकर ने कहा, "यह
मेरा आक़ा है।" तब उसने बुरक़ा लेकर अपने ऊपर डाल लिया।
66 नौकर ने जो — जो किया था सब इस्हाक़ को बताया।
67 और इस्हाक़ रिब्क़ा को अपनी माँ सारा के डेरे में ले गया।
तब उसने रिब्क़ा से ब्याह कर लिया और उससे मुहब्बत की, और
इस्हाक़ ने अपनी माँ के मरने के बाद तसल्ली पाई।

# 25

### [illegible]

1 और अब्रहाम ने फिर एक और बीवी की जिसका नाम क़तूरा
था।
2 और उससे ज़िम्रान और युकसान और मिदान और मिदियान
और इसबाक़ और सूख़ पैदा हुए।
3 और युकसान से सिबा और ददान पैदा हुए, और ददान की
औलाद से असूरी और लतूसी और लूमी थे।
4 और मिदियान के बेटे ऐफ़ा और इफ़िर और हनूक और
अबीदा'आ और इल्दू'आ थे; यह सब *बनी क़तूरा थे।

---

* **25:4** क़तूरह की औलाद

5 और अब्रहाम ने अपना सब कुछ इस्हाक़ को दिया।
6 और अपनी बाँदियों के बेटों को अब्रहाम ने बहुत कुछ इनाम
देकर अपने जीते जी उनको अपने बेटे इस्हाक़ के पास से मशरिक़
की तरफ़ या'नी मशरिक़ के मुल्क में भेज दिया।
7 और अब्रहाम की कुल उम्र जब तक कि वह जिन्दा रहा एक
सौ पिच्छत्तर साल की हुई।
8 तब अब्रहाम ने दम छोड़ दिया और ख़ूब बुढ़ापे में निहायत
ज़ईफ़ और पूरी उम्र का होकर वफ़ात पाई, और अपने लोगों में
जा मिला।
9 और उसके बेटे इस्हाक़ और इस्मा'ईल ने मकफ़ीला के ग़ार
में, जो ममरे के सामने हित्ती सुहर के बेटे इफ़रोन के खेत में है,
उसे दफ़्न किया।
10 †यह वही खेत है जिसे अब्रहाम ने बनी — हित से ख़रीदा
था; वहीं अब्रहाम और उसकी बीवी सारा दफ़्न हुए।
11 और अब्रहाम की वफ़ात के बाद ख़ुदा ने उसके बेटे इस्हाक़
को बरकत बख़्शी और इस्हाक़ बैर — लही — रोई के नज़दीक
रहता था।

### *[illegible]*

12 यह नसबनामा अब्रहाम के बेटे इस्मा'ईल का है जो अब्रहाम
से सारा की लौंडी हाजिरा मिस्री के बत्न से पैदा हुआ।
13 और इस्मा'ईल के बेटों के नाम यह है: यह नाम तरतीबवार
उनकी पैदाइश के मुताबिक़ हैं, इस्मा'ईल का पहलौठा नबायोत
था, फिर कीदार और अदबिएल और मिबसाम,
14 और मिशमा' और दूमा और मस्सा,
15 हदद और तेमा और यतूर और नफ़ीस और क़िदमा।

---

† **25:10** 1: यह वह खेत था जो अब्रहाम ने हित्तियों से ख़रीदा था जहाँ उस ने उस से पहले अपनी बीवी सारह को दफनाया हुआ था

16 यह इस्मा'ईल के बेटे हैं और इन्हीं के नामों से इनकी
बस्तियां और छावनियाँ नामज़द हुई और यही बारह अपने अपने
क़बीले के सरदार हुए।
17 और इस्मा'ईल की कुल उम्र एक सौ सैंतीस साल की हुई तब
उसने दम छोड़ दिया और वफ़ात पाई और‡ अपने लोगों में जा
मिला।
18 और उसकी औलाद हवीला से शोर तक, जो मिस्र के सामने
उस रास्ते पर है जिस से असूर को जाते हैं आबाद थी। यह लोग§
अपने सब भाइयों के सामने बसे हुए थे।

*[illegible]*

19 और अब्रहाम के बेटे इस्हाक़ का नसबनामा यह है: अब्रहाम
से इस्हाक़ पैदा हुआ:
20 इस्हाक़ चालीस साल का था जब उसने रिब्क़ा से ब्याह
किया, जो फ़द्दान अराम के बाशिन्दे बैतूएल अरामी की बेटी और
लाबन अरामी की बहन थी।
21 और इस्हाक़ ने अपनी बीवी के लिए ख़ुदावन्द से दुआ की,
क्यूँकि वह बाँझ थी; और ख़ुदावन्द ने उसकी दुआ क़ुबूल की, और
उसकी बीवी रिब्क़ा हामिला हुई।
22 और उसके पेट में दो लड़के आपस में मुज़ाहमत करने लगे।
तब उसने कहा, "अगर ऐसा ही है तो मैं जीती क्यूँ हूँ?" और वह
ख़ुदावन्द से पूछने गई।
23 ख़ुदावन्द ने उससे कहा, "दो क़ौमें तेरे पेट में हैं, और दो
क़बीले तेरे बत्न से निकलते ही अलग — अलग हो जाएँगे। और
एक क़बीला दूसरे क़बीले से ताक़तवर होगा, और बड़ा छोटे की
ख़िदमत करेगा।"

‡ **25:17** 1: वह अपने मरे हुए आबा व अजदाद के साथ जा मिला § **25:18** वह अब्रहाम की दूसरी औलाद के साथ दुश्मनी से रहने लगे, वह अपने तमाम भाइयों के साथ मशरिकी इलाके में रहने लगे

24 और जब उसके बच्चा पैदा होने के दिन पूरे हुए, तो क्या
देखते हैं कि उसके पेट में जुड़वां बच्चे हैं।
25 और पहला जो पैदा हुआ तो सुर्ख़ था और ऊपर से ऐसा जैसे
ऊनी कपड़ा, और उन्होंने उसका नाम '*ऐसौ रख्खा।
26 उसके बाद उसका भाई पैदा हुआ और उसका हाथ 'ऐसौ की
एड़ी को पकड़े हुए था, और उसका नाम या'क़ूब रख्खा गया; जब
वह रिब्क़ा से पैदा हुए तो इस्हाक़ साठ साल का था।

### [illegible]

27 और वह लड़के बढ़े, और 'ऐसौ शिकार में माहिर हो गया
और जंगल में रहने लगा, और या'क़ूब सादा मिजाज़ डेरों में रहने
वाला आदमी था।
28 और इस्हाक़ 'ऐसौ को प्यार करता था क्यूँकि वह उसके
शिकार का गोश्त खाता था और रिब्क़ा या'क़ूब को प्यार करती
थी।
29 और या'क़ूब ने दाल पकाई, और 'ऐसौ जंगल से आया और
वह बहुत भूका था।
30 और 'ऐसौ ने या'क़ूब से कहा, "यह जो लाल — लाल है
मुझे खिला दे, क्यूँकि मैं बे — दम हो रहा हूँ।" इसी लिए उसका
नाम अदोम भी हो गया।
31 तब या'क़ूब ने कहा, "तू आज अपने पहलौठे का हक़ मेरे
हाथ बेच दे।"
32 'ऐसौ ने कहा, "देख, मैं तो मरा जाता हूँ, पहलौठे का हक़
मेरे किस काम आएगा?"
33 तब या'क़ूब ने कहा कि आज ही मुझ से क़सम खा, उसने
उससे क़सम खाई; और उसने अपना पहलौठे का हक़ या'क़ूब के
हाथ बेच दिया।

* **25:25** एसोव के मायने हैं, बालों से ढका एक कोट, ऐसौ को सुर्खी शख्स बतोर एहतिमाम किया गया जिस के मायने हैं, एदोम

34 तब या'क़ूब ने 'ऐसौ को रोटी और मसूर की दाल दी; वह खा
— पीकर उठा और चला गया। यूँ 'ऐसौ ने अपने पहलौठे के हक़
की क़द्र न जाना।

# 26

*[illegible]*

1 और उस मुल्क में उस पहले काल के 'अलावा जो अब्रहाम
के दिनों में पड़ा था, फिर काल पड़ा। तब इस्हाक़ ज़िरार को
फ़िलिस्तियों के बादशाह अबीमलिक के पास गया।
2 और ख़ुदावन्द ने उस पर ज़ाहिर हो कर कहा कि मिस्र को न
जा; बल्कि जो मुल्क मैं तुझे बताऊँ उसमें रह।
3 तू इसी मुल्क में क़याम रख और मैं तेरे साथ रहूँगा और तुझे
बरकत बख़्शुंगा क्यूँकि मै तुझे और तेरी नसल को यह सब मुल्क
दूँगा, और मैं उस क़सम को जो मैंने तेरे बाप अब्रहाम से खाई पूरा
करूँगा।
4 और मैं तेरी औलाद को बढ़ा कर आसमान के तारों की तरह
कर दूँगा, और यह सब मुल्क तेरी नसल को दूँगा, और ज़मीन की
सब कौमें तेरी नसल के वसीले से बरकत पाएँगी।
5 इसलिए कि अब्रहाम ने मेरी बात मानी, और मेरी नसीहत
और मेरे हुक्मों और कवानीन — ओ — आईन पर 'अमल किया।
6 फिर इस्हाक़ ज़िरार में रहने लगा;
7 और वहाँ के बाशिन्दों ने उससे उसकी बीवी के बारे में पूछा।
उसने कहा, वह मेरी बहन है, क्यूँकि वह उसे अपनी बीवी बताते
डरा, यह सोच कर कि कहीं रिबक़ा की वजह से वहाँ के लोग उसे
क़त्ल न कर डालें, क्यूँकि वह ख़ूबसूरत थी।
8 जब उसे वहाँ रहते बहुत दिन हो गए तो, फ़िलिस्तियों के
बादशाह अबीमलिक ने खिड़की में से झाँक कर नज़र की और
देखा कि इस्हाक़ अपनी बीवी रिब्क़ा से हँसी खेल कर रहा है।

9 तब अबीमलिक ने इस्हाक़ को बुला कर कहा, "वह तो
हक़ीक़त में तेरी बीवी है; फिर तूने क्यूँ कर उसे अपनी बहन
बताया?" इस्हाक़ ने उससे कहा, "इसलिए कि मुझे ख़्याल हुआ
कि कहीं मैं उसकी वजह से मारा न जाऊँ।"
10 अबीमलिक ने कहा, "तूने हम से क्या किया? यूँ तो आसानी
से इन लोगों में से कोई तेरी बीवी के साथ मुबाश्रत कर लेता, और
तू हम पर इल्ज़ाम लाता।"
11 तब अबीमलिक ने सब लोगों को यह हुक्म किया कि जो
कोई इस आदमी को या इसकी बीवी को छुएगा वह मार डाला
जाएगा।

### *[illegible]*

12 और इस्हाक़ ने उस मुल्क में खेती की और उसी साल उसे
सौ गुना फल मिला; और ख़ुदावन्द ने उसे बरकत बख़्शी।
13 और वह बढ़ गया और उसकी तरक़्क़ी होती गई, यहाँ तक
कि वह बहुत बड़ा आदमी हो गया।
14 और उसके पास भेड़ बकरियाँ और गाय बैल और बहुत से
नौकर चाकर थे, और फ़िलिस्तियों को उस पर रश्क आने लगा।
15 और उन्होंने सब कुएँ जो उसके बाप के नौकरों ने उसके बाप
अब्रहाम के वक़्त में खोदे थे, बन्द कर दिए और उनको मिट्टी से
भर दिया।
16 और अबीमलिक ने इस्हाक़ से कहा कि तू हमारे पास से चला
जा, क्यूँकि तू हम से ज़्यादा ताक़तवर हो गया है।
17 तब इस्हाक़ ने वहाँ से जिरार की वादी में जाकर अपना डेरा
लगाया और वहाँ रहने लगा।
18 और इस्हाक़ ने पानी के उन कुओं को जो उसके बाप अब्रहाम
के दिनों में खोदे गए थे फिर खुदवाया, क्यूँकि फ़िलिस्तियों ने
अब्रहाम के मरने के बाद उनको बन्द कर दिया था, और उसने
उनके फिर वही नाम रक्खे जो उसके बाप ने रक्खे थे।

19 और इस्हाक़ के नौकरों को वादी में खोदते — खोदते बहते
पानी का एक सोता मिल गया।
20 तब जिरार के चरवाहों ने इस्हाक़ के चरवाहों से झगड़ा किया
और कहने लगे कि यह पानी हमारा है। और उसने उस कुएँ का
नाम [*]'इस्क़ रख्खा, क्यूँकि उन्होंने उससे झगड़ा किया।
21 और उन्होंने दूसरा कुआँ खोदा, और उसके लिए भी वह
झगड़ने लगे; और उसने उसका नाम [†]सितना रख्खा।
22 इसलिए वह वहाँ से दूसरी जगह चला गया और एक और
कुआँ खोदा, जिसके लिए उन्होंने झगड़ा न किया और उसने
उसका नाम [‡]रहोबूत रख्खा और कहा किअब ख़ुदावन्द ने हमारे
लिए जगह निकाली और हम इस मुल्क में कामयाब होंगे।
23 वहाँ से वह बैरसबा' को गया।
24 और ख़ुदावन्द उसी रात उस पर ज़ाहिर हुआ और कहा कि
मैं तेरे बाप अब्रहाम का ख़ुदा हूँ! मत डर, क्यूँकि मैं तेरे साथ हूँ
और तुझे बरकत दूँगा, और अपने बन्दे अब्रहाम की ख़ातिर तेरी
नसल बढ़ाऊँगा।
25 और उसने वहाँ मज़बह बनाया और ख़ुदावन्द से दुआ की,
और अपना डेरा वहीं लगा लिया; और वहाँ इस्हाक़ के नौकरों ने
एक कुआँ खोदा।

### [illegible]

26 तब अबीमलिक अपने दोस्त अख़ूज़त और अपने
सिपहसालार फ़ीकुल को साथ ले कर, जिरार से उसके पास गया।
27 इस्हाक़ ने उनसे कहा कि तुम मेरे पास क्यूँ कर आए, हालाँकि
मुझ से कीना रखते हो और मुझ को अपने पास से निकाल दिया।

[*] **26:20** झगड़ा या बहस [†] **26:21** 1: सितनाके मायने हैं, मुख़ालफ़त या इलज़ाम लगाना, या दुश्मनी [‡] **26:22** बड़ी जगह

28 उन्होंने कहा, "हम ने ख़ूब सफ़ाई से देखा कि ख़ुदावन्द तेरे
साथ है, तब हम ने कहा कि हमारे और तेरे बीच क़सम हो जाए
और हम तेरे साथ 'अहद करें,
29 कि जैसे हम ने तुझे छुआ तक नहीं, और अलावा नेकी के
तुझ से और कुछ नहीं किया और तुझ को सलामत रुख़्सत, किया
तू भी हम से कोई बदी न करेगा क्यूँकि तू अब ख़ुदावन्द की तरफ़
से मुबारक है।"
30 तब उसने उनके लिए दावत तैयार की और उन्होंने खाया
पिया।
31 और वह सुबह सवेरे उठे और आपस में क़सम खाई; और
इस्हाक़ ने उन्हें रुख़्सत किया और वह उसके पास से सलामत चले
गए।
32 उसी रोज़ इस्हाक़ के नौकरों ने आ कर उससे उस कुएँ का
ज़िक्र किया जिसे उन्होंने खोदा था और कहा कि हम को पानी
मिल गया।
33 तब उसने उसका नाम सबा' रख्खा: इसीलिए वह शहर आज
तक बैरसबा'§ कहलाता है।
34 जब 'ऐसौ चालीस साल का हुआ, तो उसने बैरी हित्ती की
बेटी यहूदिथ और ऐलोन हिती की बेटी बशामथ से ब्याह किया;
35 और वह इस्हाक़ और रिब्क़ा के लिए वबाल — ए — जान
हुई।

# 27

*▯▯▯▯▯▯ ▯▯ ▯▯▯▯▯▯ ▯▯ ▯▯▯▯▯▯▯ ▯▯▯▯▯▯▯*

1 जब इस्हाक़ ज़ईफ़ हो गया, और उसकी आँखें ऐसी धुन्धला
गईं कि उसे दिखाई न देता था तो उसने अपने बड़े बेटे 'ऐसौ को
बुलाया और कहा, ऐ मेरे बेटे! "उसने कहा, मैं हाज़िर हूँ।"

§ **26:33** क़सम का कुआँ

2 तब उसने कहा, देख! मैं तो ज़ईफ़ हो गया और मुझे अपनी
मौत का दिन मा'लूम नहीं।
3 इसलिए अब तू ज़रा अपना हथियार, अपना तरकश और
अपनी कमान लेकर जंगल को निकल जा और मेरे लिए शिकार
मार ला।
4 और मेरी हस्ब — ए पसन्द लज़ीज़ खाना मेरे लिए तैयार
करके मेरे आगे ले आ, ताकि मैं खाऊँ और अपने मरने से पहले
दिल से तुझे दुआ दूँ।
5 और जब इस्हाक़ अपने बेटे 'ऐसौ से बातें कर रहा था तो
रिब्क़ा सुन रही थी, और 'ऐसौ जंगल को निकल गया कि शिकार
मार कर लाए।
6 तब रिब्क़ा ने अपने बेटे या'क़ूब से कहा, कि देख, मैंने तेरे बाप
को तेरे भाई 'ऐसौ से यह कहते सुना कि।
7 'मेरे लिए शिकार मार कर लज़ीज़ खाना मेरे लिए तैयार कर
ताकि मैं खाऊँ और अपने मरने से पहले ख़ुदावन्द के आगे तुझे
दुआ दूँ।
8 इसलिए ऐ मेरे बेटे, इस हुक़्म के मुताबिक़ जो मैं तुझे देती
हूँ मेरी बात को मान।
9 और जाकर रेवड़ में से बकरी के दो अच्छे — अच्छे बच्चे
मुझे ला दे, और मैं उनको लेकर तेरे बाप के लिए उसकी हस्ब —
ए — पसन्द लज़ीज़ खाना तैयार कर दूँगी।
10 और तू उसे अपने बाप के आगे ले जाना, ताकि वह खाए
और अपने मरने से पहले तुझे दुआ दे।
11 तब या'क़ूब ने अपनी माँ रिब्क़ा से कहा, “देख, मेरे भाई
'ऐसौ के जिस्म पर बाल हैं और मेरा जिस्म साफ़ है।
12 शायद मेरा बाप मुझे टटोले, तो मैं उसकी नज़र में दग़ाबाज़
ठहरूंगा; और बरकत नहीं बल्कि ला'नत कमाऊँगा।”
13 उसकी माँ ने उसे कहा, “ऐ मेरे बेटे! तेरी ला'नत मुझ पर
आए; तू सिर्फ़ मेरी बात मान और जाकर वह बच्चे मुझे ला दे।”

14 तब वह गया और उनको लाकर अपनी माँ को दिया, और
उसकी माँ ने उसके बाप की हस्ब — ए — पसन्द लज़ीज़ खाना
तैयार किया।
15 और रिब्क़ा ने अपने बड़े बेटे 'ऐसौ के नफ़ीस लिबास, जो
उसके पास घर में थे लेकर उनकी अपने छोटे बेटे या'क़ूब को
पहनाया।
16 और बकरी के बच्चों की खालें उसके हाथो और उसकी गर्दन
पर जहाँ बाल न थे लपेट दीं।
17 और वह लज़ीज़ खाना और रोटी जो उसने तैयार की थी,
अपने बेटे या'क़ूब के हाथ में दे दी।
18 तब उसने बाप के पास आ कर कहा, ऐ मेरे बाप! "उसने
कहा, मैं हाज़िर हूँ, तू कौन है मेरे बेटे?"
19 या'क़ूब ने अपने बाप से कहा, "मैं तेरा पहलौठा बेटा 'ऐसौ
हूँ। मैंने तेरे कहने के मुताबिक़ किया है; इसलिए ज़रा उठ और
बैठ कर मेरे शिकार का गोश्त खा, ताकि तू दिल से मुझे दुआ दे।"
20 तब इस्हाक़ ने अपने बेटे से कहा, "बेटा! तुझे यह इस क़दर
जल्द कैसे मिल गया?" उसने कहा, "इसलिए कि ख़ुदावन्द तेरे
ख़ुदा ने मेरा काम बना दिया।"
21 तब इस्हाक़ ने या'क़ूब से कहा, "ऐ मेरे बेटे, ज़रा नज़दीक
आ कि मैं तुझे टटोलूँ कि तू मेरा ही बेटा 'ऐसौ है या नहीं।"
22 और या'क़ूब अपने बाप इस्हाक़ के नज़दीक गया; और उसने
उसे टटोलकर कहा, "आवाज़ तो या'क़ूब की है लेकिन हाथ 'ऐसौ
के हैं।"
23 और उसने उसे न पहचाना, इसलिए कि उसके हाथों पर
उसके भाई 'ऐसौ के हाथों की तरह बाल थे; इसलिए उसने उसे
दुआ दी।
24 और उसने पूछा कि क्या तू मेरा बेटा "ऐसौ ही है?" उसने
कहा, "मैं वही हूँ।"

25 तब उसने कहा, “खाना मेरे आगे ले आ, और मैं अपने बेटे
के शिकार का गोश्त खाऊँगा, ताकि दिल से तुझे दुआ दूँ।” तब
वह उसे उसके नज़दीक ले आया, और उसने खाया; और वह उसके
लिए मय लाया और उसने पी।
26 फिर उसके बाप इस्हाक़ ने उससे कहा, “ऐ मेरे बेटे! अब
पास आकर मुझे चूम।”
27 उसने पास जाकर उसे चूमा। तब उसने उसके लिबास की
ख़शबू पाई और उसे दुआ दे कर कहा, “देखो! मेरे बेटे की महक
उस खेत की महक की तरह है जिसे ख़ुदावन्द ने बरकत दी हो।
28 ख़ुदा आसमान की ओस और ज़मीन की फ़र्बही, और बहुत
सा अनाज और मय तुझे बख़्शे।
29 कौमें तेरी खिदमत करें, और क़बीले तेरे सामने झुकें। तू
अपने भाइयों का सरदार हो, और तेरी माँ के बेटे तेरे आगे झुकें,
जो तुझ पर ला'नत करे वह खुद ला'नती हो, और जो तुझे दुआ
दे वह बरकत पाए।”
30 जब इस्हाक़ या'क़ूब को दुआ दे चुका, और या'क़ूब अपने
बाप इस्हाक़ के पास से निकला ही था कि उसका भाई 'ऐसौ अपने
शिकार से लौटा।
31 वह भी लज़ीज़ खाना पका कर अपने बाप के पास लाया,
और उसने अपने बाप से कहा, मेरा बाप उठ कर अपने बेटे के
शिकार का गोश्त खाए, ताकि दिल से मुझे दुआ दे।
32 उसके बाप इस्हाक़ ने उससे पूछा कि तू कौन है? उसने कहा,
मैं तेरा पहलौठा बेटा “ऐसौ हूँ।”
33 तब तो इस्हाक़ शिद्दत से काँपने लगा और उसने कहा, “फिर
वह कौन था जो शिकार मार कर मेरे पास ले आया, और मैंने तेरे
आने से पहले सबमें से थोड़ा — थोड़ा खाया और उसे दुआ दी?
और मुबारक भी वही होगा।”
34 ऐसौ अपने बाप की बातें सुनते ही बड़ी बुलन्दी और

हसरतनाक आवाज़ से चिल्ला उठा, और अपने बाप से कहा, “मुझ
को भी दुआ दे, ऐ मेरे बाप! मुझ को भी।”
35 उसने कहा, “तेरा भाई दग़ा से आया, और तेरी बरकत ले
गया।”
36 तब उसने कहा, “क्या उसका नाम या'*क़ूब ठीक नहीं रख्खा
गया? क्यूँकि उसने दोबारा मुझे धोखा दिया। उसने मेरा पहलौठे
का हक़ तो ले ही लिया था, और देख, अब वह मेरी बरकत भी ले
गया।” फिर उसने कहा, “क्या तूने मेरे लिए कोई बरकत नहीं रख
छोड़ी है?”
37 इस्हाक़ ने 'ऐसौ को जवाब दिया, कि देख, मैंने उसे तेरा
सरदार ठहराया, और उसके सब भाइयों को उसके सुपर्द किया कि
ख़ादिम हों, और अनाज और मय उसकी परवरिश के लिए बताई।
अब ऐ मेरे बेटे, तेरे लिए मैं क्या करूँ?
38 तब 'ऐसौ ने अपने बाप से कहा, “क्या तेरे पास एक ही
बरकत है, ऐ मेरे बाप? मुझे भी दुआ दे, ऐ मेरे बाप, मुझे भी।”
और 'ऐसौ ज़ोर — ज़ोर से रोया।
39 तब उसके बाप इस्हाक़ ने उससे कहा, “देख ज़रख्खेज़ ज़मीन
में तेरा घर हो, और ऊपर से आसमान की शबनम उस पर पड़े।
40 तेरी औकात — बसरी तेरी तलवार से हो, और तू अपने भाई
की ख़िदमत करे, और जब तू आज़ाद हो; तो अपने भाई का जुआ
अपनी गर्दन पर से उतार फेंके।”

### [illegible]

41 और 'ऐसौ ने या'क़ूब से, उस बरकत की वजह से जो उसके
बाप ने उसे बख्शी, कीना रख्खा; और 'ऐसौ ने अपने दिल में कहा,
कि “मेरे बाप के मातम के दिन नज़दीक हैं, फिर मैं अपने भाई
या'क़ूब को मार डालूँगा।”

* **27:36** 1: नाम याक़ूब “एड़ी” के लफ्ज़ से जुड़ा हुआ है, यहाँ इस लफ्ज़ के मायने हैं, फरेब देना या धोका देना

42 और रिब्क़ा को उसके बड़े बेटे 'ऐसौ की यह बातें बताई गई;
तब उसने अपने छोटे बेटे या'क़ूब को बुलवा कर उससे कहा, “देख,
तेरा भाई 'ऐसौ तुझे मार डालने पर है, और यही सोच — सोचकर
अपने को तसल्ली दे रहा है।
43 इसलिए ऐ मेरे बेटे, तू मेरी बात मान, और उठकर हारान
को मेरे भाई लाबन के पास भाग जा;
44 और थोड़े दिन उसके साथ रह, जब तक तेरे भाई की
नाराज़गी उतर न जाए।
45 या'नी जब तक तेरे भाई का क़हर तेरी तरफ़ से ठंडा न हो,
और वह उस बात को जो तूने उससे की है भूल न जाए; तब मैं
तुझे वहाँ से बुलवा भेजूँगी। मैं एक ही दिन में तुम दोनों को क्यूँ
खो बैठूँ?”
46 और रिब्क़ा ने इस्हाक़ से कहा, 'मैं हिती लड़कियों की
वजह से अपनी ज़िन्दगी से तंग हूँ, इसलिए अगर या'क़ूब हिती
लड़कियों में से, जैसी इस मुल्क की लड़कियाँ हैं, किसी से ब्याह
कर ले तो मेरी ज़िन्दगी में क्या लुत्फ़ रहेगा?'

# 28

1 तब इस्हाक़ ने या'क़ूब को बुलाया और उसे दुआ दी और उसे
ताकीद की, कि तू कना'नी लड़कियों में से किसी से ब्याह न करना।
2 तू उठ कर फ़द्दान अराम को अपने नाना बैतूएल के घर जा,
और वहाँ से अपने मामूं लाबन की बेटियों में से एक को ब्याह ला।
3 और क़ादिर — ए — मुतलक़ ख़ुदा तुझे बरकत बख़्शे और
तुझे क़ामयाब करे और बढ़ाए, कि तुझ से क़ौमों के क़बीले पैदा
हों।
4 और वह अब्रहाम की बरकत तुझे और तेरे साथ तेरी नसल
को दे, कि तेरी मुसाफ़िरत की यह सरज़मीन जो ख़ुदा ने अब्रहाम
को दी तेरी मीरास हो जाए।

5 तब इस्हाक़ ने या'क़ूब को रुख़्सत किया और वह फ़द्दान अराम
में लाबन के पास, जो अरामी बैतूएल का बेटा और या'क़ूब और
'ऐसौ की माँ रिब्क़ा का भाई था गया।
6 फिर जब 'ऐसौ ने देखा कि इस्हाक़ ने या'क़ूब को दुआ देकर
उसे फ़द्दान अराम भेजा है, ताकि वह वहाँ से बीवी ब्याह कर
लाए; और उसे दुआ देते वक़्त यह ताकीद भी की है कि तू कना'नी
लड़कियों में से किसी से ब्याह न करना।
7 और या'क़ूब अपने माँ बाप की बात मान कर फ़द्दान अराम
को चला गया।
8 और 'ऐसौ ने यह भी देखा कि कना'नी लड़कियाँ उसके बाप
इस्हाक़ को बुरी लगती हैं,
9 तो 'ऐसौ इस्मा'ईल के पास गया और महलत को, जो
इस्मा'ईल — बिन — अब्रहाम की बेटी और नबायोत की बहन
थी, ब्याह कर उसे अपनी और बीवियों में शामिल किया।

### [illegible]

10 और या'क़ूब बैर — सबा' से निकल कर हारान की तरफ़
चला।
11 और एक जगह पहुँच कर सारी रात वहीं रहा क्यूँकि सूरज
डूब गया था, और उसने उस जगह के पत्थरों में से एक उठा कर
अपने सरहाने रख लिया और उसी जगह सोने को लेट गया।
12 और ख़्वाब में क्या देखता है कि एक सीढ़ी ज़मीन पर खड़ी
है, और उसका सिरा आसमान तक पहुँचा हुआ है। और ख़ुदा के
फ़रिश्ता उस पर से चढ़ते उतरते हैं।
13 और ख़ुदावन्द *उसके ऊपर खड़ा कह रहा है, कि मैं
ख़ुदावन्द, तेरे बाप अब्रहाम का ख़ुदा और इस्हाक़ का ख़ुदा हूँ।
मैं यह ज़मीन जिस पर तू लेटा है तुझे और तेरी नसल को दूँगा।

* **28:13** उस के नज़दीक खड़ा हुआ

14 और तेरी नसल ज़मीन की गर्द के ज़रों की तरह होगी और तू
मशरिक़ और मग़रिब और शिमाल और दख्खिनमें फैल जाएगा,
और ज़मीन के सब क़बीले तेरे और तेरी नसल के वसीले से बरकत
पाएंगे।
15 और देख, मैं तेरे साथ हूँ और हर जगह जहाँ कहीं तू जाए
तेरी हिफ़ाज़त करूँगा और तुझ को इस मुल्क में फिर लाऊँगा,
और जो मैंने तुझ से कहा है जब तक उसे पूरा न कर लें तुझे नहीं
छोड़ुंगा।
16 तब या'क़ूब जाग उठा और कहने लगा, कि यक़ीनन
ख़ुदावन्द इस जगह है और मुझे मा'लूम न था।
17 और उसने डर कर कहा, "यह कैसी ख़ौफ़नाक जगह है! तो
यह ख़ुदा के घर और आसमान के आसताने के अलावा और कुछ
न होगा।"
18 और या'क़ूब सुब्ह — सवेरे उठा, और उस पत्थर की जिसे
उसने अपने सरहाने रख्खा था लेकर सुतून की तरह खड़ा किया
और उसके सिरे पर तेल डाला।
19 और उस जगह का नाम †बैतएल रख्खा, लेकिन पहले उस
बस्ती का नाम लूज़ था।
20 और या'क़ूब ने मन्नत मानी और कहा कि अगर ख़ुदा मेरे
साथ रहे, और जो सफ़र मैं कर रहा हूँ उसमें मेरी हिफ़ाज़त करे,
और मुझे खाने को रोटी और पहनने की कपड़ा देता रहे,
21 और मैं अपने बाप के घर सलामत लौट आऊँ; तो ख़ुदावन्द
मेरा ख़ुदा होगा।
22 और यह पत्थर जो मैंने सुतून सा खड़ा किया है, ख़ुदा का
घर होगा; और जो कुछ तू मुझे दे उसका दसवाँ हिस्सा ज़रूर ही
तुझे दिया करूँगा।

---

† **28:19** ख़ुदा का घर

# 29

### [illegible]

1 और या'क़ूब आगे चल कर मशरिक़ी लोगों के मुल्क में पहुँचा।
2 और उसने देखा कि मैदान में एक कुआँ है और कुएँ के नज़दीक
भेड़ बकरियों के तीन रेवड़ बैठे हैं; क्यूँकि चरवाहे इसी कुएँ से
रेवड़ों को पानी पिलाते थे और कुएँ के मुँह पर एक बड़ा पत्थर
रख्खा रहता था।
3 और जब सब रेवड़ वहाँ इकट्ठे होते थे, तब वह उस पत्थर
को कुएँ के मुँह पर से ढलकाते और भेड़ों को पानी पिला कर उस
पत्थर को फिर उसी जगह कुएँ के मुँह पर रख देते थे।
4 तब या'क़ूब ने उनसे कहा, "ऐ मेरे भाइयों, तुम कहाँ के हो?"
उन्होंने कहा, "हम हारान के हैं।"
5 फिर उसने पूछा कि तुम नहूर के बेटे लाबन से वाकिफ़ हो?
उन्होंने कहा, हम वाकिफ़ हैं।
6 उसने पूछा, "क्या वह ख़ैरियत से है?" उन्होंने कहा, "ख़ैरियत
से है, और वह देख, उसकी बेटी राख़िल भेड़ बकरियों के साथ चली
आती है।"
7 और उसने कहा, देखो, अभी तो दिन बहुत है, और चौपायों
के जमा' होने का वक़्त नहीं। तुम भेड़ बकरियों को पानी पिला कर
फिर चराने को ले जाओ।
8 उन्होंने कहा, "हम ऐसा नहीं कर सकते, जब तक कि सब
रेवड़ जमा' न हो जाएँ। तब हम उस पत्थर को कुएँ के मुँह पर से
ढलकाते हैं, और भेड़ बकरियों को पानी पिलाते हैं।"
9 वह उनसे बातें कर ही रहा था कि राख़िल अपने बाप की भेड़
बकरियों के साथ आई, क्यूँकि वह उनको चराया करती थी।
10 जब या'क़ूब ने अपने मामूँ लाबन की बेटी राख़िल को और
अपने मामूँ लाबन के रेवड़ को देखा, तो वह नज़दीक गया और

पत्थर को कुएँ के मुँह पर से ढलका कर अपने मामूँ लाबन के रेवड़
को पानी पिलाया।
11 और या'क़ूब ने राख़िल को चूमा और ज़ोर ज़ोर से रोया।
12 और या'क़ूब ने राख़िल से कहा, कि मैं तेरे बाप का रिश्तेदार
और रिब्क़ा का बेटा हूँ। तब उसने दौड़ कर अपने बाप को ख़बर
दी।
13 लाबन अपने भांजे की ख़बर पाते ही उससे मिलने को दौड़ा,
और उसको गले लगाया और चूमा और उसे अपने घर लाया; तब
उसने लाबन को अपना सारा हाल बताया।
14 लाबन ने उसे कहा, "तू वाक़'ई मेरी हड्डी और मेरा गोश्त
है।" फिर वह एक महीना उसके साथ रहा।

### [illegible]

15 तब लाबन ने या'क़ूब से कहा, "चूँकि तू मेरा रिश्तेदार है, तो
क्या इसलिए लाज़िम है कि तू मेरी ख़िदमत मुफ़्त करे? इसलिए
मुझे बता कि तेरी मजदुरी क्या होगी?"
16 और लाबन की दो बेटियाँ थीं, बड़ी का नाम लियाह और
छोटी का नाम राख़िल था।
17 लियाह की आखें *भूरी थीं लेकिन राख़िल हसीन और
ख़ूबसूरत थी।
18 और या'क़ूब राख़िल पर फ़िदा था, तब उसने कहा, "तेरी
छोटी बेटी राख़िल की ख़ातिर मैं सात साल तेरी खिदमत
करूँगा।"
19 लाबन ने कहा, "उसे ग़ैर आदमी को देने की जगह तुझी को
देना बेहतर है, तू मेरे पास रह।"
20 चुनाँचे या'क़ूब सात साल तक राख़िल की ख़ातिर ख़िदमत
करता रहा लेकिन वह उसे राख़िल की मुहब्बत की वजह से चन्द
दिनों के बराबर मा'लूम हुए।

* **29:17** कमज़ोर या मुलायम आँखें

21 या'क़ूब ने लाबन से कहा कि मेरी मुद्दत पूरी हो गई, इसलिए
मेरी बीवी मुझे दे ताकि मैं उसके पास जाऊँ।
22 तब लाबन ने उस जगह के सब लोगों को बुला कर जमा'
किया और उनकी दावत की।
23 और जब शाम हो गई तो अपनी बेटी लियाह को उसके पास
ले आया, और या'क़ूब उससे हम आग़ोश हुआ।
24 और लाबन ने अपनी लौंडी ज़िल्फ़ा अपनी बेटी लियाह के
साथ कर दी कि उसकी लौंडी हो।
25 जब सुबह को मा'लूम हुआ कि यह तो लियाह है, तब उसने
लाबन से कहा, कि तूने मुझ से ये क्या किया? क्या मैंने जो तेरी
ख़िदमत की, वह राख़िल की ख़ातिर न थी? फिर तूने क्यूँ मुझे
धोका दिया?
26 लाबन ने कहा कि हमारे मुल्क में ये दस्तूर नहीं के पहलौठी
से पहले छोटी को ब्याह दें।
27 तू इसका हफ़्ता पूरा कर दे, फिर हम दूसरी भी तुझे दे देंगे;
जिसकी ख़ातिर तुझे सात साल और मेरी ख़िदमत करनी होगी।
28 या'क़ूब ने ऐसा ही किया, कि लियाह का हफ़्ता पूरा किया;
तब लाबन ने अपनी बेटी राख़िल भी उसे ब्याह दी।
29 और अपनी लौंडी बिल्हाह अपनी बेटी राख़िल के साथ कर
दी कि उसकी लौंडी हो।
30 इसलिए वह राख़िल से भी हम आग़ोश हुआ, और वह
लियाह से ज़्यादा राख़िल को चाहता था; और सात साल और
साथ रह कर लाबन की ख़िदमत की।

### *??'????? ?? ????? ?? ??????????*

31 और जब ख़ुदावन्द ने देखा कि लियाह से नफ़रत की गई,
तो उसने उसका रिहम खोला, मगर राख़िल बाँझ रही।
32 और लियाह हामिला हुई और उसके बेटा हुआ, और उसने
उसका नाम रूबिन रख्खा क्यूँकि उसने कहा कि ख़ुदावन्द ने मेरा
दुख देख लिया, इसलिए मेरा शौहर अब मुझे प्यार करेगा।

33 वह फिर हामिला हुई और उसके बेटा हुआ तब उसने कहा
कि ख़ुदावन्द ने सुना कि मुझ से नफ़रत की गई, इसलिए उसने
मुझे यह भी बख़्शा। तब उसने उसका नाम शमौन रख्खा।
34 और वह फिर हामिला हुई और उसके बेटा हुआ तब उसने
कहा, "अब इस बार मेरे शौहर को मुझ से लगन होगी, क्यूँकि
उससे मेरे तीन बेटे हुए।" इसलिए उसका नाम लावी रख्खा गया।
35 और वह फिर हामिला हुई और उसके बेटा हुआ तब उसने
कहा कि अब मैं ख़ुदावन्द की हम्द करूँगी। इसलिए उसका नाम
यहूदाह रख्खा। फिर उसके औलाद होने में देरी हुई।

# 30

1 और जब राख़िल ने देखा कि या'क़ूब से उसके औलाद नहीं
होती तो राख़िल को अपनी बहन पर रश्क आया, तब वह या'क़ूब
से कहने लगी, "मुझे भी औलाद दे नहीं तो मैं मर जाऊँगी।"
2 तब या'क़ूब का क़हर राख़िल पर भड़का और उस ने कहा,
"क्या मैं ख़ुदा की जगह हूँ जिसने तुझ को औलाद से महरूम रख्खा
है?"
3 उसने कहा, "देख, मेरी लौंडी बिल्हाह हाज़िर है, उसके पास
जा ताकि मेरे लिए उससे औलाद हो और वह औलाद मेरी ठहरे।"
4 और उसने अपनी लौंडी बिल्हाह को उसे दिया के उसकी बीवी
बने, और या'क़ूब उसके पास गया।
5 और बिल्हाह हामिला हुई, और या'क़ूब से उसके बेटा हुआ।
6 तब राख़िल ने कहा कि ख़ुदा ने मेरा इन्साफ़ किया और मेरी
फ़रियाद भी सुनी और मुझ को बेटा बख़्शा। इसलिए उसने उसका
नाम दान रख्खा।
7 और राख़िल की लौंडी बिल्हाह फिर हामिला हुई और या'क़ूब
से उसके दूसरा बेटा हुआ।

8 तब राख़िल ने कहा, “मैं अपनी बहन के साथ निहायत ज़ोर
मार — मारकर कुश्ती लड़ी और मैंने फ़तह पाई।” इसलिए उसने
उसका नाम नफ़्ताली रख्खा।
9 जब लियाह ने देखा कि वह जनने से रह गई तो उसने अपनी
लौंडी ज़िलफ़ा को लेकर या'क़ूब को दिया कि उसकी बीवी बने।
10 और लियाह की लौंडी ज़िलफ़ा के भी या'क़ूब से एक बेटा
हुआ।
11 तब लियाह ने कहा, ज़हे — किस्मत! “तब उसने उसका
नाम जद्द रख्खा।
12 लियाह की लौंडी ज़िलफ़ा के या'क़ूब से फिर एक बेटा हुआ।
13 तब लियाह ने कहा, मैं ख़ुश क़िस्मत हूँ: 'औरतें मुझे खुश
क़िस्मत कहेंगी।” और उसने उसका नाम आशर रख्खा।
14 और रूबिन गेहूँ काटने के मौसम में घर से निकला और उसे
खेत में *मदुम गियाह मिल गए, और वह अपनी माँ लियाह के
पास ले आया। तब राख़िल ने लियाह से कहा किअपने बेटे के
मदुम गियाह में से मुझे भी कुछ दे दे।
15 उसने कहा, “क्या ये छोटी बात है कि तूने मेरे शौहर को ले
लिया, और अब क्या मेरे बेटे के मदुम गियाह भी लेना चाहती
है?” राख़िल ने कहा, “बस तो आज रात वह तेरे बेटे के मदुम
गियाह की ख़ातिर तेरे साथ सोएगा।”
16 जब या'क़ूब शाम को खेत से आ रहा था तो लियाह आगे
से उससे मिलने को गई और कहने लगी कि तुझे मेरे पास आना
होगा, क्यूँकि मैंने अपने बेटे के मदुम गियाह के बदले तुझे मज़दूरी
पर लिया है। वह उस रात उसी के साथ सोया।
17 और ख़ुदा ने लियाह की सुनी और वह हामिला हुई, और

* **30:14** 1 मन्द्राके एक इब्री लफ्ज़ का तर्जुमा हैयह एक पौधे का हवाला देता है जिस के पत्ते लम्बे, और उस के फूल पीले औरबैंजनी रंग के होते हैं, इसे मंद्राके कोको भी कहा जाता है जिस को खाने से जिंसी ख़ाहिश पैदा होती है और औरत को हामला होने में मदद करता है

या'क़ूब से उसके पाँचवाँ बेटा हुआ।
18 तब लियाह ने कहा कि ख़ुदा ने मेरी मज़दूरी मुझे दी क्यूँकि
मैंने अपने शौहर को अपनी लौंडी दी। और उसने उसका नाम
†इश्कार रक्खा।
19 और लियाह फिर हामिला हुई और या'क़ूब से उसके छटा
बेटा हुआ।
20 तब लियाह ने कहा कि ख़ुदा ने अच्छा महर मुझे बख़्शा;
अब मेरा शौहर मेरे साथ रहेगा क्यूँकि मेरे उससे छ: बेटे हो चुके
हैं। इसलिए उसने उसका नाम ‡ज़बूलून रक्खा।
21 इसके बाद उसके एक बेटी हुई और उसने उसका नाम दीना
रक्खा।
22 और ख़ुदा ने राख़िल को याद किया, और ख़ुदा ने उसकी सुन
कर उसके रहम को खोला।
23 और वह हामिला हुई और उसके बेटा हुआ, तब उसने कहा
कि ख़ुदा ने मुझ से रुस्वाई दूर की।
24 और उस ने उसका नाम यूसुफ़ यह कह कर रक्खा कि ख़ुदा
वन्द मुझ को एक और बेटा बख़्शे।

### *??'??? ?? ???'?? ??????*

25 और जब राख़िल से यूसुफ़ पैदा हुआ तो या'क़ूब ने लाबन
से कहा, "मुझे रुख़्सत कर कि मैं अपने घर और अपने वतन को
जाऊँ।
26 मेरी बीवियाँ और मेरे बाल बच्चे जिनकी ख़ातिर मैं ने तेरी
ख़िदमत की है मेरे हवाले कर और मुझे जाने दे, क्यूँकि तू ख़ुद
जानता है कि मैंने तेरी कैसी ख़िदमत की है।"
27 तब लाबन ने उसे कहा, "अगर मुझ पर तेरे करम की नज़र
है तो यहीं रह क्यूँकि मैं जान गया हूँ कि ख़ुदावन्द ने तेरी वजह
से मुझ को बरकत बख़्शी है।"

† 30:18 इनाम ‡ 30:20 इज़्ज़त

28 और यह भी कहा कि मुझ से तू अपनी मज़दूरी ठहरा ले,
और मैं तुझे दिया करूँगा।
29 उसने उसे कहा कि तू ख़ुद जानता है कि मैंने तेरी कैसी
ख़िदमत की और तेरे जानवर मेरे साथ कैसे रहे।
30 क्यूँकि मेरे आने से पहले यह थोड़े थे और अब बढ़ कर बहुत
से हो गए हैं, और ख़ुदावन्द ने जहाँ जहाँ मेरे क़दम पड़े तुझे बरकत
बख़्शी। अब मैं अपने घर का बन्दोबस्त कब करूँ?
31 उसने कहा, "तुझे मैं क्या दूँ?" या'क़ूब ने कहा, "तू मुझे कुछ
न देना, लेकिन अगर तू मेरे लिए एक काम कर दे तो मैं तेरी भेड़
— बकरियों को फिर चराऊँगा और उनकी निगहबानी करूँगा।
32 मैं आज तेरी सब भेड़ — बकरियों में चक्कर लगाऊँगा, और
जितनी भेड़ें चितली और और काली हों और जितनी बकरियाँ और
चितली हों उन सबको अलग एक तरफ़ कर दूँगा, इन्हीं को मैं
अपनी मज़दूरी ठहराता हूँ।
33 और आइन्दा जब कभी मेरी मज़दूरी का हिसाब तेरे सामने
ही तो मेरी सच्चाई आप मेरी तरफ़ से इस तरह बोल उठेगी, कि
जो बकरियाँ चितली और नहीं और जो भेड़े काली नहीं अगर वह
मेरे पास हों तो चुराई हुई समझी जाएँगी।"
34 लाबन ने कहा, "मैं राज़ी हूँ, जो तू कहे वही सही।"
35 और उसने उसी रोज़ धारीदार और बकरों की और सब
चितली और बकरियों को जिनमें कुछ सफ़ेदी थी, और तमाम
काली भेड़ों को अलग करके उनकी अपने बेटों के हवाले किया।
36 और उसने अपने और या'क़ूब के बीच तीन दिन के सफ़र का
फ़ासला ठहराया; और या'क़ूब लाबन के बाक़ी रेवड़ों को चराने
लगा।
37 और या'क़ूब ने सफ़ेदा और बादाम, और चिनार की हरी हरी
छड़ियाँ लीं उनको छील छीलकर इस तरह गन्डेदार बना लिया
के उन छड़ियों की सफ़ेदी दिखाई देने लगी।
38 और उसने वह गन्डेदार छड़ियाँ भेड़ — बकरियों के सामने

हौज़ों और नालियों में जहाँ वह पानी पीने आती थीं खड़ी कर दीं,
और जब वह पानी पीने आई तब गाभिन हो गई।
39 और उन छड़ियों के आगे गाभिन होने की वजह से उन्होने
धारीदार, चितले और बच्चे दिए।
40 और या'क़ूब ने भेड़ बकरियों के उन बच्चों को अलग किया,
और लाबन की भेड़ — बकरियों के मुँह धारीदार और काले बच्चों
की तरफ़ फेर दिए और उसने अपने रेवड़ों को जुदा किया, और
लाबन की भेड़ बकरियों में मिलने न दिया।
41 और जब मज़बूत भेड़ — बकरियाँ गाभिन होती थीं तो
या'क़ूब छड़ियों को नालियों में उनकी आँखों के सामने रख देता
था, ताकि वह उन छड़ियों के आगे गाभिन हों।
42 लेकिन जब भेड़ बकरियाँ दुबली होतीं तो वह उनको वहाँ
नहीं रखता था। इसलिए दुबली तो लाबन की रहीं और मज़बूत
या'क़ूब की हो गई।
43 चुनाँचे वह निहायत बढ़ता गया और उसके पास बहुत से
रेवड़ और लौंडिया और नौकर चाकर और ऊँट और गधे हो गये।

# 31

### *[illegible]*

1 और उसने लाबन के बेटों की यह बातें सुनीं, कि या'क़ूब ने
हमारे बाप का सब कुछ ले लिया और हमारे बाप के माल की
बदौलत उसकी यह सारी शान — ओ — शौकत है।
2 और या'क़ूब ने लाबन के चेहरे को देख कर ताड़ लिया कि
उसका रुख़ पहले से बदला हुआ है।
3 और ख़ुदावन्द ने या'क़ूब से कहा, कि तू अपने बाप दादा के
मुल्क को और अपने रिश्तेदारो के पास लौट जा, और मैं तेरे साथ
रहूँगा।
4 तब या'क़ूब ने राख़िल और लियाह को मैदान में जहाँ उसकी
भेड़ — बकरियाँ थीं बुलवाया

5 और उनसे कहा, मैं देखता हूँ कि तुम्हारे बाप का रुख़ पहले से
बदला हुआ है, लेकिन मेरे बाप का ख़ुदा मेरे साथ रहा।
6 तुम तो जानती हो कि मैंने अपनी ताक़त के मुताबिक़ तुम्हारे
बाप की ख़िदमत की है।
7 लेकिन तुम्हारे बाप ने मुझे धोका दे देकर दस बार मेरी
मज़दूरी बदली, लेकिन ख़ुदा ने उसको मुझे नुक़्सान पहुँचाने न
दिया।
8 जब उसने यह कहा कि चितले बच्चे तेरी मज़दूरी होंगे, तो
भेड़ बकरियाँ चितले बच्चे देने लगीं, और जब कहा कि धारीदार
बच्चे तेरे होंगे, तो भेड़ — बकरियों ने धारीदार बच्चे दिए।
9 यूँ ख़ुदा ने तुम्हारे बाप के जानवर लेकर मुझे दे दिए।
10 और जब भेड़ बकरियाँ गाभिन हुई, तो मैंने ख़्वाब में देखा
कि जो बकरे बकरियों पर चढ़ रहे हैं वो धारीदार, चितले और
चितकबरे हैं।
11 और ख़ुदा के फ़रिश्ते ने ख़्वाब में मुझ से कहा, 'ऐ या'क़ूब!'
मैंने कहा, 'मैं हाज़िर हूँ।
12 तब उसने कहा कि अब तू अपनी आँख उठा कर देख, कि सब
बकरे जो बकरियों पर चढ़ रहे हैं धारीदार चितले और चितकबरे
हैं, क्यूँकि जो कुछ लाबन तुझ से करता है मैंने देखा।
13 मैं बैतएल का ख़ुदा हूँ, जहाँ तूने सुतून पर तेल डाला और
मेरी मन्नत मानी, इसलिए अब उठ और इस मुल्क से निकल कर
अपने वतन को लौट जा'।
14 तब राख़िल और लियाह ने उसे जवाब दिया, “क्या, अब भी
हमारे बाप के घर में कुछ हमारा बख़रा या मीरास है?
15 क्या वह हम को अजनबी के बराबर नहीं समझता? क्यूँकि
उसने हम को भी बेच डाला और हमारे रुपये भी खा बैठा।
16 इसलिए अब जो दौलत ख़ुदा ने हमारे बाप से ली वह हमारी
और हमारे फ़र्ज़न्दों की है, फिर जो कुछ ख़ुदा ने तुझ से कहा है

वही कर।”
17 तब या'क़ूब ने उठ कर अपने बाल बच्चों और बीवियों को
ऊँटों पर बिठाया।
18 और अपने सब जानवरों और माल — ओ — अस्बाब को
जो उसने इकट्ठा किया था, या'नी वह जानवर जो उसे फ़द्दान —
अराम में मज़दूरी में मिले थे, लेकर चला ताकि मुल्क — ए —
कना'न में अपने बाप इस्हाक़ के पास जाए।
19 और लाबन अपनी भेड़ों की ऊन कतरने को गया हुआ था,
तब राख़िल अपने बाप के बुतों को चुरा ले गई।
20 और या'क़ूब लाबन अरामी के पास से चोरी से चला गया,
क्यूँकि उसे उसने अपने भागने की ख़बर न दी।
21 फिर वह अपना सब कुछ लेकर भागा और दरिया पार होकर
अपना रुख़ कोह — ए — जिल'आद की तरफ़ किया।

### *[illegible]*

22 और तीसरे दिन लाबन को ख़बर हुई कि या'क़ूब भाग गया।
23 तब उसने अपने भाइयों को हमराह लेकर सात मन्ज़िल तक
उसका पीछा किया, और जिल'आद के पहाड़ पर उसे जा पकड़ा।
24 और रात को ख़ुदा लाबन अरामी के पास ख़्वाब में आया
और उससे कहा कि ख़बरदार, तू या'क़ूब को बुरा या भला कुछ न
कहना।
25 और लाबन या'क़ूब के बराबर जा पहुँचा और या'क़ूब ने
अपना ख़ेमा पहाड़ पर खड़ा कर रक्खा था। इसलिए लाबन ने भी
अपने भाइयों के साथ जिल'आद के पहाड़ पर डेरा लगा लिया।
26 तब लाबन ने या'क़ूब से कहा, कि तूने यह क्या किया कि मेरे
पास से चोरी से चला आया, और मेरी बेटियों को भी इस तरह ले
आया गोया वह तलवार से क़ैद की गई हैं?
27 तू छिप कर क्यूँ भागा और मेरे पास से चोरी से क्यूँ चला
आया और मुझे कुछ कहा भी नहीं, वरना मैं तुझे ख़ुशी — ख़ुशी
तबले और बरबत के साथ गाते बजाते रवाना करता?

28 और मुझे अपने* बेटों और बेटियों को चूमने भी न दिया?
यह तूने बेहूदा काम किया।
29 मुझ में इतनी ताक़त है कि तुम को दुख दूँ, लेकिन तेरे बाप
के ख़ुदा ने कल रात मुझे यूँ कहा, कि ख़बरदार तू या'क़ूब को बुरा
या भला कुछ न कहना।
30 ख़ैर! अब तू चला आया तो चला आया क्यूँकि तू अपने बाप
के घर का बहुत ख़्वाहिश मन्द है, लेकिन मेरे देवताओं को क्यूँ
चुरा लाया?
31 तब या'क़ूब ने लाबन से कहा, "इसलिए कि मैं डरा, क्यूँकि
कि मैंने सोचा कि कहीं तू अपनी बेटियों को जबरन मुझ से छीन
न ले।
32 अब जिसके पास तुझे तेरे बुत मिलें वह ज़िन्दा नहीं बचेगा।
तेरा जो कुछ मेरे पास निकले उसे इन भाइयों के आगे पहचान कर
ले।" क्यूँकि या'क़ूब को मा'लूम न था कि राख़िल उन देवताओं को
चुरा लाई है।
33 चुनांचे लाबन या'क़ूब और लियाह और दोनों लौंडियों के
ख़ेमों में गया लेकिन उनको वहाँ न पाया, तब वह लियाह के ख़ेमा
से निकल कर राख़िल के ख़ेमे में दाख़िल हुआ।
34 और राख़िल उन बुतों को लेकर और उनकी ऊँट के कजावे
में रख कर उन पर बैठ गई थी, और लाबन ने सारे ख़में में टटोल
टटोल कर देख लिया पर उनको न पाया।
35 तब वह अपने बाप से कहने लगी, "ऐ मेरे आक़ा! तू इस
बात से नाराज़ न होना कि मैं तेरे आगे उठ नहीं सकती, क्यूँकि मैं
ऐसे हाल में हूँ जो 'औरतों का हुआ करता है।" तब उसने ढूंडा पर
वह बुत उसको न मिले।
36 तब या'क़ूब ने गुस्सा होकर लाबन को मलामत की और
या'क़ूब लाबन से कहने लगा कि मेरा क्या जुर्म और क्या क़ुसूर है

* **31:28** नाती पोते और मेरी बेटियां

कि तूने ऐसी तेज़ी से मेरा पीछा किया?
37 तूने जो मेरा सारा सामान टटोल — टटोल कर देख लिया
तो तुझे तेरे घर के सामान में से क्या चीज़ मिली? अगर कुछ है
तो उसे मेरे और अपने इन भाइयो के आगे रख, कि वह हम दोनों
के बीच इन्साफ़ करें।
38 मैं पूरे बीस साल तेरे साथ रहा; न तो कभी तेरी भेड़ों और
बकरियों का गाभ गिरा, और न तेरे रेवड़ के मेंढे मैंने खाए।
39 जिसे दरिन्दों ने फाड़ा मैं उसे तेरे पास न लाया, उसका
नुक़्सान मैंने सहा; जो दिन की या रात को चोरी गया उसे तूने
मुझ से तलब किया।
40 मेरा हाल यह रहा कि मैं दिन को गर्मी और रात को सर्दी में
मरा और मेरी आँखों से नींद दूर रहती थी।
41 मैं बीस साल तक तेरे घर में रहा, चौदह साल तक तो मैंने
तेरी दोनों बेटियों की ख़ातिर और छः साल तक तेरी भेड़ बकरियों
की ख़ातिर तेरी ख़िदमत की, और तूने दस बार मेरी मज़दूरी बदल
डाली।
42 अगर मेरे बाप का ख़ुदा अब्रहाम का मा'बूद जिसका रौब
इस्हाक़ मानता था, मेरी तरफ़ न होता तो ज़रूर ही तू अब मुझे
ख़ाली हाथ जाने देता। ख़ुदा ने मेरी मुसीबत और मेरे हाथों की
मेहनत देखी है और कल रात तुझे डाँटा भी।

### [illegible]

43 तब लाबन ने या'क़ूब को जवाब दिया, यह बेटियाँ भी मेरी
और यह लड़के भी मेरे और यह भेड़ बकरियाँ भी मेरी हैं, बल्कि
जो कुछ तुझे दिखाई देता है वह सब मेरा ही है। इसलिए मैं आज
के दिन अपनी ही बेटियों से या उनके लड़कों से जो उनके हुए क्या
कर सकता हूँ?
44 फिर अब आ, कि मैं और तू दोनों मिल कर आपस में एक
'अहद बाँधे और वही मेरे और तेरे बीच गवाह रहे।

45 तब या'क़ूब ने एक पत्थर लेकर उसे सुतून की तरह खड़ा
किया।
46 और या'क़ूब ने अपने भाइयों से कहा, पत्थर जमा' करो!
“उन्होंने पत्थर जमा' करके ढेर लगाया और वहीं उस ढेर के पास
उन्होंने खाना खाया।
47 और लाबन ने उसका नाम यज्र †शाहदूथा और या'क़ूब ने
जिल'आद रख्खा।
48 और लाबन ने कहा कि यह ढेर आज के दिन मेरे और तेरे
बीच गवाह हो। इसी लिए उसका नाम जिल'आद रख्खा गया।
49 और‡ मिस्फ़ाह भी क्यूँकि लाबन ने कहा कि जब हम एक
दूसरे से गैर हाज़िर हों तो ख़ुदावन्द मेरे और तेरे बीच निगरानी
करता रहे।
50 अगर तू मेरी बेटियों को दुख दे और उनके अलावा और
बीवियाँ करे तो कोई आदमी हमारे साथ नहीं है लेकिन देख ख़ुदा
मेरे और तेरे बीच में गवाह है।
51 लाबन ने या'क़ूब से यह भी कहा कि इस ढेर को देख और
उस सुतून को देख जो मैंने अपने और तेरे बीच में खड़ा किया है।
52 यह ढेर गवाह हो और ये सुतून गवाह हो, नुक़सान पहुँचाने
के लिए न तो मैं इस ढेर से उधर तेरी तरफ़ हद से बढ़ूँ और न तू
इस ढेर और सुतून से इधर मेरी तरफ़ हद से बढ़े।
53 अब्रहाम का ख़ुदा और नहूर का ख़ुदा और उनके बाप का
ख़ुदा हमारे बीच में इन्साफ़ करे।” और या'क़ूब ने उस ज़ात की
क़सम खाई जिसका रौ'ब उसका बाप इस्हाक़ मानता था।
54 तब या'क़ूब ने वहीं पहाड़ पर क़ुर्बानी पेश की और अपने
भाइयों को खाने पर बुलाया, और उन्होंने खाना खाया और रात
पहाड़ पर काटी।
55 और लाबन सुबह — सवेरे उठा और अपने §बेटों और अपनी

† **31:47** इस अरामी लफ्ज़ के मायने हैं गवाह का अंबार ‡ **31:49** घंटाघर
§ **31:55** नाती पोते मेरी बेटियां

बेटियों को चूमा और उनको दुआ देकर रवाना हो गया और अपने
मकान को लौटा।

# 32

1 और या'क़ूब ने भी अपनी राह ली और ख़ुदा के फ़रिश्ता उसे
मिले।
2 और या'क़ूब ने उनको देख कर कहा, कि यह ख़ुदा का लश्कर
है और उस जगह का नाम *महनाइम रख्खा।

### [illegible]

3 और या'क़ूब ने अपने आगे — आगे क़ासिदों को अदोम के
मुल्क को, जो श'ईर की सर — ज़मीन में है, अपने भाई 'ऐसौ के
पास भेजा,
4 और उनको हुक्म दिया, कि तुम मेरे †ख़ुदावन्द 'ऐसौ से यह
कहना कि आपका बन्दा या'क़ूब कहता है, कि मै लाबन के यहाँ
मुक़ीम था और अब तक वहीं रहा।
5 और मेरे पास गाय बैल गधे और भेड़ बकरियाँ और नौकर
चाकर और लौंडियाँ है और मै अपने ख़ुदावन्द के पास इसलिए
ख़बर भेजता हूँ कि मुझ पर आप के करम की नज़र हो
6 फिर क़ासिद या'क़ूब के पास लौट कर आए और कहने लगे
कि हम भाई 'ऐसौ के पास गए थे; वह चार सौ आदमियों को साथ
लेकर तेरी मुलाक़ात को आ रहा है
7 तब या'क़ूब निहायत डर गया और परेशान हो और उस ने
अपने साथ के लोगों और भेड़ बकरियों और गाये बैलों और ऊँटों
के दो ग़ोल किए
8 और सोचा कि 'ऐसौ एक ग़ोल पर आ पड़े और उसे मारे तो
दुसरा ग़ोल बच कर भाग जाएगा

---

* **32:2** दो छावनियां † **32:4** मालिक, इन हवालाजत में भी देखें: — 32:4, 18; 33:8, 13 — 14, 15; 43:20; 44:18

9 और या'क़ूब ने कहा ऐ मेरे बाप अब्रहाम के ख़ुदा और मेरे
बाप इस्हाक़ के ख़ुदा! ऐ ख़ुदावन्द जिस ने मुझे यह फ़रमाया कि
तू अपने मुल्क को अपने रिश्तेदारों के पास लौट जा और मैं तेरे
साथ भलाई करूँगा
10 मै तेरी सब रहमतों और वफ़ादारी के मुक़ाबला में जो तूने
अपने बन्दा के साथ बरती है बिल्कुल हेच हूँ क्यूँकि मै सिर्फ़ अपनी
लाठी लेकर इस यरदन के पार गया था और अब ऐसा हूँ कि मेरे
दो ग़ोल हैं
11 मैं तेरी मिन्नत करता हूँ कि मुझे मेरे भाई 'ऐसौ के हाथ से
बचा ले क्यूँकि मै उस से डरता हूँ कि कहीं वह आकर मुझे और
बच्चों को माँ समेत मार न डाले
12 यह तेरा ही फ़रमान है कि मैं तेरे साथ ज़रूर भलाई करूँगा
और तेरी नसल को दरिया की रेत की तरह बनाऊंगा जो कसरत
की वजह से गिनी नहीं जा सकती।
13 और वह उस रात वही रहा और जो उसके पास था उस में से
अपने भाई 'ऐसौ के लिए यह नज़राना लिया।
14 दो सौ बकरियां और बीस बकरे; दो सौ भेड़ें और बीस मेंढे।
15 और तीस दूध देने वाली ऊँटनीयां बच्चों समेत और चालीस
गाय और दस बैल बीस गधियाँ और दस गधे
16 और उनको जुदा — जुदा ग़ोल कर के नौकरों को सौंपना
और उन से कहा कि तुम मेरे आगे आगे पार जाओ और ग़ोलों को
ज़रा दूर दूर रखना।
17 और उसने सब से अगले ग़ोल के रखवाले को हुक्म दिया कि
जब मेरा भाई 'ऐसौ तुझे मिले और तुझ से पूछे कि तू किस का
नौकर है और कहाँ जाता है और यह जानवर जो तेरे आगे आगे
हैं किस के हैं?
18 तू कहना कि यह तेरे ख़ादिम या'क़ूब के हैं, यह नज़राना है
जो मेरे ख़ुदावन्द 'ऐसौ के लिए भेजा गया है और वह ख़ुद भी
हमारे पीछे पीछे आ रहा है।

19 और उस ने दूसरे और तीसरे को ग़ोलों के सब रखवालों को हुक्म दिया कि जब 'एसौ तुमको मिले तो तुम यही बात कहना।

20 और यह भी कहना कि तेरा ख़ादिम या'क़ूब ख़ुद भी हमारे पीछे पीछे आ रहा है, उस ने यह सोचा कि मैं इस नज़राना से जो मुझ से पहले वहाँ जायेगा उसे ख़ुश कर लूँ, तब उस का मुँह देखूँगा, शायद यूँ वह मुझको क़ुबूल कर ले।

21 चुनाँचे वह नज़राना उसके आगे आगे पार गया लेकिन वह ख़ुद उस रात अपने डेरे में रहा।

### [illegible]

22 और वह उसी रात उठा और अपनी दोनों बीवियों दोनों लौंडियों और ग्यारह बेटों को लेकर उनको यबूक के घाट से पार उतारा।

23 और उनको लेकर नदी पार कराया और अपना सब कुछ पार भेज दिया।

24 और या'क़ूब अकेला रह गया और पौ फटने के वक़्त तक एक शख़्स वहाँ उस से कुश्ती लड़ता रहा।

25 जब उसने देखा कि वह उस पर ग़ालिब नहीं होता, तो उसकी रान को अन्दर की तरफ़ से छुआ और या'क़ूब की रान की नस उसके साथ कुश्ती करने में चढ़ गई।

26 और उसने कहा, "मुझे जाने दे क्यूँकि पौ फट चली," या'क़ूब ने कहा, "जब तक तू मुझे बरकत न दे, मैं तुझे जाने नहीं दूँगा।"

27 तब उसने उससे पूछा, तेरा क्या नाम है? उसने जवाब दिया, "या'क़ूब।"

28 उसने कहा, "तेरा नाम आगे को या'क़ूब नहीं बल्कि ‡इस्राईल होगा, क्यूँकि तूने ख़ुदा और आदमियों के साथ ज़ोर आज़माई की और ग़ालिब हुआ।"

‡ **32:28** वह ख़ुदा से कुश्ती लड़ता है

29 तब या'क़ूब ने उससे कहा, "मैं तेरी मिन्नत करता हूँ, तू मुझे
अपना नाम बता दे।" उसने कहा, "तू मेरा नाम क्यूँ पूछता है?"
और उसने उसे वहाँ बरकत दी।
30 और या'क़ूब ने उस जगह का नाम §फ़नीएल रख्खा और
कहा, "मैंने ख़ुदा को आमने सामने देखा, तो भी मेरी जान बची
रही।"
31 और जब वह फ़नीएल से गुज़र रहा था तो आफ़ताब तुलू'
हुआ और वह अपनी रान से लंगड़ाता था।
32 इसी वजह से बनी इस्राईल उस नस की जो रान में अन्दर
की तरफ़ है आज तक नहीं खाते, क्यूँकि उस शख़्स ने या'क़ूब की
रान की नस को जो अन्दर की तरफ़ से चढ़ गई थी छू दिया था।

# 33

### *[illegible]*

1 और या'क़ूब ने अपनी आँखें उठा कर नज़र की और क्या
देखता है कि 'ऐसौ चार सौ आदमी साथ लिए चला आ रहा है।
तब उसने लियाह और राख़िल और दोनों लौंडियों को बच्चे बाँट
दिए।
2 और लौंडियों और उनके बच्चों को सबसे आगे, और लियाह
और उसके बच्चों को पीछे, और राख़िल और यूसुफ़ को सबसे
पीछे रख्खा।
3 और वह ख़ुद उनके आगे — आगे चला और अपने भाई के
पास पहुँचते — पहुँचते सात बार ज़मीन तक झुका।
4 और 'ऐसौ उससे मिलने को दौड़ा, और उससे बग़लगीर हुआ
और उसे गले लगाया और चूमा, और वह दोनों रोए।
5 फिर उसने आँखें उठाईं और 'औरतों और बच्चों को देखा और
कहा कि यह तेरे साथ कौन हैं? उसने कहा, "यह वह बच्चे हैं जो
ख़ुदा ने तेरे ख़ादिम को इनायत किए हैं।"

---

§ **32:30** 1: ख़ुदा का चेहरा

6 तब लौडियाँ और उनके बच्चे नज़दीक आए और अपने आप
को झुकाया।
7 फिर लियाह अपने बच्चों के साथ नज़दीक आई और वह
झुके, आख़िर को यूसुफ़ और राख़िल पास आए और उन्होंने अपने
आप को झुकाया।
8 फिर उसने कहा कि उस बड़े गोल से जो मुझे मिला तेरा क्या
मतलब है? उसने कहा, यह कि मैं अपने ख़ुदावन्द की नज़र में
मक़्बूल ठहरूँ।
9 तब 'ऐसौ ने कहा, "मेरे पास बहुत हैं; इसलिए ऐ मेरे भाई
जो तेरा है वह तेरा ही रहे।"
10 या'क़ूब ने कहा, "नहीं अगर मुझ पर तेरे करम की नज़र हुई
है तो मेरा नज़राना मेरे हाथ से क़ुबूल कर, क्यूँकि मैंने तो तेरा
मुँह ऐसा देखा जैसा कोई ख़ुदा का मुँह देखता है, और तू मुझ से
राज़ी हुआ।
11 इसलिए मेरा नज़राना जो तेरे सामने पेश हुआ उसे क़ुबूल
कर ले, क्यूँकि ख़ुदा ने मुझ पर बड़ा फ़ज़ल किया है और मेरे पास
सब कुछ है।" ग़र्ज़ उसने उसे मजबूर किया, तब उसने उसे ले
लिया।
12 और उसने कहा कि अब हम कूच करें और चल पड़ें, और मैं
तेरे आगे — आगे हो लूँगा।
13 उसने उसे जवाब दिया, "मेरा ख़ुदावन्द जानता है कि मेरे
साथ नाज़ुक बच्चे और दूध पिलाने वाली भेड़ — बकरियाँ और
गाय हैं। अगर उनकी एक दिन भी हद से ज़्यादा हंकाएँ तो सब
भेड़ बकरियाँ मर जाएँगी।
14 इसलिए मेरा ख़ुदावन्द अपने ख़ादिम से पहले रवाना
हो जाए, और मैं चौपायों और बच्चों की रफ़्तार के मुताबिक़
आहिस्ता — आहिस्ता चलता हुआ अपने ख़ुदावन्द के पास
श'ईर में आ जाऊँगा।"

15 तब 'ऐसौ ने कहा कि मर्ज़ी हो तो मैं जो लोग मेरे साथ
हैं उनमें से थोड़े तेरे साथ छोड़ता जाऊँ। उसने कहा, इसकी क्या
ज़रूरत है? मेरे ख़ुदावन्द की नज़र — ए — करम मेरे लिए काफ़ी
है।
16 तब 'ऐसौ उसी रोज़ उल्टे पाँव श'ईर को लौटा।
17 और या'क़ूब सफ़र करता हुआ सुक्कात में आया, और अपने
लिए एक घर बनाया और अपने चौपायों के लिए झोंपड़े खड़े
किए। इसी वजह से इस जगह का नाम सुक्कात पड़ गया।
18 और या'क़ूब जब फ़द्दान अराम से चला तो मुल्क — ए —
कना'न के एक शहर सिकम के नज़दीक सही — ओ — सलामत
पहुँचा और उस शहर के सामने अपने डेरे लगाए।
19 और ज़मीन के जिस हिस्से पर उसने अपना ख़ेमा खड़ा किया
था, उसे उसने सिकम के बाप हमोर के लड़कों से चाँदी के सौ
सिक्के देकर ख़रीद लिया।
20 और वहाँ उस ने ख़ुदा, के लिए एक मसबह बनाया और
उसका नाम *एल — इलाह — ए — इस्राईल रख्खा।

# 34

□□□□□□ □□ □□□□□

1 और लियाह की बेटी दीना जो या'क़ूब से उसके पैदा हुई थी,
उस मुल्क की लड़कियों के देखने को बाहर गई।
2 तब उस मुल्क के अमीर हव्वी हमोर के बेटे सिकम ने उसे
देखा, और उसे ले जाकर उसके साथ मुबाश्रत की और उसे ज़लील
किया।
3 और उसका दिल या'क़ूब की बेटी दीना से लग गया, और
उसने उस लड़की से इश्क में मीठी — मीठी बातें कीं।
4 और सिकम ने अपने बाप हमोर से कहा कि इस लड़की को
मेरे लिए ब्याह ला दे।

* **33:20** 1: ख़ुदा, इस्राईल का ख़ुदा, इस्राईल का ख़ुदा ज़ोरावर है

5 और या'क़ूब को मा'लूम हुआ कि उसने उसकी बेटी दीना को
बे इज़्ज़त किया है। लेकिन उसके बेटे चौपायों के साथ जंगल में
थे इसलिए या'क़ूब उनके आने तक चुपका रहा।
6 तब सिकम का बाप हमोर निकल कर या'क़ूब से बातचीत
करने को उसके पास गया।
7 और या'क़ूब के बेटे यह बात सुनते ही जंगल से आए। यह
शख़्स बड़े नाराज़ और ख़ौफ़नाक थे, क्यूँकि उसने जो या'क़ूब की
बेटी से मुबाश्रत की तो बनी — इस्राईल में ऐसा मकरूह फ़ेल
किया जो हरगिज़ मुनासिब न था।
8 तब हमोर उन से कहने लगा कि मेरा बेटा सिकम तुम्हारी
बेटी को दिल से चाहता है, उसे उसके साथ ब्याह दो।
9 हम से समधियाना कर लो; अपनी बेटियाँ हम को दो और
हमारी बेटियाँ आप लो।
10 तो तुम हमारे साथ बसे रहोगे और यह मुल्क तुम्हारे सामने
है, इसमें ठहरना और तिजारत करना और अपनी जायदादें खड़ी
कर लेना।
11 और सिकम ने इस लड़की के बाप और भाइयों से कहा, कि
मुझ पर बस तुम्हारे करम की नज़र हो जाए, फिर जो कुछ तुम
मुझ से कहोगे मैं दूँगा।
12 मैं तुम्हारे कहने के मुताबिक़ जितना मेहर और जहेज़ तुम
मुझ से तलब करो, दूँगा लेकिन लड़की को मुझ से ब्याह दो।
13 तब या'क़ूब के बेटों ने इस वजह से कि उसने उनकी बहन
दीना को बे'इज़्ज़त किया था, रिया से सिकम और उसके बाप हमोर
को जवाब दिया,
14 और कहने लगे, “हम यह नहीं कर सकते कि नामख़्तून
आदमी को अपनी बहन दें, क्यूँकि इसमें हमारी बड़ी रुस्वाई है।
15 लेकिन जैसे हम हैं अगर तुम वैसे ही हो जाओ, कि तुम्हारे
हर आदमियों का ख़तना कर दिया जाए तो हम राज़ी हो जाएँगे।
16 और हम अपनी बेटियाँ तुम्हे देंगे और तुम्हारी बेटियाँ लेंगे

और तुम्हारे साथ रहेंगे और हम सब एक क़ौम हो जाएँगे।
17 और अगर तुम ख़तना कराने के लिए हमारी बात न मानी
तो हम अपनी लड़की लेकर चले जाएँगे।"
18 उनकी बातें हमोर और उसके बेटे सिकम को पसन्द आई।
19 और उस जवान ने इस काम में ताख़ीर न की क्यूँकि उसे
या'क़ूब की बेटी की चाहत थी, और वह अपने बाप के सारे घराने
में सबसे ख़ास था।
20 फिर हमोर और उसका बेटा सिकम अपने शहर के फाटक
पर गए और अपने शहर के लोगों से यूँ बातें करने लगे कि,
21 यह लोग हम से मेल जोल रखते हैं; तब वह इस मुल्क में रह
कर सौदागरी करें, क्यूँकि इस मुल्क में उनके लिए बहुत गुन्जाइश
है, और हम उनकी बेटियाँ ब्याह लें और अपनी बेटियाँ उनकी दें।
22 और वह भी हमारे साथ रहने और एक क़ौम बन जाने को
राज़ी हैं, मगर सिर्फ़ इस शर्त पर कि हम में से हर आदमी का
ख़तना किया जाए जैसा उनका हुआ है।
23 क्या उनके चौपाए और माल और सब जानवर हमारे न
हो जाएँगे? हम सिर्फ़ उनकी मान लें और वह हमारे साथ रहने
लगेंगे।
24 तब उन सभों ने जो उसके शहर के फाटक से आया — जाया
करते थे, हमोर और उसके बेटे सिकम की बात मानी और जितने
उसके शहर के फाटक से आया — जाया करते थे उनमें से हर
आदमी ने ख़तना कराया।
25 और तीसरे दिन जब वह दर्द में मुब्तिला थे, तो यूँ हुआ
कि या'क़ूब के बेटों में से दीना के दो भाई, शमौन और लावी,
अपनी अपनी तलवार लेकर अचानक शहर पर आ पड़े और सब
आदमियों को क़त्ल किया।
26 और हमोर और उसके बेटे सिकम को भी तलवार से क़त्ल
कर डाला और सिकम के घर से दीना को निकाल ले गए।
27 और या'क़ूब के बेटे मक़्तूलों पर आए और शहर को लूटा,

इसलिए कि उन्होंने उनकी बहन को बे'इज़्ज़त किया था।

28 उन्होंने उनकी भेड़ — बकरियाँ और गाय — बैल, गधे और जो कुछ शहर और खेत में था ले लिया।

29 और उनकी सब दौलत लूटी और उनके बच्चों और बीवियों को क़ब्ज़े में कर लिया, और जो कुछ घर में था सब लूट — घसूट कर ले गए।

30 तब या'क़ूब ने शमौन और लावी से कहा, कि तुम ने मुझे कुढ़ाया क्यूँकि तुम ने मुझे इस मुल्क के बाशिन्दों, या'नी कना'नियों और फ़रिज़्ज़ियों में नफ़रतअंगेज बना दिया, क्यूँकि मेरे साथ तो थोड़े ही आदमी हैं; अब वह मिल कर मेरे मुक़ाबिले को आएँगे और मुझे क़त्ल कर देंगे, और मैं अपने घराने समेत बर्बाद हो जाऊँगा।

31 उन्होंने कहा, “तो क्या उसे मुनासिब था कि वह हमारी बहन के साथ कसबी की तरह बर्ताव करता?”

# 35

[illegible]

1 और ख़ुदा ने या'क़ूब से कहा, कि उठ बैतएल को जा और वहीं रह और वहाँ ख़ुदा के लिए, जो तुझे उस वक़्त दिखाई दिया जब तू अपने भाई 'ऐसौ के पास से भागा जा रहा था, एक मज़बह बना।

2 तब या'क़ूब ने अपने घराने और अपने सब साथियों से कहा “ग़ैर मा'बूदों को जो तुम्हारे बीच हैं दूर करो, और पाकी हासिल करके अपने कपड़े बदल डालो।

3 और आओ, हम रवाना हों और बैत — एल को जाएँ, वहाँ मैं ख़ुदा के लिए जिसने मेरी तंगी के दिन मेरी दुआ क़ुबूल की और जिस राह में मैं चला मेरे साथ रहा, मज़बह बनाऊँगा।”

4 तब उन्होंने सब ग़ैर मा'बूदों को जो उनके पास थे और मुन्दरों को जो उनके कानों में थे, या'क़ूब को दे दिया और या'क़ूब ने उनको उस बलूत के दरख़्त के नीचे जो सिकम के नज़दीक था दबा दिया।

5 और उन्होंने कूच किया और उनके आस पास के शहरों पर
ऐसा बड़ा ख़ौफ़ छाया हुआ था कि उन्होंने या'क़ूब के बेटों का
पीछा न किया।
6 और या'क़ूब उन सब लोगों के साथ जो उसके साथ थे लूज़
पहुँचा, बैत — एल यही है और मुल्क — ए — कना'न में है।
7 और उसने वहाँ मज़बह बनाया और उस मुक़ाम का नाम एल
— *बैतएल रख्खा, क्यूँकि जब वह अपने भाई के पास से भागा
जा रहा था तो ख़ुदा वहीं उस पर ज़ाहिर हुआ था।
8 और रिब्क़ा की दाया दबोरा मर गई और वह बैतएल की
उतराई में बलूत के दरख़्त के नीचे दफ़्न हुई, और उस बलूत का
नाम †अल्लोन बकूत रख्खा गया।
9 और या'क़ूब के फ़द्दान अराम से आने के बाद ख़ुदा उसे फिर
दिखाई दिया और उसे बरकत बख़्शी।
10 और ख़ुदा ने उसे कहा कि तेरा नाम या'क़ूब है; तेरा नाम
आगे को या'क़ूब न कहलाएगा, बल्कि तेरा नाम इस्राईल होगा।
तब उसने उसका नाम इस्राईल रख्खा।
11 फिर ख़ुदा ने उसे कहा, कि मैं ख़ुदा — ए — क़ादिर — ए
— मुतलक हूँ, तू कामयाब हो और बहुत हो जा। तुझ से एक
क़ौम, बल्कि क़ौमों के क़बीले पैदा होंगे और बादशाह तेरे सुल्ब
से निकलेंगे।
12 और यह मुल्क जो मैंने अब्रहाम और इस्हाक़ को दिया है,
वह तुझ को दूँगा और तेरे बाद तेरी नसल को भी यही मुल्क दूँगा।
13 और ख़ुदा जिस जगह उससे हम कलाम हुआ, वहीं से उसके
पास से ऊपर चला गया।
14 तब या'क़ूब ने उस जगह जहाँ वह उससे हम — कलाम
हुआ, पत्थर का एक सुतून खड़ा किया और उस पर तपावन किया
और तेल डाला।

---

* **35:7** बेथेल का ख़ुदा † **35:8** बलूत का दरख़्त जो रोता है

15 और या'क़ूब ने उस मक़ाम का नाम जहाँ ख़ुदा उससे हम
कलाम हुआ 'बैतएल' रख्खा।

### *[illegible]*

16 और वह बैतएल से चले और इफ़रात थोड़ी ही दूर रह गया
था कि राख़िल के दर्द — ए — ज़िह लगा, और वज़ा' — ए —
हम्ल में निहायत दिक्कत हुई।
17 और जब वह सख़्त दर्द में मुब्तिला थी तो दाई ने उससे कहा,
"डर मत, अब के भी तेरे बेटा ही होगा।"
18 और यूँ हुआ कि उसने मरते — मरते उसका नाम ‡बिनऊनी
रख्खा और मर गई, लेकिन उसके बाप ने उसका नाम §बिनयमीन
रख्खा।
19 और राख़िल मर गई और इफ़रात, या'नी बैतलहम के रास्ते
में दफ़्न हुई।
20 और या'क़ूब ने उसकी क़ब्र पर एक सुतून खड़ा कर दिया।
राख़िल की क़ब्र का यह सुतून आज तक मौजूद है।
21 और इस्राईल आगे बढ़ा और 'अद्र के बुर्ज की परली तरफ़
अपना डेरा लगाया।
22 और इस्राईल के उस मुल्क में रहते हुए ऐसा हुआ कि
रूबिन ने जाकर अपने बाप की हरम बिल्हाह से मुबाश्रत की और
इस्राईल को यह मा'लूम हो गया।
23 उस वक़्त या'क़ूब के बारह बेटे थे लियाह के बेटे यह थे:
रूबिन या'क़ूब का पहलौठा, और शमौन और लावी और यहूदाह,
इश्कार और ज़बूलून।
24 और राख़िल के बेटे: यूसुफ़ और बिनयमीन थे।
25 और राख़िल की लौंडी बिल्हाह के बेटे, दान और नफ़्ताली
थे।

‡ **35:18** मेरे ग़म का बेटा § **35:18** मेरे दायें हाथ का बेटा

26 और लियाह की लौंडी ज़िलफ़ा के बेटे, जद्द और आशर थे। यह सब या'क़ूब के बेटे हैं जो फ़द्दान अराम में पैदा हुए।

27 और या'क़ूब ममरे में जो करयत अरबा' या'नी हबरून है जहाँ अब्रहाम और इस्हाक़ ने डेरा किया था, अपने बाप इस्हाक़ के पास आया।

28 और इस्हाक़ एक सौ अस्सी साल का हुआ।

29 तब इस्हाक़ ने दम छोड़ दिया और वफ़ात पाई और बूढ़ा और पूरी उम्र का हो कर अपने लोगों में जा मिला, और उसके बेटों 'ऐसौ और या'क़ूब ने उसे दफ़न किया।

# 36

*'□□□□ □□ □□□□□□□□*

1 और 'ऐसौ या'नी अदोम का नसबनामा यह है।

2 'ऐसौ कना'नी लड़कियों में से हित्ती ऐलोन की बेटी 'अद्दा को, और हव्वी सबा'ओन की नवासी और 'अना की बेटी ओहलीबामा को,

3 और इस्मा'ईल की बेटी और नबायोत की बहन बशामा को ब्याह लाया।

4 और 'ऐसौ से 'अद्दा के इलिफ़ज़ पैदा हुआ, और बशामा के र'ऊएल पैदा हुआ,

5 और ओहलीबामा के य'ओस और यालाम और क़ोरह पैदा हुए। यह 'ऐसौ के बेटे हैं जो मुल्क — ए — कना'न में पैदा हुए।

6 और 'ऐसौ अपनी बीवियों और बेटे बेटियों और अपने घर के सब नौकर चाकरों और अपने चौपायों और तमाम जानवरों और अपने सब माल अस्बाब को, जो उसने मुल्कए — कना'न में जमा' किया था, लेकर अपने भाई या'क़ूब के पास से एक दूसरे मुल्क को चला गया।

7 क्यूँकि उनके पास इस क़दर सामान हो गया था कि वह एक
जगह रह नहीं सकते थे, और उनके चौपायों की कसरत की वजह
से उस ज़मीन में जहाँ उनका क़याम था गुंजाइश न थी।
8 तब 'ऐसौ जिसे अदोम भी कहते हैं, कोह — ए — श'ईर में
रहने लगा।
9 और 'ऐसौ का जो कोह — ए — श'ईर के अदोमियों का बाप
है यह नसबनामा है।
10 'ऐसौ के बेटों के नाम यह हैं: इलिफ़ज़, 'ऐसौ की बीवी 'अद्दा
का बेटा; और र'ऊएल, 'ऐसौ की बीवी बशामा का बेटा।
11 इलिफ़ज़ के बेटे, तेमान और ओमर और सफ़ी और जा'ताम
और कनज़ थे।
12 और तिमना' 'ऐसौ के बेटे इलिफ़ज़ की हरम थी, और
इलिफ़ज़ से उसके 'अमालीक पैदा हुआ; और 'ऐसौ की बीवी
'अद्दा के बेटे यह थे।
13 र'ऊएल के बेटे यह हैं: नहत और ज़ारह और सम्मा और
मिज़्ज़ा, यह 'ऐसौ की बीवी बशामा के बेटे थे।
14 और ओहलीबामा के बेटे, जो 'अना की बेटी सबा'ओन की
नवासी और 'ऐसौ की बीवी थी, यह हैं: 'ऐसौ से उसके य'ओस
और यालाम और कोरह पैदा हुए।
15 और 'ऐसौ की औलाद में जो रईस थे वह यह हैं: 'ऐसौ के
पहलौटे बेटे इलिफ़ज़ की औलाद में रईस तेमान, रईस ओमर,
रईस सफ़ी, रईस कनज़,
16 रईस कोरह, रईस जा'ताम, रईस 'अमालीक। यह वह रईस
हैं जो इलिफ़ज़ से मुल्क — ए — अदोम में पैदा हुए और 'अद्दा
के फ़र्ज़न्द थे।
17 और र'ऊएल — बिन 'ऐसौ के बेटे यह हैं: रईस नहत, रईस
ज़ारह, रईस सम्मा, रईस मिज़्ज़ा। यह वह रईस हैं जो र'ऊएल
से मुल्क — ए — अदोम में पैदा हुए और ऐसौ की बीवी बशामा
के फ़ज़न्द थे।

18 और 'ऐसौ की बीवी ओहलीबामा की औलाद यह हैं: रईस
य'ऊस, रईस यालाम, रईस कोरह। यह वह रईस हैं जो 'ऐसौ की
बीवी उहलीबामा बिन्त 'अना के फ़र्ज़न्द थे।
19 और 'ऐसौ या'नी अदोम की औलाद और उनके रईस यह हैं।

### [illegible]

20 और श'ईर होरी के बेटे जो उस मुल्क के बाशिन्दे थे, यह हैं:
लोप्तान और सोबल और सबा'ओन और 'अना
21 और दीसोन और एसर और दीसान; बनी श'ईर में से जो
होरी रईस मुल्क — ए — अदोम में हुए ये हैं।
22 होरी और हीमाम लोतान के बेटे, और तिम्ना' लोतान की
बहन थी।
23 और यह सोबल के बेटे हैं: 'अलवान और मानहत और एबाल
और सफ़ी और ओनाम।
24 और सबा'ओन के बेटे यह हैं: अय्याह और 'अना; यह वह
'अना है जिसे अपने बाप के गधों को वीराने में चराते वक़्त *गर्म
चश्मे मिले।
25 और 'अना की औलाद यह हैं: दीसोन और ओहलीबामा
बिन्त 'अना।
26 और दीसोन के बेटे यह हैं: हमदान और इशबान और यित्रान
और किरान।
27 यह एसर के बेटे हैं: बिलहान और ज़ावान और 'अकान।
28 दीसान के बेटे यह है: 'ऊज़ और इरान।
29 जो होरियों में से रईस हुए वह यह हैं: रईस 'लुतान, रईस,
सोबल 'रईस सब'उन और रईस 'अना,
30 रईस दीसोन, रईस एसर, रईस दीसान; यह उन होरियों के
रईस हैं जो मुल्कए — श'ईर में थे।

### [illegible]

* **36:24** खचचर

31 यही वह बादशाह हैं जो मुल्क — ए — अदोम से पहले
उससे कि इस्राईल का कोई बादशाह हो, मुसल्लत थे।
32 बाला' — बिनब'ओर अदोम में एक बादशाह था, और उसके
शहर का नाम दिन्हाबा था।
33 बाला' मर गया और यूबाब — बिन ज़ारह जो बुसराही था,
उसकी जगह बादशाह हुआ।
34 फिर यूबाब मर गया और हुशीम जो तेमानियों के मुल्क का
बाशिन्दा था, उसका जानशीन हुआ।
35 और हुशीम मर गया और हदद — बिन — बदद जिसने
मोआब के मैदान में मिदियानियों को मारा, उसका जानशीन हुआ
और उसके शहर का नाम 'अवीत था।
36 और हदद मर गया और शम्ला जो मुसरिका का था उसका
जानशीन हुआ।
37 और शमला मर गया और साउल उसका जानशीन हुआ ये
रहुबुत का था जो दरियाई फुर्रात के बराबर है।
38 और साऊल मर गया और बा'लहनानबिन — 'अकबूर
उसका जानशीन हुआ।
39 और बा'लहनान — बिन — 'अकबूर मर गया और हदर
उसका जानशीन हुआ, और उसके शहर का नाम पाऊ और उसकी
बीवी का नाम महेतबएल था, जो मतरिद की बेटी और मेज़ाहाब
की नवासी थी।
40 फिर ऐसौ के रईसों के नाम उनके ख़ान्दानों और मक़ामो
और नामों के मुताबिक़ यह है: रईस, तिम्ना, रईस 'अलवा, रईस
यतेत,
41 रईस ओहलीबामा, रईस ऐला, रईस फिनोन,
42 रईस क़नज़, रईस तेमान, रईस मिबसार,
43 रईस मज्दाएल, रईस इराम; अदोम का रईस यही है,
जिनके नाम उनके मक़्बूज़ा मुल्क में उनके घर के मुताबिक़ दिए

गए हैं। यह हाल अदोमियों के बाप 'ऐसौ का है।

# 37

*[illegible]*

1 और या'क़ूब मुल्क — ए — कना'न में रहता था, जहाँ उसका
बाप मुसाफ़िर की तरह रहा था।
2 या'क़ूब की नसल का हाल यह है: कि यूसुफ़ सत्रह साल की
उम्र में अपने भाइयों के साथ भेड़ — बकरियाँ चराया करता था।
यह लड़का अपने बाप की बीवियों, बिल्हाह और ज़िल्फ़ा के बेटों
के साथ रहता था और वह उनके बुरे कामों की ख़बर बाप तक
पहुँचा देता था।
3 और इस्राईल यूसुफ़ को अपने सब बेटों से ज़्यादा प्यार
करता था क्यूँकि वह उसके बुढ़ापे का बेटा था, और उसने उसे
एक बूक़लमून क़बा भी बनवा दी।
4 और उसके भाइयों ने देखा कि उनका बाप उसके सब भाइयों
से ज़्यादा उसी को प्यार करता है, इसलिए वह उससे अदावत
रखने लगे और ठीक तौर से बात भी नहीं करते थे।
5 और यूसुफ़ ने एक ख़्वाब देखा जिसे उसने अपने भाइयों को
बताया, तो वह उससे और भी अदावत रखने लगे।
6 और उसने उनसे कहा, "ज़रा वह ख़्वाब तो सुनो, जो मैंने देखा
है:
7 हम खेत में पूले बांधते थे और क्या देखता हूँ कि मेरा पूला
उठा और सीधा खड़ा हो गया, और तुम्हारे पूलों ने मेरे पूले को
चारों तरफ़ से घेर लिया और उसे सिज्दा किया।"
8 तब उसके भाइयों ने उससे कहा, कि क्या तू सचमुच हम पर
सल्तनत करेगा या हम पर तेरा तसल्लुत होगा? और उन्होंने
उसके ख़्वाबों और उसकी बातों की वजह से उससे और भी ज़्यादा
अदावत रक्खा।

9 फिर उसने दूसरा ख़्वाब देखा और अपने भाइयों को बताया।
उसने कहा, "देखो! मुझे एक और ख़्वाब दिखाई दिया है, कि सूरज
और चाँद और ग्यारह सितारों ने मुझे सिज्दा किया।"
10 और उसने इसे अपने बाप और भाइयों दोनों को बताया; तब
उसके बाप ने उसे डाँटा और कहा कि यह ख़्वाब क्या है जो तूने
देखा है? क्या मैं और तेरी माँ और तेरे भाई सचमुच तेरे आगे
ज़मीन पर झुक कर तुझे सिज्दा करेंगे?
11 और उसके भाइयों को उससे हसद हो गया, लेकिन उसके
बाप ने यह बात याद रक्खी।
12 और उसके भाई अपने बाप की भेड़ — बकरियाँ चराने सिकम
को गए।
13 तब इस्राईल ने यूसुफ़ से कहा, "तेरे भाई सिकम में भेड़ —
बकरियों को चरा रहे होंगे, इसलिए आ कि मैं तुझे उनके पास
भेजें।" उसने उसे कहा, "मैं तैयार हूँ।"
14 तब उसने कहा, "तू जा कर देख कि तेरे भाइयों का और भेड़
— बकरियों का क्या हाल है, और आकर मुझे ख़बर दे।" तब उसने
उसे हबरून की वादी से भेजा और वह सिकम में आया।
15 और एक शख़्स ने उसे मैदान में इधर — उधर आवारा फिरते
पाया; यह देख कर उस शख़्स ने उससे पूछा, "तू क्या ढूंडता है?"
16 उसने कहा, "मैं अपने भाइयों को ढूंडता हूँ। ज़रा मुझे बता
दे कि वह भेड़ बकरियों को कहाँ चरा रहे हैं?"
17 उस शख़्स ने कहा, "वह यहाँ से चले गए, क्यूँकि मैंने उनको
यह कहते सुना, 'चलो, हम दूतैन को जाएँ।" चुनाँचे यूसुफ़ अपने
भाइयों की तलाश में चला और उनको दूतैन में पाया।

### [illegible]

18 और जूँ ही उन्होंने उसे दूर से देखा, इससे पहले कि वह
नज़दीक पहुँचे, उसके क़त्ल का मन्सूबा बाँधा।

19 और आपस में कहने लगे, “देखो! ख़्वाबों का देखने वाला
आ रहा है।
20 आओ, अब हम उसे मार डालें और किसी गढ़े में डाल दें और
यह कह देंगे कि कोई बुरा दरिन्दा उसे खा गया; फिर देखेंगे कि
उसके ख़्वाबों का अन्जाम क्या होता है।”
21 तब, रूबिन ने यह सुन कर उसे उनके हाथों से बचाया और
कहा, “हम उसकी जान न लें।”
22 और रूबिन ने उनसे यह भी कहा कि ख़ून न बहाओ बल्कि
उसे इस गढ़े में जो वीराने में है डाल दो, लेकिन उस पर हाथ न
उठाओ। वह चाहता था कि उसे उनके हाथ से बचा कर उसके बाप
के पास सलामत पहुँचा दे।
23 और यूँ हुआ कि जब यूसुफ़ अपने भाइयों के पास पहुँचा, तो
उन्होंने उसकी बू क़लमून क़बा की जो वह पहने था उतार लिया;
24 और उसे उठा कर गढ़े में डाल दिया। वह गढ़ा सूखा था,
उसमें ज़रा भी पानी न था।
25 और वह खाना खाने बैठे और आँखें उठाई तो देखा कि
इस्माईलियों का एक काफ़िला जिल'आद से आ रहा है, और गर्म
मसाल्हे और रौग़न बलसान और मुर्र ऊँटों पर लादे हुए मिस्र को
लिए जा रहा है।
26 तब यहूदाह ने अपने भाइयों से कहा किअगर हम अपने
भाई को मार डालें और उसका ख़ून छिपाएँ तो क्या नफ़ा' होगा?
27 आओ, उसे इस्माईलियों के हाथ बेच डालें कि हमारे हाथ
उस पर न उठे क्यूँकि वह हमारा भाई और हमारा ख़ून है। उसके
भाइयों ने उसकी बात मान ली।
28 फिर वह मिदिया'नी सौदागर उधर से गुज़रे, तब उन्होंने
यूसुफ़ को खींच कर गढ़े से बाहर निकाला और उसे इस्माईलियों
के हाथ *बीस रुपये को बेच डाला और वह यूसुफ़ को मिस्र में ले

* **37:28** चांदी के बीस टुकड़े, यहइतनी रक़म (क़ीमत) थी जिससे एक जवान ग़ुलाम ख़रीदा जाता था

गए।
29 जब रूबिन गढ़े पर लौट कर आया और देखा कि यूसुफ़ उसमें
नहीं है तो अपना लिबास चाक किया।
30 और अपने भाइयों के पास उल्टा फिरा और कहने लगा, कि
लड़का तो वहाँ नहीं है, अब मैं कहाँ जाऊँ?
31 फिर उन्होंने यूसुफ़ की क़बा लेकर और एक बकरा ज़बह
करके उसे उसके ख़ून में तर किया।
32 और उन्होंने उस बूक़लमून क़बा को भिजवा दिया। फिर वह
उसे उनके बाप के पास ले आए और कहा, “हम को यह चीज़ पड़ी
मिली; अब तू पहचान कि यह तेरे बेटे की क़बा है या नहीं?”
33 और उसने उसे पहचान लिया और कहा, “यह तो मेरे बेटे
की क़बा है। कोई बुरा दरिन्दा उसे खा गया है, यूसुफ़ बेशक फाड़ा
गया।”
34 तब या'क़ूब ने अपना लिबास चाक किया और टाट अपनी
कमर से लपेटा, और बहुत दिनों तक अपने बेटे के लिए मातम
करता रहा।
35 और उसके सब बेटे बेटियाँ उसे तसल्ली देने जाते थे, लेकिन
उसे तसल्ली न होती थी। वह यही कहता रहा, कि मैं तो मातम
ही करता हुआ क़ब्र में अपने बेटे से जा मिलूँगा। इसलिए उसका
बाप उसके लिए रोता रहा।
36 और मिदियानियों ने उसे मिस्र में फ़ूतीफ़ार के हाथ जो
फ़िर'औन का एक हाकिम और जिलौदारों का सरदार था बेचा।

# 38

*[illegible]*

1 उन्ही दिनों में ऐसा हुआ कि यहूदाह अपने भाइयों से जुदा
हो कर एक 'अदूल्लामी आदमी के पास, जिसका नाम हीरा था
गया।

2 और यहूदाह ने वहाँ सुवा' नाम किसी कना'नी की बेटी को
देखा और उससे ब्याह करके उसके पास गया।
3 वह हामिला हुई और उसके एक बेटा हुआ, जिसका नाम उसने
'एर रख्खा।
4 और वह फिर हामिला हुई और एक बेटा हुआ और उसका
नाम ओनान रख्खा।
5 फिर उसके एक और बेटा हुआ और उसका नाम सीला रख्खा,
और यहूदाह कज़ीब में था जब इस 'औरत के यह लड़का हुआ।
6 और यहूदाह अपने पहलौठे बेटे 'एर के लिए एक 'औरत ब्याह
लाया जिसका नाम तमर था।
7 और यहूदाह का पहलौठा बेटा 'एर ख़ुदावन्द की निगाह में
शरीर था, इसलिए ख़ुदावन्द ने उसे हलाक कर दिया।
8 तब यहूदाह ने ओनान से कहा किअपने भाई की बीवी के पास
जा और देवर का हक़ अदा कर ताकि तेरे भाई के नाम से नसल
चले।
9 और ओनान जानता था कि यह नसल मेरी न कहलाएगी,
इसलिए यूँ हुआ कि जब वह अपने भाई की बीवी के पास जाता
तो नुत्फ़े को ज़मीन पर गिरा देता था कि मबादा उसके भाई के
नाम से नसल चले।
10 और उसका यह काम ख़ुदावन्द की नज़र में बहुत बुरा था,
इसलिए उसने उसे भी हलाक किया।
11 तब यहूदाह ने अपनी बहू तमर से कहा कि मेरे बेटे सीला के
बालिग़ होने तक तू अपने बाप के घर बेवा बैठी रह। क्यूँकि उसने
सोचा कि कहीं यह भी अपने भाइयों की तरह हलाक न हो जाए।
तब तमर अपने बाप के घर में जाकर रहने लगी।
12 और एक 'अरसे के बाद ऐसा हुआ कि सुवा' की बेटी जो
यहूदाह की बीवी थी मर गई, और जब यहूदाह को उसका ग़म
भूला तो वह अपने 'अदूल्लामी दोस्त हीरा के साथ अपनी भेड़ो

की ऊन के कतरने वालों के पास तिमनत को गया।
13 और तमर की यह ख़बर मिली कि तेरा ख़ुसर अपनी भेड़ो की
ऊन कतरने के लिए तिमनत को जा रहा है।
14 तब उसने अपने रंडापे के कपड़ों को उतार फेंका और बुर्का
ओढ़ा और अपने को ढांका और 'ऐनीम के फाटक के बराबर जो
तिमनत की राह पर है, जा बैठी क्यूँकि उसने देखा कि सीला
बालिग़ हो गया मगर यह उससे ब्याही नहीं गई।
15 यहूदाह उसे देख कर समझा कि कोई कस्बी है, क्यूँकि उसने
अपना मुँह ढाँक रख्खा था।
16 इसलिए वह रास्ते से उसकी तरफ़ को फिरा और उससे कहने
लगा कि जरा मुझे अपने साथ मुबासरत कर लेने दे, क्यूँकि इसे
बिल्कुल नहीं मा'लूम था कि वह इसकी बहू है। उसने कहा, तू
मुझे क्या देगा ताकि मेरे साथ मुबाश्रत करे।
17 उसने कहा, "मैं रेवड़ में से बकरी का एक बच्चा तुझे भेज
दूँगा।" उसने कहा कि उसके भेजने तक तू मेरे पास कुछ रहन कर
देगा।
18 उसने कहा, "तुझे रहन क्या दूँ?" उसने कहा, "अपनी मुहर
और अपना बाजू बंद और अपनी लाठी जो तेरे हाथ में है।" उसने
यह चीजें उसे दीं और उसके साथ मुबाश्रत की, और वह उससे
हामिला हो गई।
19 फिर वह उठ कर चली गई और बुरका उतार कर रंडापे का
जोड़ा पहन लिया।
20 और यहूदाह ने अपने 'अदूल्लामी दोस्त के हाथ बकरी का
बच्चा भेजा ताकि उस 'औरत के पास से अपना रहन वापिस
मंगाए, लेकिन वह 'औरत उसे न मिली।
21 तब उसने उस जगह के लोगों से पूछा, "वह कस्बी जो ऐनीम
में रास्ते के बराबर बैठी थी कहाँ है?" उन्होंने कहा, यहाँ कोई
कस्बी नहीं थी।

22 तब उसने यहूदाह के पास लौट कर उसे बताया कि वह मुझे
नहीं मिली; और वहाँ के लोग भी कहते थे कि वहाँ कोई कस्बी
नहीं थी।
23 यहूदाह ने कहा, "ख़ैर! उस रहन को वही रख्खे, हम तो
बदनाम न हों; मैंने तो बकरी का बच्चा भेजा लेकिन वह तुझे नहीं
मिली।"
24 और करीबन तीन महीने के बाद यहूदाह को यह ख़बर मिली
कि तेरी बहू तमर ने ज़िना किया और उसे छिनाले का हम्ल भी
है। यहूदाह ने कहा कि उसे बाहर निकाल लाओ कि वह जलाई
जाए।
25 जब उसे बाहर निकाला तो उसने अपने खुसर को कहला
भेजा कि मेरे उसी शख़्स का हम्ल है जिसकी यह चीजें हैं। इसलिए
तू पहचान तो सही कि यह मुहर और बाजूबन्द और लाठी किसकी
है।
26 तब यहूदाह ने इक़रार किया और कहा, "वह मुझ से ज़्यादा
सच्ची है, क्यूँकि मैंने उसे अपने बेटे सीला से नहीं ब्याहा।" और
वह फिर कभी उसके पास न गया।
27 और उसके वज़ा — ए — हम्ल के वक़्त मा'लूम हुआ कि
उसके पेट में तौअम हैं।
28 और जब वह जनने लगी तो एक बच्चे का हाथ बाहर आया
और दाई ने पकड़ कर उसके हाथ में लाल डोरा बाँध दिया, और
कहने लगी, "यह पहले पैदा हुआ।"
29 और यूँ हुआ कि उसने अपना हाथ फिर खींच लिया, इतने
में उसका भाई पैदा हो गया। तब वह दाई बोल उठी कि तू कैसे
ज़बरदस्ती निकल पड़ा तब उसका नाम *फ़ारस रख्खा गया।
30 फिर उसका भाई जिसके हाथ में लाल डोरा बंधा था, पैदा

---

* **38:29** फैल जाना या तोड़ना

हुआ और उसका नाम †ज़ारह रक्खा गया।

# 39

*[illegible]*

1 और यूसुफ़ को मिस्र में लाए, और फ़ूतीफ़ार मिस्री ने जो
फ़िर'औन का एक हाकिम और जिलौदारों का सरदार था, उसकी
इस्माईलियों के हाथ से जो उसे वहाँ ले गए थे ख़रीद लिया।
2 और ख़ुदावन्द यूसुफ़ के साथ था और वह इक़बालमन्द हुआ,
और अपने मिस्री आक़ा के घर में रहता था।
3 और उसके आक़ा ने देखा कि ख़ुदावन्द उसके साथ है और
जिस काम को वह हाथ लगाता है ख़ुदावन्द उसमें उसे इकबालमंद
करता है।
4 चुनाँचे यूसुफ़ उसकी नज़र में मक़्बूल ठहरा और वही उसकी
ख़िदमत करता था; और उसने उसे अपने घर का मुख़्तार बना कर
अपना सब कुछ उसे सौंप दिया।
5 और जब उसने उसे घर का और सारे माल का मुख़्तार बनाया,
तो ख़ुदावन्द ने उस मिस्री के घर में यूसुफ़ की ख़ातिर बरकत
बख़्शी; और उसकी सब चीज़ों पर जो घर में और खेत में थीं,
ख़ुदावन्द की बरकत होने लगी।
6 और उसने अपना सब कुछ यूसुफ़ के हाथ में छोड़ दिया, और
सिवा रोटी के जिसे वह खा लेता था, उसे अपनी किसी चीज़ का
होश न था। और यूसुफ़ ख़ूबसूरत और हसीन था।
7 इन बातों के बाद यूँ हुआ कि उसके आक़ा की बीवी की आँख
यूसुफ़ पर लगी और उसने उससे कहा कि मेरे साथ हमबिस्तर हो।
8 लेकिन उसने इन्कार किया; और अपने आक़ा की बीवी से
कहा कि देख, मेरे आक़ा को ख़बर भी नहीं कि इस घर में मेरे पास

† **38:30** ज़ारह के मायने हैं: — गुरूब — ए — आफ़ताब की सुर्ख़ी

क्या — क्या है, और उसने अपना सब कुछ मेरे हाथ में छोड़ दिया
है।
9 इस घर में मुझ से बड़ा कोई नहीं; और उसने तेरे अलावा कोई
चीज़ मुझ से बाज़ नहीं रख्खी, क्यूँकि तू उसकी बीवी है। इसलिए
भला मैं क्यूँ ऐसी बड़ी बुराई करूँ और ख़ुदा का गुनहगार बनूँ?
10 और वह हर दिन यूसुफ़ को मजबूर करती रही, लेकिन उसने
उसकी बात न मानी कि उससे हमबिस्तर होने के लिए उसके साथ
लेटे।
11 और एक दिन ऐसा हुआ कि वह अपना काम करने के लिए
घर में गया, और घर के आदमियों में से कोई भी अन्दर न था।
12 तब उस 'औरत ने उसका लिबास पकड़ कर कहा, मेरे साथ
हम बिस्तर हो, वह अपना लिबास उसके हाथ में छोड़ कर भागा
और बाहर निकल गया।
13 जब उसने देखा कि वह अपना लिबास उसके हाथ में छोड़
कर भाग गया,
14 तो उसने अपने घर के आदमियों को बुला कर उनसे कहा,
“देखो, वह एक 'इब्री को हम से मज़ाक करने के लिए हमारे पास
ले आया है। यह मुझ से हम बिस्तर होने को अन्दर घुस आया,
और मैं बुलन्द आवाज़ से चिल्लाने लगी।
15 जब उसने देखा कि मैं ज़ोर — ज़ोर से चिल्ला रही हूँ, तो
अपना लिबास मेरे पास छोड़ कर भागा और बाहर निकल गया।”
16 और वह उसका लिबास उसके आक़ा के घर लौटने तक अपने
पास रख्खे रही।
17 तब उसने यह बातें उससे कहीं, “यह इब्री गुलाम, जो तू
लाया है मेरे पास अन्दर घुस आया कि मुझ से मज़ाक़ करे।
18 जब मैं ज़ोर — ज़ोर से चिल्लाने लगी तो वह अपना लिबास
मेरे ही पास छोड़ कर बाहर भाग गया।”

19 जब उसके आक़ा ने अपनी बीवी की वह बातें जो उसने उससे
कहीं, सुन लीं, कि तेरे ग़ुलाम ने मुझ से ऐसा ऐसा किया तो उसका
ग़ज़ब भड़का।
20 और यूसुफ़ के आक़ा ने उसको लेकर क़ैद खाने में जहाँ
बादशाह के क़ैदी बन्द थे डाल दिया, तब वह वहाँ क़ैद खाने में
रहा।
21 लेकिन ख़ुदावन्द यूसुफ़ के साथ था; उसने उस पर रहम
किया और क़ैद खाने के दारोग़ा की नज़र में उसे मक़्बूल बनाया।
22 और क़ैद खाने के दारोग़ा ने सब क़ैदियों को जो क़ैद में थे,
यूसुफ़ के हाथ में सौंपा; और जो कुछ वह करते उसी के हुक्म से
करते थे।
23 और क़ैद खाने का दारोग़ा सब कामों की तरफ़ से, जो उसके
हाथ में थे बेफ़िक्र था, इसलिए कि ख़ुदावन्द उसके साथ था; और
जो कुछ वह करता ख़ुदावन्द उसमें इक़बाल मन्दी बख़्शता था।

# 40

*[illegible]*

1 इन बातों के बाद यूँ हुआ कि शाह ए — मिस्र का साक़ी और
नानपज़ अपने ख़ुदावन्द शाह — ए — मिस्र के मुजरिम हुए।
2 और फ़िर'औन अपने इन दोनों हाकिमों से जिनमें एक
साक़ियों और दूसरा नानपज़ों का सरदार था, नाराज़ हो गया।
3 और उसने इनको जिलौदारों के सरदार के घर में उसी जगह
जहाँ यूसुफ़ हिरासत में था, क़ैद खाने में नज़रबन्द करा दिया।
4 जिलौदारों के सरदार ने उनको यूसुफ़ के हवाले किया, और
वह उनकी ख़िदमत करने लगा और वह एक मुद्दत तक नज़रबन्द
रहे।
5 और शाह — ए — मिस्र के साक़ी और नानपज़ दोनों ने, जो
क़ैद खाने में नज़रबन्द थे एक ही रात में अपने — अपने होनहार
के मुताबिक़ एक — एक ख़्वाब देखा।

6 और यूसुफ़ सुबह को उनके पास अन्दर आया और देखा कि
वह उदास हैं।
7 और उसने फ़िर'औन के हाकिमों से जो उसके साथ उसके
आक़ा के घर में नज़रबन्द थे, पूछा कि आज तुम क्यूँ ऐसे उदास
नज़र आते हो?
8 उन्होंने उससे कहा, "हम ने एक ख़्वाब देखा है, जिसकी ता'बीर
करने वाला कोई नहीं।" यूसुफ़ ने उनसे कहा, "क्या ता'बीर की
कुदरत ख़ुदा को नहीं? मुझे ज़रा वह ख़्वाब बताओ।"
9 तब सरदार साकी ने अपना ख़्वाब यूसुफ़ से बयान किया।
उसने कहा, "मैंने ख़्वाब में देखा कि अंगूर की बेल मेरे सामने है।
10 और उस बेल में तीन शाखें हैं, और ऐसा दिखाई दिया कि
उसमें कलियाँ लगीं और फूल आए और उसके सब गुच्छों में पक्के
— पक्के अंगूर लगे।
11 और फ़िर'औन का प्याला मेरे हाथ में है, और मैंने उन अंगूरों
को लेकर फ़िर'औन के प्याले में निचोड़ा और वह प्याला मैंने
फ़िर'औन के हाथ में दिया।"
12 यूसुफ़ ने उससे कहा, "इसकी ता'बीर यह है कि वह तीन
शाखें तीन दिन हैं।
13 इसलिए अब से तीन दिन के अन्दर फ़िर'औन तुझे सरफ़राज़
फ़रमाएगा, और तुझे फिर तेरे 'ओहदे पर बहाल कर देगा; और
पहले की तरह जब तू उसका साकी था, प्याला फ़िर'औन के हाथ
में दिया करेगा।
14 लेकिन जब तू ख़ुशहाल हो जाए तो मुझे याद करना और
ज़रा मुझ से मेहरबानी से पेश आना, और फ़िर'औन से मेरा ज़िक्र
करना और मुझे इस घर से छुटकारा दिलवाना।
15 क्यूँकि इब्रानियों के मुल्क से मुझे चुरा कर ले आए हैं, और
यहाँ भी मैंने ऐसा कोई काम नहीं किया जिसकी वजह से क़ैद खाने
में डाला जाऊँ।"

16 जब सरदार नानपज़ ने देखा कि ता'बीर अच्छी निकली तो
यूसुफ़ से कहा, “मैंने भी ख़्वाब में देखा, कि मेरे सिर पर सफ़ेद
रोटी की तीन टोकरियाँ हैं;
17 और ऊपर की टोकरी में हर क़िस्म का पका हुआ खाना
फ़िर'औन के लिए है, और परिन्दे मेरे सिर पर की टोकरी में से
खा रहे हैं।”
18 यूसुफ़ ने उसे कहा, “इसकी ता'बीर यह है कि वह तीन
टोकरियाँ तीन दिन हैं।
19 इसलिए अब से तीन दिन के अन्दर फ़िर'औन तेरा सिर तेरे
तन से जुदा करा के तुझे एक दरख़्त पर टंगवा देगा, और परिन्दे
तेरा गोश्त नोंच — नोंच कर खाएँगे।”
20 और तीसरे दिन जो फ़िर'औन की सालगिरह का दिन था,
यूँ हुआ कि उसने अपने सब नौकरों की दावत की और उसने
सरदार साकी और सरदार नानपज़ को अपने नौकरों के साथ याद
फ़रमाया।
21 और उसने सरदार साकी को फिर उसकी ख़िदमत पर बहाल
किया, और वह फ़िर'औन के हाथ में प्याला देने लगा।
22 लेकिन उसने सरदार नानपज़ को फाँसी दिलवाई, जैसा
यूसुफ़ ने ता'बीर करके उनको बताया था।
23 लेकिन सरदार साकी ने यूसुफ़ को याद न किया बल्कि उसे
भूल गया।

# 41

### *????'?? ?? ??????*

1 पूरे दो साल के बाद फ़िर'औन ने ख़्वाब में देखा कि वह दरिया-
ए-नील के किनारे खड़ा है;
2 और उस दरिया में से सात ख़ूबसूरत और मोटी — मोटी गायें
निकल कर सरकंडों के खेत में चरने लगीं।

3 उनके बाद और सात बदशक्ल और दुबली — दुबली गायें
दरिया से निकलीं और दूसरी गायों के बराबर दरिया के किनारे जा
खड़ी हुई।
4 और यह बदशक्ल और दुबली दुबली गायें उन सातों ख़ूबसूरत
और मोटी मोटी गायों को खा गई, तब फ़िर'औन जाग उठा।
5 और वह फिर सो गया और उसने दूसरा ख़्वाब देखा कि एक
टहनी में अनाज की सात मोटी और अच्छी — अच्छी बालें
निकलीं।
6 उनके बाद और सात पतली और पूरबी हवा की मारी मुरझाई
हुई बालें निकलीं।
7 यह पतली बालें उन सातों मोटी और भरी हुई बालों को
निगल गई। और फ़िर'औन जाग गया और उसे मा'लूम हुआ कि
यह ख़्वाब था।
8 और सुबह को यूँ हुआ कि उसका जी घबराया तब उसने मिस्र
के सब जादूगरों और सब अक्लमन्दों को बुलवा भेजा, और अपना
ख़्वाब उनको बताया। लेकिन उनमें से कोई फ़िर'औन के आगे
उनकी ता'बीर न कर सका।
9 उस वक़्त सरदार साक़ी ने फ़िर'औन से कहा, मेरी ख़ताएँ
आज मुझे याद आईं।
10 जब फ़िर'औन अपने ख़ादिमों से नाराज़ था और उसने मुझे
और सरदार नानपज़ को जिलौदारों के सरदार के घर में नज़रबन्द
करवा दिया।
11 तो मैंने और उसने एक ही रात में एक — एक ख़्वाब देखा,
यह ख्वाब हम ने अपने अपने होनहार के मुताबिक़ देखे।
12 वहाँ एक 'इब्री जवान, जिलौदारों के सरदार का नौकर, हमारे
साथ था। हम ने उसे अपने ख़्वाब बताए और उसने उनकी ता'बीर
की, और हम में से हर एक को हमारे ख़्वाब के मुताबिक़ उसने
ता'बीर बताई।
13 और जो ता'बीर उसने बताई थी वैसा ही हुआ, क्यूँकि मुझे

तो उसने मेरे मन्सब पर बहाल किया था और उसे फाँसी दी थी।
14 तब फ़िर'औन ने यूसुफ़ को बुलवा भेजा: तब उन्होंने जल्द
उसे क़ैद खाने से बाहर निकाला, और उसने हजामत बनवाई और
कपड़े बदल कर फ़िर'औन के सामने आया।
15 फ़िर'औन ने यूसुफ़ से कहा, "मैंने एक ख़्वाब देखा है जिसकी
ता'बीर कोई नहीं कर सकता, और मुझ से तेरे बारे में कहते हैं कि
तू ख़्वाब को सुन कर उसकी ता'बीर करता है।"
16 यूसुफ़ ने फ़िर'औन को जवाब दिया, "मैं कुछ नहीं जानता,
ख़ुदा ही फ़िर'औन को सलामती बख़्श जवाब देगा।"
17 तब फ़िर'औन ने यूसुफ़ से कहा, मैंने ख़्वाब में देखा कि मैं
दरिया-ए-नील के किनारे खड़ा हूँ।
18 और उस दरिया में से सात मोटी और ख़ूबसूरत गायें निकल
कर सरकंडों के खेत में चरने लगीं।
19 उनके बाद और सात ख़राब और निहायत बदशक्ल और
दुबली गायें निकलीं, और वह इस क़दर बुरी थीं कि मैंने सारे मुल्क
— ए — मिस्र में ऐसी कभी नहीं देखीं।
20 और वह दुबली और बदशक्ल गायें उन पहली सातों मोटी
गायों को खा गईं;
21 और उनके खा जाने के बाद यह मा'लूम भी नहीं होता था
कि उन्होंने उनको खा लिया है, बल्कि वह पहले की तरह जैसी
की तैसी बदशक्ल रहीं। तब मैं जाग गया।
22 और फिर ख़्वाब में देखा कि एक टहनी में सात भरी और
अच्छी — अच्छी बालें निकलीं।
23 और उनके बाद और सात सूखी और पतली और पूरबी हवा
की मारी मुरझाई हुई बालें निकलीं।
24 और यह पतली बाले उन सातों अच्छी — अच्छी बालों को
निगल गईं। और मैंने इन जादूगरों से इसका बयान किया लेकिन
ऐसा कोई न निकला जो मुझे इसका मतलब बताता।
25 तब यूसुफ़ ने फ़िर'औन से कहा कि फ़िर'औन का ख़्वाब एक

ही है, जो कुछ ख़ुदा करने को है उसे उसने फ़िर'औन पर ज़ाहिर
किया है।
26 वह सात अच्छी — अच्छी गायें सात साल हैं, और वह
सात अच्छी अच्छी बालें भी सात साल हैं; ख़्वाब एक ही है।
27 और वह सात बदशक्ल और दुबली गायें जो उनके बाद
निकलीं, और वह सात ख़ाली और पूरबी हवा की मारी मुरझाई
हुई बालें भी सात साल ही हैं; मगर काल के सात बरस।
28 यह वही बात है जो मैं फ़िर'औन से कह चुका हूँ कि जो कुछ
ख़ुदा करने को है उसे उसने फ़िर'औन पर ज़ाहिर किया है।
29 देख! सारे मुल्क — ए — मिस्र में सात साल तो पैदावार
ज़्यादा के होंगे।
30 उनके बाद सात साल काल के आएँगे और तमाम मुल्क ए
— मिस्र में लोग इस सारी पैदावार को भूल जाएँगे और यह काल
मुल्क को तबाह कर देगा।
31 और अज़ानी मुल्क में याद भी नहीं रहेगी, क्यूँकि जो काल
बाद में पड़ेगा वह निहायत ही सख़्त होगा।
32 और फ़िर'औन ने जो यह ख़्वाब दो दफ़ा' देखा तो इसकी
वजह यह है कि यह बात ख़ुदा की तरफ़ से मुक़र्रर हो चुकी है,
और ख़ुदा इसे जल्द पूरा करेगा।
33 इसलिए फ़िर'औन को चाहिए कि एक समझदार और
'अक़्लमन्द आदमी को तलाश कर ले और उसे मुल्क — ए —
मिस्र पर मुख़्तार बनाए।
34 फ़िर'औन यह करे ताकि उस आदमी को इख़्तियार हो कि वह
मुल्क में नाज़िरों को मुक़र्रर कर दे, और अज़ानी के सात बरसों में
सारे मुल्क — ए — मिस्र की पैदावार का पाँचवा हिस्सा ले ले।
35 और वह उन अच्छे बरसों में जो आते हैं सब खाने की चीजें
जमा' करें और शहर — शहर में गल्ला जो फ़िर'औन के इख़्तियार
में हो, ख़ुराक के लिए फ़राहम करके उसकी हिफ़ाज़त करें।

36 यही ग़ल्ला मुल्क के लिए ज़ख़ीरा होगा, और सातों साल
के लिए जब तक मुल्क में काल रहेगा काफ़ी होगा, ताकि काल
की वजह से मुल्क बर्बाद न हो जाए।

### *[illegible]*

37 य बात फ़िर'औन और उसके सब ख़ादिमों को पसंद आई।
38 तब फ़िर'औन ने अपने ख़ादिमों से कहा कि क्या हम को
ऐसा आदमी जैसा यह है, जिसमें ख़ुदा का रूह है मिल सकता है?
39 और फ़िर'औन ने यूसुफ़ से कहा, चूँकि ख़ुदा ने तुझे यह
सब कुछ समझा दिया है, इसलिए तेरी तरह समझदार और
अक़्लमन्द कोई नहीं।
40 इसलिए तू मेरे घर का मुख़्तार होगा और मेरी सारी रि'आया
तेरे हुक्म पर चलेगी, सिर्फ़ तख़्त का मालिक होने की वजह से मैं
बुज़ुर्गतर हूँगा।
41 और फ़िर'औन ने यूसुफ़ से कहा कि देख, मैं तुझे सारे मुल्क
— ए — मिस्र का हाकिम बनाता हूँ
42 और फ़िर'औन ने अपनी अंगूठी अपने हाथ से निकाल कर
यूसुफ़ के हाथ में पहना दी, और उसे बारीक कतान के लिबास में
आरास्ता करवा कर सोने का हार उसके गले में पहनाया।
43 और उसने उसे अपने दूसरे रथ में सवार करा कर उसके आगे
— आगे यह 'ऐलान करवा दिया, कि घुटने टेको और उसने उसे
सारे मुल्क — ए — मिस्र का हाकिम बना दिया।
44 और फ़िर'औन ने यूसुफ़ से कहा, “मैं फ़िर'औन हूँ और तेरे
हुक्म के बग़ैर कोई आदमी इस सारे मुल्क — ए — मिस्र में अपना
हाथ या पाँव हिलाने न पाएगा।”
45 और फ़िर'औन ने यूसुफ़ का नाम सिफ़्नात फ़ा'नेह रख्खा,
और उसने ओन के पुजारी फ़ोतीफ़िरा' की बेटी आसिनाथ को
उससे ब्याह दिया, और यूसुफ़ मुल्क — ए — मिस्र में दौरा करने
लगा।

46 और यूसुफ़ तीस साल का था जब वह मिस्र के बादशाह
फ़िर'औन के सामने गया, और उसने फ़िर'औन के पास से रुख़्सत
हो कर सारे मुल्क — ए — मिस्र का दौरा किया।
47 और अज़ानी के सात बरसों में इफ़्रात से फ़स्ल हुई।
48 और वह लगातार सातों साल हर क़िस्म की ख़ुराक, जो मुल्क
— ए — मिस्र में पैदा होती थी, जमा' कर करके शहरों में उसका
ज़ख़ीरा करता गया। हर शहर की चारों तरफ़ो की ख़ुराक वह उसी
शहर में रखता गया।
49 और यूसुफ़ ने ग़ल्ला समुन्दर की रेत की तरह निहायत
कसरत से ज़ख़ीरा किया, यहाँ तक कि हिसाब रखना भी छोड़
दिया क्यूँ कि वह बे — हिसाब था।
50 और काल से पहले ओन के पुजारी फ़ोतीफ़िरा' की बेटी
आसिनाथ के यूसुफ़ से दो बेटे पैदा हुए।
51 और यूसुफ़ ने पहलौठे का नाम *मनस्सी यह कह कर रख्खा,
कि 'ख़ुदा ने मेरी और मेरे बाप के घर की सब मुसीबत मुझ से भुला
दी।
52 और दूसरे का नाम †इफ़्राईम यह कह कर रख्खा, कि 'ख़ुदा
ने मुझे मेरी मुसीबत के मुल्क में फलदार किया।
53 और अज़ानी के वह सात साल जो मुल्क — ए — मिस्र में
हुए तमाम हो गए, और यूसुफ़ के कहने के मुताबिक़ काल के सात
साल शुरू' हुए।
54 और सब मुल्कों में तो काल था लेकिन मुल्क — ए — मिस्र
में हर जगह ख़ुराक मौजूद थी।
55 और जब मुल्क — ए — मिस्र में लोग भूकों मरने लगे तो
रोटी के लिए फ़िर'औन के आगे चिल्लाए। फ़िर'औन ने मिस्रियों
से कहा कि यूसुफ़ के पास जाओ, जो कुछ वह तुम से कहे वह
करो।

---

* **41:51** फ़रामोश † **41:52** दो बार फलदार होना

56 और तमाम रू — ए — ज़मीन पर काल था; और यूसुफ़
अनाज के ज़खीरह को खुलवा कर मिस्रियों के हाथ बेचने लगा,
और मुल्क — ए — मिस्र में सख़्त काल हो गया।
57 और सब मुल्कों के लोग अनाज मोल लेने के लिए यूसुफ़ के
पास मिस्र में आने लगे, क्यूँकि सारी ज़मीन पर सख़्त काल पड़ा
था।

# 42

*[illegible]*

1 और या'क़ूब को मा'लूम हुआ कि मिस्र में ग़ल्ला है, तब उसने
अपने बेटों से कहा कि तुम क्यूँ एक दूसरे का मुँह ताकते हो?
2 देखो, मैंने सुना है कि मिस्र में ग़ल्ला है। तुम वहाँ जाओ और
वहाँ से हमारे लिए अनाज मोल ले आओ, ताकि हम ज़िन्दा रहें
और हलाक न हों।
3 तब यूसुफ़ के दस भाई ग़ल्ला मोल लेने को मिस्र में आए।
4 लेकिन या'क़ूब ने यूसुफ़ के भाई बिनयमीन को उसके भाइयों
के साथ न भेजा, क्यूँकि उसने कहा, कि कहीं उस पर कोई आफ़त
न आ जाए।
5 इसलिए जो लोग ग़ल्ला ख़रीदने आए उनके साथ इस्राईल
के बेटे भी आए, क्यूँकि कनान के मुल्क में काल था।
6 और यूसुफ़ मुल्क — ए — मिस्र का हाकिम था और वही
मुल्क के सब लोगों के हाथ ग़ल्ला बेचता था। तब यूसुफ़ के भाई
आए और अपने सिर ज़मीन पर टेक कर उसके सामने आदाब बजा
लाए।
7 यूसुफ़ अपने भाइयों को देख कर उनको पहचान गया; लेकिन
उसने उनके सामने अपने आप को अन्जान बना लिया और उनसे
सख़्त लहजे में पूछा, "तुम कहाँ से आए हो?" उन्होंने कहा,
"कना'न के मुल्क से अनाज मोल लेने को।"

8 यूसुफ़ ने तो अपने भाइयों को पहचान लिया था लेकिन
उन्होंने उसे न पहचाना।
9 और यूसुफ़ उन ख़्वाबों को जो उसने उनके बारे में देखे थे याद
करके उनसे कहने लगा कि तुम जासूस हो। तुम आए हो कि इस
मुल्क की बुरी हालत दरियाफ़्त करो।
10 उन्होंने उससे कहा, "नहीं ख़ुदावन्द! तेरे ग़ुलाम अनाज
मोल लेने आए हैं।
11 हम सब एक ही शख़्स के बेटे हैं। हम सच्चे हैं; तेरे ग़ुलाम
जासूस नहीं हैं।"
12 उसने कहा, "नहीं; बल्कि तुम इस मुल्क की बुरी हालत
दरियाफ़्त करने को आए हो।"
13 तब उन्होंने कहा, "तेरे ग़ुलाम बारह भाई एक ही शख़्स के
बेटे हैं जो मुल्क — ए — कना'न में है। सबसे छोटा इस वक़्त
हमारे बाप के पास है और एक का कुछ पता नहीं।"
14 तब यूसुफ़ ने उनसे कहा, "मैं तो तुम से कह चुका कि तुम
जासूस हो।
15 इसलिए तुम्हारी आज़माइश इस तरह की जाएगी कि
फ़िर'औन की हयात की क़सम, तुम यहाँ से जाने न पाओगे; जब
तक तुम्हारा सबसे छोटा भाई यहाँ न आ जाए।
16 इसलिए अपने में से किसी एक को भेजो कि वह तुम्हारे भाई
को ले आए और तुम क़ैद रहो, ताकि तुम्हारी बातों की तसदीक़
हो कि तुम सच्चे हो या नहीं; वरना फ़िर'औन की हयात की क़सम
तुम ज़रूर ही जासूस हो।"
17 और उसने उन सब को तीन दिन तक इकट्ठे नज़रबन्द रख्खा।
18 और तीसरे दिन यूसुफ़ ने उनसे कहा, "एक काम करो तो
ज़िन्दा रहोगे; क्यूँकि मुझे ख़ुदा का ख़ौफ़ है।
19 अगर तुम सच्चे हो तो अपने भाइयों में से एक को क़ैद खाने
में बन्द रहने दो, और तुम अपने घरवालों के खाने के लिए अनाज

ले जाओ।
20 और अपने सबसे छोटे भाई को मेरे पास ले आओ, यूँ तुम्हारी
बातों की तस्दीक़ हो जाएगी और तुम हलाक न होगे।" इसलिए
उन्होंने ऐसा ही किया।
21 और वह आपस में कहने लगे, "हम दरअसल अपने भाई की
वजह से मुजरिम ठहरे हैं; क्यूँकि जब उसने हम से मिन्नत की तो
हम ने यह देखकर भी, कि उसकी जान कैसी मुसीबत में है उसकी
न सुनी; इसी लिए यह मुसीबत हम पर आ पड़ी है।"
22 तब रूबिन बोल उठा, "क्या मैंने तुम से न कहा था कि इस
बच्चे पर ज़ुल्म न करो, और तुम ने न सुना; इसलिए देख लो,
अब उसके ख़ून का बदला लिया जाता है।"
23 और उनको मा'लूम न था कि यूसुफ़ उनकी बातें समझता है,
इसलिए कि उनके बीच एक तरजुमान था।
24 तब वह उनके पास से हट गया और रोया, और फिर उनके
पास आकर उनसे बातें कीं और उनमें से शमौन को लेकर उनकी
आँखों के सामने उसे बन्धवा दिया।
25 फिर यूसुफ़ ने हुक्म किया, कि उनके बोरों में अनाज भरें और
हर शख़्स की नकदी उसी के बोरे में रख दें, और उनको सफ़र का
सामान भी दे दें। चुनांचे उनके लिए ऐसा ही किया गया।
26 और उन्होंने अपने गधों पर ग़ल्ला लाद लिया और वहाँ से
रवाना हुए।
27 जब उनमें से एक ने मन्जिल पर अपने गधे को चारा देने के
लिए अपना बोरा खोला, तो अपनी नक़दी बोरे के मुँह में रख्खी
देखी।
28 तब उसने अपने भाइयों से कहा कि मेरी नक़दी वापस कर
दी गई है, वह मेरे बोरे में है, देख लो!' फिर तो वह घबरा गए और
हक्का — बक्का होकर एक दूसरे को देखने और कहने लगे, ख़ुदा
ने हम से यह क्या किया?
29 और वह मुल्क — ए — कना'न में अपने बाप या'क़ूब के

पास आए, और सारी वारदात उसे बताई और कहने लगे कि
30 उस शख़्स ने जो उस मुल्क का मालिक है हम से सख़्त लहजे
में बातें कीं, और हम को उस मुल्क के जासूस समझा।
31 हम ने उससे कहा कि हम सच्चे आदमी हैं; हम जासूस नहीं।
32 हम बारह भाई एक ही बाप के बेटे हैं; हम में से एक का कुछ
पता नहीं और सबसे छोटा इस वक़्त हमारे बाप के पास मुल्क —
ए — कना'न में है।
33 तब उस शख़्स ने जो मुल्क का मालिक है हम से कहा, 'मैं
इसी से जान लूँगा कि तुम सच्चे हो कि अपने भाइयों में से किसी
को मेरे पास छोड़ दो और अपने घरवालों के खाने के लिए अनाज
लेकर चले जाओ।
34 और अपने सबसे छोटे भाई को मेरे पास ले आओ; तब मैं
जान लूँगा कि तुम जासूस नहीं बल्कि सच्चे आदमी हो। और
मैं तुम्हारे भाई को तुम्हारे हवाले कर दूँगा, फिर तुम मुल्क में
सौदागरी करना'।
35 और यूँ हुआ कि जब उन्होंने अपने अपने बोरे ख़ाली किए
तो हर शख़्स की नक़दी की थैली उसी के बोरे में रख्खी देखी, और
वह और उनका बाप नक़दी की थैलियाँ देख कर डर गए।
36 और उनके बाप या'क़ूब ने उनसे कहा, "तुम ने मुझे बेऔलाद
कर दिया। यूसुफ़ नहीं रहा और शमौन भी नहीं है, और अब
बिनयमीन को भी ले जाना चाहते ही। ये सब बातें मेरे ख़िलाफ़
हैं।"
37 तब रूबिन ने अपने बाप से कहा, "अगर मैं उसे तेरे पास न
ले आऊँ तो तू मेरे दोनों बेटों को क़त्ल कर डालना। उसे मेरे हाथ
में सौंप दे और मैं उसे फिर तेरे पास पहुँचा दूँगा।"
38 उसने कहा, मेरा बेटा तुम्हारे साथ नहीं जाएगा; क्यूँकि
उसका भाई मर गया और वह अकेला रह गया है। अगर रास्ते
में जाते — जाते उस पर कोई आफ़त आ पड़े तो तुम मेरे सफ़ेद

बालों को ग़म के साथ क़ब्र में उतारोगे।

# 43

*[illegible]*

1 और काल मुल्क में और भी सख़्त हो गया।
2 और यूँ हुआ कि जब उस ग़ल्ले को जिसे मिस्र से लाए थे, खा
चुके तो उनके बाप ने उनसे कहा कि जाकर हमारे लिए फिर कुछ
अनाज मोल ले आओ।
3 तब यहूदाह ने उसे कहा कि उस शख़्स ने हम को निहायत
ताकीद से कह दिया था कि तुम मेरा मुँह न देखोगे, जब तक
तुम्हारा भाई तुम्हारे साथ न हो।
4 इसलिए अगर तू हमारे भाई को हमारे साथ भेज दे, तो हम
जाएँगे और तेरे लिए अनाज मोल लाएँगे।
5 और अगर तू उसे न भेजे तो हम नहीं जाएँगे; क्यूँकि उस
शख़्स ने कह दिया है कि तुम मेरा मुँह न देखोगे जब तक तुम्हारा
भाई तुम्हारे साथ न हो'।
6 तब इस्राईल ने कहा कि तुम ने मुझ से क्यूँ यह बदसुलूकी
की, कि उस शख़्स को बता दिया कि हमारा एक भाई और भी है?
7 उन्होंने कहा, "उस शख़्स ने बजिद्द हो कर हमारा और हमारे
ख़ान्दान का हाल पूछा कि 'क्या तुम्हारा बाप अब तक ज़िन्दा
है? और क्या तुम्हारा कोई और भाई है?' तो हम ने इन सवालों
के मुताबिक़ उसे बता दिया। हम क्या जानते थे कि वह कहेगा,
'अपने भाई को ले आओ'।"
8 तब यहूदाह ने अपने बाप इस्राईल से कहा कि उस लड़के को
मेरे साथ कर दे तो हम चले जाएँगे; ताकि हम और तू और हमारे
बाल बच्चे ज़िन्दा रहें और हलाक न हों।
9 और मैं उसका ज़िम्मेदार होता हूँ, तू उसको मेरे हाथ से वापस
माँगना। अगर मैं उसे तेरे पास पहुँचा कर सामने खड़ा न कर दूँ,
तो मैं हमेशा के लिए गुनहगार ठहरूँगा।

10 अगर हम देर न लगाते तो अब तक दूसरी दफ़ा' लौट कर
आ भी जाते।
11 तब उनके बाप इस्राईल ने उनसे कहा, "अगर यही बात है
तो ऐसा करो कि अपने बर्तनों में इस मुल्क की मशहूर पैदावार में
से कुछ उस शख़्स के लिए नज़राना लेते जाओ; जैसे थोड़ा सा
रौग़ान — ए — बलसान, थोड़ा सा शहद, कुछ गर्म मसाले, और
मुर और पिस्ता और बादाम,
12 और दूना दाम अपने हाथ में ले लो, और वह नक़दी जो फेर
दी गई और तुम्हारे बोरों के मुँह में रख्खी मिली अपने साथ वापस
ले जाओ; क्यूँकि शायद भूल हो गई होगी।
13 और अपने भाई को भी साथ लो, और उठ कर फिर उस शख़्स
के पास जाओ।
14 और ख़ुदा — ए — क़ादिर उस शख़्स को तुम पर मेहरबानी
करे, ताकि वह तुम्हारे दूसरे भाई को और बिनयमीन को तुम्हारे
साथ भेज दे। मैं अगर बे — औलाद हुआ तो हुआ।"
15 तब उन्होंने नज़राना लिया और दूना दाम भी हाथ में ले
लिया, और बिनयमीन को लेकर चल पड़े; और मिस्र पहुँच कर
यूसुफ़ के सामने जा खड़े हुए।
16 जब यूसुफ़ ने बिनयमीन को उनके साथ देखा तो उसने अपने
घर के मुन्तज़िम से कहा, "इन आदमियों को घर में ले जा, और
कोई जानवर ज़बह करके खाना तैयार करवा; क्यूँकि यह आदमी
दोपहर को मेरे साथ खाना खाएँगे।"
17 उस शख़्स ने जैसा यूसुफ़ ने फ़रमाया था किया, और इन
आदमियों को यूसुफ़ के घर में ले गया।
18 जब इनको यूसुफ़ के घर में पहुँचा दिया तो डर के मारे कहने
लगे, "वह नक़दी जो पहली दफ़ा' हमारे बोरों में रख कर वापस कर
दी गई थी, उसी की वजह से हम को अन्दर करवा दिया है; ताकि
उसे हमारे ख़िलाफ़ बहाना मिल जाए और वह हम पर हमला करके

हम को ग़ुलाम बना ले और हमारे गधों को छीन ले।”

### [illegible]

19 और वह यूसुफ़ के घर के मुन्तज़िम के पास गए और दरवाज़े
पर खड़े होकर उससे कहने लगे,
20 “जनाब, हम पहले भी यहाँ अनाज मोल लेने आए थे;
21 और यूँ हुआ कि जब हम ने मंज़िल पर उतर कर अपने बोरों
को खोला, तो अपनी अपनी पूरी तौली हुई नक़दी अपने अपने
बोरे के मुँह में रख्खी देखी, इसलिए हम उसे अपने साथ वापस
लेते आए हैं।
22 और हम अनाज मोल लेने को और भी नक़दी साथ लाए हैं,
ये हम नहीं जानते के हमारी नक़दी किसने हमारे बोरों में रख दी।”
23 उसने कहा कि तुम्हारी सलामती हो, मत डरो! तुम्हारे ख़ुदा
और तुम्हारे बाप के ख़ुदा ने तुम्हारे बोरों में तुम को ख़ज़ाना दिया
होगा, मुझे तो तुम्हारी नक़दी मिल चुकी। फिर वह शमौन को
निकाल कर उनके पास ले आया।
24 और उस शख़्स ने उनको यूसुफ़ के घर में लाकर पानी दिया,
और उन्होंने अपने पाँव धोए; और उनके गधों को चारा दिया।
25 फिर उन्होंने यूसुफ़ के इन्तिज़ार में कि वह दोपहर को
आएगा, नज़राना तैयार करके रख्खा; क्यूँकि उन्होंने सुना था कि
उनको वहीं रोटी खानी है।
26 जब यूसुफ़ घर आया, तो वह उस नज़राने को जो उनके पास
था उसके सामने ले गए, और ज़मीन पर झुक कर उसके सामने
आदाब बजा लाए।
27 उसने उनसे ख़ैर — ओ — 'आफियत पूछी और कहा कि
तुम्हारा बूढ़ा बाप जिसका तुम ने ज़िक्र किया था अच्छा तो है?
क्या वह अब तक ज़िन्दा है?

28 उन्होंने जवाब दिया, “तेरा ख़ादिम हमारा बाप ख़ैरियत से
है; और अब तक ज़िन्दा है।” फिर वह सिर झुका — झुका कर
उसके सामने आदाब बजा लाए।
29 फिर उसने आँख उठा कर अपने भाई बिनयमीन को जो
उसकी माँ का बेटा था, देखा और कहा कि तुम्हारा सबसे छोटा
भाई जिसका ज़िक्र तुम ने मुझ से किया था यही है? फिर कहा कि
ऐ मेरे बेटे! ख़ुदा तुझ पर मेहरबान रहे।
30 तब यूसुफ़ ने जल्दी की क्यूँकि भाई को देख कर उसका जी
भर आया, और वह चाहता था कि कहीं जाकर रोए। तब वह
अपनी कोठरी में जा कर वहाँ रोने लगा।
31 फिर वह अपना मुँह धोकर बाहर निकला और अपने को
बर्दाश्त करके हुक्म दिया कि खाना लगाओ।
32 और उन्होंने उसके लिए अलग और उनके लिए जुदा, और
मिस्रियों के लिए, जो उसके साथ खाते थे, जुदा खाना लगाया;
क्यूँकि मिस्र के लोग इब्रानियों के साथ खाना नहीं खा सकते थे,
क्यूँकि मिस्रियों को इससे कराहियत है।
33 और यूसुफ़ के भाई उसके सामने तरतीबवार अपनी उम्र की
बड़ाई और छोटाई के मुताबिक़ बैठे और आपस में हैरान थे।
34 फिर वह अपने सामने से खाना उठा कर हिस्से कर — कर
के उनको देने लगा, और बिनयमीन का हिस्सा उनके हिस्सों से
पाँच गुना ज़्यादा था। और उन्होंने मय पी और उसके साथ ख़ुशी
मनाई।

# 44

*[illegible]*

1 फिर उसने अपने घर के मुन्ताज़िम को यह हुक्म किया कि इन
आदमियों के बोरों में जितना अनाज वह लेजा सकें भर दे, और
हर शख़्स की नक़दी उसी के बोरे के मुँह में रख दे;

2 और मेरा चाँदी का प्याला सबसे छोटे के बोरे के मुँह में उसकी
नक़दी के साथ रखना। चुनांचे उसने यूसुफ़ के फ़रमाने के मुताबिक़
'अमल किया।
3 सुबह रौशनी होते ही यह आदमी अपने गधों के साथ रुख़्सत
कर दिए गए।
4 वह शहर से निकल कर अभी दूर भी नहीं गए थे कि यूसुफ़
ने अपने घर के मुन्तज़िम से कहा, जा! उन लोगों का पीछा कर;
और जब तू उनको पा ले तो उनसे कहना, 'नेकी के बदले तुम ने
बदी क्यूँ की?
5 क्या यह वही चीज़ नहीं जिससे मेरा आक़ा पीता और इसी
से ठीक फ़ाल भी खोला करता है? तुम ने जो यह किया इसलिए
बुरा किया'
6 और उसने उनको पा लिया और यही बातें उनसे कहीं।
7 तब उन्होंने उससे कहा कि हमारा ख़ुदावन्द, ऐसी बातें क्यूँ
कहता है? ख़ुदा न करे कि तेरे ख़ादिम ऐसा काम करें
8 भला, जो नक़दी हम को अपने बोरों के मुँह में मिली, उसे तो
हम मुल्क — ए — कना'न से तेरे पास वापस ले आए; फिर तेरे
आक़ा के घर से चाँदी या सोना क्यूँ कर चुरा सकते हैं?
9 इसलिए तेरे ख़ादिमों में से जिस किसी के पास वह निकले
वह मार दिया जाए, और हम भी अपने ख़ुदावन्द के ग़ुलाम हो
जाएँगे।
10 उसने कहा कि तुम्हारा ही कहना सही, जिसके पास वह
निकल आए वह मेरा ग़ुलाम होगा, और तुम बेगुनाह ठहरोगे।
11 तब उन्होंने जल्दी की, और एक — एक ने अपना बोरा
ज़मीन पर उतार लिया और हर शख़्स ने अपना बोरा खोल दिया।
12 तब वह ढूँढने लगा और सबसे बड़े से शुरू' करके सबसे छोटे
पर तलाशी ख़त्म की, और प्याला बिनयमीन के बोरे में मिला।
13 तब उन्होंने अपने लिबास चाक किए और हर एक अपने गधे

को लादकर उल्टा शहर को फिरा।
14 और यहूदाह और उसके भाई यूसुफ़ के घर आए, वह अब
तक वहीं था; तब वह उसके आगे ज़मीन पर गिरे।
15 तब यूसुफ़ ने उनसे कहा, "तुम ने यह कैसा काम किया? क्या
तुम को मा'लूम नहीं कि मुझ सा आदमी ठीक फ़ाल खोलता है?"
16 यहूदाह ने कहा कि हम अपने ख़ुदावन्द से क्या कहें? हम
क्या बात करें? या क्यूँ कर अपने को बरी ठहराएँ? ख़ुदा ने तेरे
ख़ादिमों की बदी पकड़ ली। इसलिए देख, हम भी और वह भी
जिसके पास प्याला निकला, दोनों अपने ख़ुदावन्द के ग़ुलाम हैं।
17 उसने कहा कि ख़ुदा न करे कि मैं ऐसा करूँ; जिस शख़्स के
पास यह प्याला निकला वही मेरा ग़ुलाम होगा, और तुम अपने
बाप के पास सलामत चले जाओ।

### [illegible]

18 तब यहूदाह उसके नज़दीक जाकर कहने लगा, "ऐ मेरे
ख़ुदावन्द! ज़रा अपने ख़ादिम को इजाज़त दे कि अपने ख़ुदावन्द
के कान में एक बात कहे; और तेरा ग़ज़ब तेरे ख़ादिम पर न भड़के,
क्यूँकि तू फ़िर'औन की तरह है।
19 मेरे ख़ुदावन्द ने अपने ख़ादिमों से सवाल किया था कि
तुम्हारा बाप या तुम्हारा भाई है?
20 और हम ने अपने ख़ुदावन्द से कहा था, 'हमारा एक बूढ़ा बाप
है और उसके बुढ़ापे का एक छोटा लड़का भी है; और उसका भाई
मर गया है और वह अपनी माँ का एक ही रह गया है, इसलिए
उसका बाप उस पर जान देता है।
21 तब तूने अपने ख़ादिमों से कहा, 'उसे मेरे पास ले आओ कि
मैं उसे देखूँ।
22 हम ने अपने ख़ुदावन्द को बताया, 'वह लड़का अपने बाप
को छोड़ नहीं सकता, क्यूँकि अगर वह अपने बाप को छोड़े तो
उसका बाप मर जाएगा।

23 फिर तूने अपने ख़ादिमों से कहा कि जब तक तुम्हारा छोटा
भाई तुम्हारे साथ न आए, तुम फिर मेरा मुँह न देखोगे।"
24 और यूँ हुआ कि जब हम अपने बाप के पास, जो तेरा ख़ादिम
है, पहुँचे तो हम ने अपने ख़ुदावन्द की बातें उससे कहीं।
25 हमारे बाप ने कहा, "फिर जा कर हमारे लिए कुछ अनाज
मोल लाओ।"
26 हम ने कहा, "हम नहीं जा सकते; अगर हमारा सबसे छोटा
भाई हमारे साथ हो तो हम जाएँगे। क्यूँकि जब तक हमारा सबसे
छोटा भाई हमारे साथ न हो, हम उस शख़्स का मुँह न देखेंगे।"
27 और तेरे ख़ादिम मेरे बाप ने हम से कहा, "तुम जानते हो कि
मेरी बीवी के मुझ से दो बेटे हुए।
28 एक तो मुझे छोड़ ही गया और मैंने ख़्याल किया कि वह
ज़रूर फाड़ डाला गया होगा; और मैंने उसे उस वक़्त से फिर नहीं
देखा।
29 अब अगर तुम इसको भी मेरे पास से ले जाओ और इस पर
कोई आफ़त आ पड़े, तो तुम मेरे सफ़ेद बालों को ग़म के साथ क़ब्र
में उतारोगे।"
30 "इसलिए अब अगर मैं तेरे ख़ादिम अपने बाप के पास जाऊँ
और यह लड़का हमारे साथ न हो, तो चूँकि उसकी जान इस लड़के
की जान के साथ जुड़ी है।
31 वह यह देख कर कि लड़का नहीं आया मर जाएगा, और तेरे
ख़ादिम अपने बाप के, जो तेरा ख़ादिम है, सफ़ेद बालों को ग़म
के साथ क़ब्र में उतारेंगे।
32 और तेरा ख़ादिम अपने बाप के सामने इस लड़के का
ज़िम्मेदार भी हो चुका है और यह कहा है किअगर मैं इसे तेरे पास
वापस न पहुँचा दूँ तो मैं हमेशा के लिए अपने बाप का गुनहगार
ठहरूंगा।
33 इसलिए अब तेरे ख़ादिम की इजाज़त हो कि वह इस लड़के
के बदले अपने ख़ुदावन्द का ग़ुलाम हो कर रह जाए, और यह

लड़का अपने भाइयों के साथ चला जाए।
34 क्यूँकि लड़के के बग़ैर मैं क्या मुँह लेकर अपने बाप के पास
जाऊँ? कहीं ऐसा न हो कि मुझे वह मुसीबत देखनी पड़े, जो ऐसे
हाल में मेरे बाप पर आएगी।”

# 45

### [illegible]

1 तब यूसुफ़ उनके आगे जो उसके आस पास खड़े थे, अपने को
रोक न कर सका और चिल्ला कर कहा, “हर एक आदमी को मेरे
पास से बाहर कर दो।” चुनांचे जब यूसुफ़ ने अपने आप को अपने
भाइयों पर ज़ाहिर किया उस वक़्त और कोई उसके साथ न था।
2 और वह ज़ोर ज़ोर से रोने लगा; और मिस्रियों ने सुना, और
फ़िर'औन के महल में भी आवाज़ गई।
3 और यूसुफ़ ने अपने भाइयों से कहा, “मैं यूसुफ़ हूँ! क्या मेरा
बाप अब तक ज़िन्दा है?” और उसके भाई उसे कुछ जवाब न दे
सके, क्यूँकि वह उसके सामने घबरा गए।
4 और यूसुफ़ ने अपने भाइयों से कहा, “ज़रा नज़दीक आ
जाओ।” और वह नज़दीक आए। तब उसने कहा, “मैं तुम्हारा भाई
यूसुफ़ हूँ, जिसको तुम ने बेच कर मिस्र पहुँचवाया।
5 और इस बात से कि तुम ने मुझे बेच कर यहाँ पहुँचवाया, न
तो ग़मगीन हो और न अपने — अपने दिल में परेशान हो; क्यूँकि
ख़ुदा ने जानों को बचाने के लिए मुझे तुम से आगे भेजा।
6 इसलिए कि अब दो साल से मुल्क में काल है, और अभी पाँच
साल और ऐसे हैं जिनमें न तो हल चलेगा और न फसल कटेगी।
7 और ख़ुदा ने मुझ को तुम्हारे आगे भेजा, ताकि तुम्हारा
बक़िया ज़मीन पर सलामत रक्खे और तुम को बड़ी रिहाई के
वसीले से ज़िन्दा रक्खे।

8 फिर तुम ने नहीं बल्कि ख़ुदा ने मुझे यहाँ भेजा, और उसने
मुझे गोया फ़िर'औन का बाप और उसके सारे घर का ख़ुदावन्द
और सारे मुल्क — ए — मिस्र का हाकिम बनाया।
9 इसलिए तुम जल्द मेरे बाप के पास जाकर उससे कहो, 'तेरा
बेटा यूसुफ़ यूँ कहता है, कि ख़ुदावन्द ने मुझ को सारे मिस्र का
मालिक कर दिया है। तू मेरे पास चला आ, देर न कर।
10 तू जशन के इलाक़े में रहना, और तू और तेरे बेटे और तेरे
पोते और तेरी भेड़ बकरियाँ और गायें बैल और तेरा माल ओ —
मता'अ, यह सब मेरे नज़दीक होंगे।
11 और वहीं मैं तेरी परवरिश करूँगा; ऐसा न हो कि तुझ को
और तेरे घराने और तेरे माल — ओ — मता'अ को ग़रीबी आ
दबाए, क्यूँकि काल के अभी पाँच साल और हैं।
12 और देखो, तुम्हारी आँखें और मेरे भाई बिनयमीन की आँखें
देखती हैं कि खुद मेरे मुँह से ये बातें तुम से हो रही हैं।
13 और तुम मेरे बाप से मेरी सारी शान — ओ — शौकत का
जो मुझे मिस्र में हासिल है, और जो कुछ तुम ने देखा है सबका
ज़िक्र करना; और तुम बहुत जल्द मेरे बाप को यहाँ ले आना।"
14 और वह अपने भाई बिनयमीन के गले लग कर रोया और
बिनयमीन भी उसके गले लगकर रोया।
15 और उसने सब भाइयों को चूमा और उनसे मिल कर रोया,
इसके बाद उसके भाई उससे बातें करने लगे।

### [illegible]

16 और फ़िर'औन के महल में इस बात का ज़िक्र हुआ कि यूसुफ़
के भाई आए हैं और इस से फ़िर'औन के नौकर चाकर बहुत खुश
हुए।
17 और फ़िर'औन ने यूसुफ़ से कहा कि अपने भाइयों से कह,
"तुम यह काम करो कि अपने जानवरों को लाद कर मुल्क — ए
— कना'न को चले जाओ।

18 और अपने बाप को और अपने — अपने घराने को लेकर मेरे
पास आ जाओ, और जो कुछ मुल्क — ए — मिस्र में अच्छे से
अच्छा है वह मैं तुम को दूँगा और तुम इस मुल्क की उम्दा उम्दा
चीज़ें खाना।
19 तुझे हुक्म मिल गया है, कि उनसे कहे, 'तुम यह करो कि
अपने बाल बच्चों और अपनी बीवियों के लिए मुल्क — ए —
मिस्र से अपने साथ गाड़ियाँ ले जाओ, और अपने बाप को भी
साथ लेकर चले आओ।
20 और अपने अस्बाब का कुछ अफ़सोस न करना, क्यूँकि मुल्क
— ए — मिस्र की सब अच्छी चीज़ें तुम्हारे लिए हैं।"
21 और इस्राईल के बेटों ने ऐसा ही किया; और यूसुफ़ ने
फ़िर'औन के हुक्म के मुताबिक़ उनको गाड़ियाँ दीं और सफ़र का
सामान भी दिया।
22 और उसने उनमें से हर एक को एक — एक जोड़ा कपड़ा
दिया, लेकिन बिनयमीन को चाँदी के *तीन सौ सिक्के और पाँच
जोड़े कपड़े दिए।
23 और अपने बाप के लिए उसने यह चीज़ें भेजीं, या'नी दस
गधे जो मिस्र की अच्छी चीज़ों से लदे हुए थे, और दस गधियाँ
जो उसके बाप के रास्ते के लिए ग़ल्ला और रोटी और सफ़र के
सामान से लदी हुई थीं।
24 चुनांचे उसने अपने भाइयों को रवाना किया और वह चल
पड़े; और उसने उनसे कहा, "देखना, कहीं रास्ते में तुम झगड़ा न
करना।"
25 और वह मिस्र से रवाना हुए और मुल्क — ए — कना'न में
अपने बाप या'क़ूब के पास पहुँचे,
26 और उससे कहा, "यूसुफ़ अब तक ज़िन्दा है और वही सारे
मुल्क — ए — मिस्र का हाकिम है।" और या'क़ूब का दिल धक
से रह गया, क्यूँकि उसने उनका यक़ीन न किया।

---

* **45:22** 1: 3:5किलोग्राम चांदी

27 तब उन्होंने उसे वह सब बातें जो यूसुफ़ ने उनसे कही थीं
बताई, और जब उनके बाप या'क़ूब ने वह गाड़ियाँ देख लीं जो
यूसुफ़ ने उसके लाने को भेजीं थीं, तब उसकी जान में जान आई।
28 और इस्राईल कहने लगा, "यह बस है कि मेरा बेटा यूसुफ़
अब तक ज़िन्दा है। मैं अपने मरने से पहले जाकर उसे देख तो
लूँगा।"

# 46

### *[illegible]*

1 और इस्राईल अपना सब कुछ लेकर चला और बैरसबा' में
आकर अपने बाप इस्हाक़ के ख़ुदा के लिए क़ुर्बानियाँ पेश कीं।
2 और ख़ुदा ने रात को ख़्वाब में इस्राईल से बातें कीं और कहा,
ऐ या'क़ूब, ऐ या'क़ूब! "उसने जवाब दिया, मैं हाज़िर हूँ।"
3 उसने कहा, "मैं ख़ुदा, तेरे बाप का ख़ुदा हूँ! मिस्र में जाने से
न डर, क्यूँकि मैं वहाँ तुझ से एक बड़ी क़ौम पैदा करूँगा।
4 मैं तेरे साथ मिस्र को जाऊँगा और फिर तुझे ज़रूर लौटा भी
लाऊँगा, और यूसुफ़ अपना हाथ तेरी आँखों पर लगाएगा।"
5 तब या'क़ूब बैरसबा' से रवाना हुआ, और इस्राईल के बेटे
अपने बाप या'क़ूब को और अपने बाल बच्चों और अपनी बीवियों
को उन गाड़ियों पर ले गए जो फ़िर'औन ने उनके लाने को भेजीं
थीं।
6 और वह अपने चौपायों और सारे माल — ओ — अस्बाब को
जो उन्होंने मुल्क — ए — कना'न में जमा' किया था लेकर मिस्र
में आए, और या'क़ूब के साथ उसकी सारी औलाद थी।
7 वह अपने बेटों और बेटियों और पोतों और पोतियों, और
अपनी कुल नसल को अपने साथ मिस्र में ले आया।
8 और या'क़ूब के साथ जो इस्राईली या'नी उसके बेटे वग़ैरा
मिस्र में आए उनके नाम यह हैं: रूबिन, या'क़ूब का पहलौठा।

9 और बनी रूबिन यह हैं: हनूक और फ़ल्लू और हसरोन और
करमी।
10 और बनी शमौन यह हैं: यमूएल और यमीन और उहद और
यकीन और सुहर और साऊल, जो एक कना'नी 'औरत से पैदा
हुआ था।
11 और बनी लावी यह हैं: जैरसोन और किहात और मिरारी।
12 और बनी यहूदाह यह हैं: 'एर और ओनान और सीला, और
फ़ारस और ज़ारह — इनमें से 'एर और ओनान मुल्क — ए —
कना'न में मर चुके थे। और फ़ारस के बेटे यह हैं: हसरोन और
हमूल।
13 और बनी इश्कार यह हैं: तोला' और फूवा और योब और
सिमरोन।
14 और बनी ज़बूलून यह हैं: सरद और एलोन और यहलीएल।
15 यह सब या'क़ूब के उन बेटों की औलाद हैं जो फ़द्दान अराम
में लियाह से पैदा हुए, इसी के बत्न से उसकी बेटी दीना थी। यहाँ
तक तो उसके सब बेटे बेटियों का शुमार तैंतीस हुआ।
16 बनी जद्द यह हैं: सफ़ियान और हज्जी और सूनी और
असबान और 'एरी और अरूदी और अरेली।
17 और बनी आशर यह हैं: यिमना और इसवाह और इसवी
और बरि'आह और सिर्राह उनकी बहन और बनी बरी'आह यह हैं:
हिब्र और मलकीएल।
18 यह सब या'क़ूब के उन *बेटों की औलाद हैं जो ज़िल्फ़ा
लौंडी से पैदा हुए, जिसे लाबन ने अपनी बेटी लियाह को दिया
था। उनका शुमार सोलह था।
19 और या'क़ूब के बेटे यूसुफ़ और बिनयमीन राख़िल से पैदा
हुए थे।
20 और यूसुफ़ से मुल्क — ए — मिस्र में ओन के पुजारी

* **46:18** बच्चे, नाती पोते

फ़ोतीफ़िरा' की बेटी आसिनाथ के मनस्सी और इफ़्राईम पैदा हुए।
21 और बनी बिनयमीन यह हैं: बाला' और बक्र और अशबेल
और जीरा और ना'मान, अख़ी और रोस, मुफ़्फ़ीम और हुफ़्फ़ीम
और अरद।
22 यह सब या'क़ूब के उन बेटों की औलाद हैं जो राख़िल से
पैदा हुए। यह सब शुमार में चौदह थे।
23 और दान के बेटे का नाम हशीम था।
24 और बनी नफ़्ताली यह हैं: यहसीएल और जूनी और यिस्र
और सलीम।
25 यह सब या'क़ूब के उन बेटों की औलाद हैं जो बिल्हाह लौंडी
से पैदा हुए, जिसे लाबन ने अपनी बेटी राख़िल को दिया था।
इनका शुमार सात था।
26 या'क़ूब के सुल्ब से जो लोग पैदा हुए और उसके साथ मिस्र
में आए वह उसकी बहुओं को छोड़ कर शुमार में छियासठ थे।
27 और यूसुफ़ के दो बेटे थे जो मिस्र में पैदा हुए, इसलिए
या'क़ूब के घराने के जो लोग मिस्र में आए वह सब मिल कर सत्तर
हुए।

### [illegible]

28 और उसने यहूदाह को अपने से आगे यूसुफ़ के पास भेजा
ताकि वह उसे जशन का रास्ता दिखाए, और वह जशन के 'इलाक़े
में आए।
29 और यूसुफ़ अपना रथ तैयार करवा के अपने बाप इस्राईल
के इस्तक़बाल के लिए जशन को गया, और उसके पास जाकर
उसके गले से लिपट गया और वहीं लिपटा हुआ देर तक रोता
रहा।
30 तब इस्राईल ने यूसुफ़ से कहा, "अब चाहे मैं मर जाऊँ;
क्यूँकि तेरा मुँह देख चुका कि तू अभी ज़िन्दा है।"

31 और यूसुफ़ ने अपने भाइयों से और अपने बाप के घराने से
कहा, मैं अभी जाकर फ़िर'औन को ख़बर कर दूँगा और उससे कह
दूँगा कि मेरे भाई और मेरे बाप के घराने के लोग, जो मुल्क — ए
— कना'न में थे मेरे पास आ गए हैं।
32 और वह चौपान हैं; क्यूँकि बराबर चौपायों को पालते आए
हैं, और वह अपनी भेड़ बकरियाँ और गाय — बैल और जो कुछ
उनका है सब ले आए हैं।
33 तब जब फ़िर'औन तुम को बुला कर पूछे कि तुम्हारा पेशा
क्या है?
34 तो तुम यह कहना कि तेरे ख़ादिम, हम भी और हमारे बाप
दादा भी, लड़कपन से लेकर आज तक चौपाये पालते आए हैं।
तब तुम जशन के इलाक़े में रह सकोगे, इसलिए कि मिस्रियों को
चौपानों से नफ़रत है।

# 47

*[illegible]*

1 तब यूसुफ़ ने आकर फ़िर'औन को ख़बर दी कि मेरा बाप और
मेरे भाई और उनकी भेड़ बकरियाँ और गाय बैल और उनका सारा
माल — ओ — सामान' मुल्क — ए — कना'न से आ गया है,
और अभी तो वह सब जशन के 'इलाक़े में हैं।
2 फिर उसने अपने भाइयों में से पाँच को अपने साथ लिया और
उनको फ़िर'औन के सामने हाज़िर किया।
3 और फ़िर'औन ने उसके भाइयों से पूछा, "तुम्हारा पेशा क्या
है?" उन्होंने फ़िर'औन से कहा, "तेरे ख़ादिम चौपान हैं जैसे हमारे
बाप दादा थे।"
4 फिर उन्होंने फ़िर'औन से कहा कि हम इस मुल्क में
मुसाफ़िराना तौर पर रहने आए हैं, क्यूँकि मुल्क — ए — कना'न
में सख़्त काल होने की वजह से वहाँ तेरे खादिमों के चौपायों के

लिए चराई नहीं रही। इसलिए करम करके अपने ख़ादिमों को
जशन के 'इलाक़े में रहने दे।
5 तब फ़िर'औन ने यूसुफ़ से कहा कि तेरा बाप और तेरे भाई
तेरे पास आ गए हैं।
6 मिस्र का मुल्क तेरे आगे पड़ा है, यहाँ के अच्छे से अच्छे
इलाक़े में अपने बाप और भाइयों को बसा दे, या'नी जशन ही के
'इलाक़े में उनको रहने दे, और अगर तेरी समझ में उनमें होशियार
आदमी भी हों तो उनको मेरे चौपायों पर मुक़र्रर कर दे।
7 और यूसुफ़ अपने बाप या'क़ूब को अन्दर लाया और उसे
फ़िर'औन के सामने हाज़िर किया, और या'क़ूब ने फ़िर'औन को
दुआ दी।
8 और फ़िर'औन ने या'क़ूब से पूछा कि तेरी उम्र कितने साल
की है?
9 या'क़ूब ने फ़िर'औन से कहा कि मेरी मुसाफ़िरत के साल एक
सौ तीस हैं; मेरी ज़िन्दगी के दिन थोड़े और दुख से भरे हुए रहे, और
अभी यह इतने हुए भी नही हैं जितने मेरे बाप दादा की ज़िन्दगी
के दिन उनके दौर — ए — मुसाफ़िरत में हुए।
10 और या'क़ूब फ़िर'औन को दुआ दे कर उसके पास से चला
गया।
11 और यूसुफ़ ने अपने बाप और अपने भाइयों को बसा दिया
और फ़िर'औन के हुक्म के मुताबिक़ रा'मसीस के इलाक़े को, जो
मुल्क — ए — मिस्र का निहायत हरा भरा 'इलाक़ा है उनकी
जागीर ठहराया।
12 और यूसुफ़ अपने बाप और अपने भाइयों और अपने बाप
के घर के सब आदमियों की परवरिश, एक — एक के ख़ान्दान की
ज़रूरत के मुताबिक़ अनाज से करने लगा।

13 और उस सारे मुल्क में खाने को कुछ न रहा, क्यूँकि काल
ऐसा सख़्त था कि मुल्क — ए — मिस्र और मुल्क — ए — कना'न
दोनों काल की वजह से तबाह हो गए थे।
14 और जितना रुपया मुल्क — ए — मिस्र और मुल्क — ए
— कना'न में था वह सब यूसुफ़ ने उस ग़ल्ले के बदले, जिसे लोग
ख़रीदते थे, ले ले कर जमा' कर लिया और सब रुपये को उसने
फ़िर'औन के महल में पहुँचा दिया।
15 और जब वह सारा रुपया, जो मिस्र और कनान के मुल्कों में
था, ख़र्च हो गया तो मिस्री यूसुफ़ के पास आकर कहने लगे, "हम
को अनाज दे; क्यूँकि रुपया तो हमारे पास रहा नहीं। हम तेरे होते
हुए क्यूँ। मरें?"
16 यूसुफ़ ने कहा कि अगर रुपया नहीं हैं तो अपने चौपाये दो;
और मैं तुम्हारे चौपायों के बदले तुम को अनाज दूँगा।
17 तब वह अपने चौपाये यूसुफ़ के पास लाने लगे और गाय
बैलों और गधों के बदले उनको अनाज देने लगा; और पूरे साल
भर उनको उनके सब चौपायों के बदले अनाज खिलाया।
18 जब यह साल गुज़र गया तो वह दूसरे साल उसके पास आ
कर कहने लगे कि इसमें हम अपने ख़ुदावन्द से कुछ नहीं छिपाते
कि हमारा सारा रुपया खर्च हो चुकाऔर हमारे चौपायों के गल्लों
का मालिक भी हमारा ख़ुदावन्द हो गया है। और हमारा ख़ुदावन्द
देख चुका है कि अब हमारे जिस्म और हमारी ज़मीन के अलावा
कुछ बाक़ी नहीं।
19 फिर ऐसा क्यूँ हो कि तेरे देखते — देखते हम भी मरें और
हमारी ज़मीन भी उजड़ जाए? इसलिए तू हम को और हमारी
ज़मीन को अनाज के बदले ख़रीद ले कि हम फ़िर'औन के ग़ुलाम
बन जाएँ, और हमारी ज़मीन का मालिक भी वही हो जाए और
हम को बीज दे ताकि हम हलाक न हों बल्कि ज़िन्दा रहें और मुल्क
भी वीरान न हो।

20 और यूसुफ़ ने मिस्र की सारी ज़मीन फ़िर'औन के नाम पर
ख़रीद ली; क्यूँकि काल से तंग आ कर मिस्रियों में से हर शख़्स ने
अपना खेत बेच डाला। तब सारी ज़मीन फ़िर'औन की हो गई।
21 और मिस्र के एक सिरे से लेकर दूसरे सिरे तक जो लोग रहते
थे उनको उसने शहरों में बसाया। *
22 लेकिन पुजारियों की ज़मीन उसने न ख़रीदी, क्यूँकि
फ़िर'औन की तरफ़ से पुजारियों को ख़ुराक मिलती थी। इसलिए
वह अपनी — अपनी ख़ुराक, जो फ़िर'औन उनको देता था खाते
थे इसलिए उन्होंने अपनी ज़मीन न बेची।
23 तब यूसुफ़ ने वहाँ के लोगों से कहा, कि देखो, मैंने आज के
दिन तुम को और तुम्हारी ज़मीन को फ़िर'औन के नाम पर ख़रीद
लिया है। इसलिए तुम अपने लिए यहाँ से बीज लो और खेत बो
डालो।
24 और फ़सल पर पाँचवाँ हिस्सा फ़िर'औन को दे देना और
बाक़ी चार तुम्हारे रहे, ताकि खेती के लिए बीज के भी काम आएँ,
और तुम्हारे और तुम्हारे घर के आदमियों और तुम्हारे बाल बच्चों
के लिए खाने को भी हो।
25 उन्होंने कहा, कि तूने हमारी जान बचाई है, हम पर हमारे
ख़ुदावन्द के करम की नज़र रहे और हम फ़िर'औन के ग़ुलाम बने
रहेंगे।
26 और यूसुफ़ ने यह कानून जो आज तक है मिस्र की ज़मीन
के लिए ठहराया, के फ़िर'औन पैदावार का पाँचवाँ हिस्सा लिया
करे। इसलिए सिर्फ़ पुजारियों की ज़मीन ऐसी थी जो फ़िर'औन
की न हुई।
27 और इस्राईली मुल्क — ए — मिस्र में जशन के इलाक़े में
रहते थे, और उन्होंने अपनी जायदादें खड़ी कर लीं और वह बढ़े

* **47:21** और यूसुफ ने मिस्र के एक किनारे से लेकर दूसरे किनारे तक लोगों को गुलाम बनाया: और यूसुफ ने लोगों को सबब बनाया कि वह मिस्र के फ़रक फ़रक शहरों में बसे रहें

और बहुत ज़्यादा हो गए।
28 और या'क़ूब मुल्क — ए — मिस्र में सत्रह साल और जिया;
तब या'क़ूब की कुल उम्र एक सौ सैंतालीस साल की हुई।
29 और इस्राईल के मरने का वक़्त नज़दीक आया; तब उसने
अपने बेटे यूसुफ़ को बुला कर उससे कहा, "अगर मुझ पर तेरे
करम की नज़र है तो अपना हाथ मेरी रान के नीचे रख, और देख,
मेहरबानी और सच्चाई से मेरे साथ पेश आना; मुझ को मिस्र में
दफ़्न न करना।
30 †बल्कि जब मैं अपने बाप — दादा के साथ सो जाऊँ तो
मुझे मिस्र से ले जाकर उनके क़ब्रिस्तान में दफ़न करना।" उसने
जवाब दिया, "जैसा तूने कहा है मैं वैसा ही करूँगा।"
31 और उसने कहा कि तू मुझ से क़सम खा। और उसने उससे
क़सम खाई, ‡तब इस्राईल अपने बिस्तर पर सिरहाने की तरफ़
सिजदे में हो गया।

# 48

*[illegible]*

1 इन बातों के बाद यूँ हुआ कि किसी ने यूसुफ़ से कहा, "तेरा
बाप बीमार है।" तब वह अपने दोनो बेटों, मनस्सी और इफ़्राईम
को साथ लेकर चला।
2 और या'क़ूब से कहा गया, तेरा बेटा यूसुफ़ तेरे पास आ रहा
है, और इस्राईल अपने को संभाल कर पलंग पर बैठ गया।
3 और या'क़ूब ने यूसुफ़ से कहा, "ख़ुदा — ए — क़ादिर — ए
— मुतलक़ मुझे लूज़ में जो मुल्क — ए — कना'न में है, दिखाई
दिया और मुझे बरकत दी।
4 और उसने मुझ से कहा मै तुझे कामयाब करूँगा और
बढ़ाऊंगा और तुझ से क़ौमों का एक गिरोह पैदा करूँगा; और

† **47:30** 1: मैं वहां दफ़न होना चाहता हूँ जहाँ मेरेबाप दादा दफ़न हुए थे ‡ **47:31** उसके बैसाखी का सहारा लेने तक इस्राईल ख़ुदा की इबादत करता रहा — इस्राईल अपने बिछोने के सिरहाने सर्निगुं होगया

तेरे बाद यह ज़मीन तेरी नसल को दूँगा, ताकि यह उनकी हमेशा
की जायदाद हो जाए।
5 तब तेरे दोनों बेटे, जो मुल्क — ए — मिस्र में मेरे आने से
पहले पैदा हुए मेरे हैं, या'नी रूबिन और शमौन की तरह इफ़्राईम
और मनस्सी भी मेरे ही होंगे।
6 और जो औलाद अब उनके बाद तुझ से होगी वह तेरी
ठहरेगी, लेकिन अपनी मीरास में अपने भाइयों के नाम से वह
लोग नामज़द होंगे।
7 और मैं जब फ़द्दान से आता था तो राख़िल ने रास्ते ही में जब
इफ़रात थोड़ी दूर रह गया था, मेरे सामने मुल्क — ए — कना'न
में वफ़ात पाई। और मैंने उसे वहीं इफ़रात के रास्ते में दफ़्न किया।
बैतलहम वही है।"
8 फिर इस्राईल ने यूसुफ़ के बेटों को देख कर पूछा, "यह कौन
हैं?"
9 यूसुफ़ ने अपने बाप से कहा, "यह मेरे बेटे हैं जो ख़ुदा ने मुझे
यहाँ दिए हैं।" उसने कहा, "उनको ज़रा मेरे पास ला, मैं उनको
बरकत दूँगा।"
10 लेकिन इस्राईल की आँखें बुढ़ापे की वजह से धुन्धला गई थीं,
और उसे दिखाई नहीं देता था। तब यूसुफ़ उनको उसके नज़दीक
ले आया। तब उसने उनको चूम कर गले लगा लिया।
11 और इस्राईल ने यूसुफ़ से कहा, "मुझे तो ख़्याल भी न था कि
मैं तेरा मुँह देखूँगा लेकिन ख़ुदा ने तेरी औलाद भी मुझे दिखाई।"
12 और यूसुफ़ उनको अपने घुटनों के बीच से हटा कर मुँह के
बल ज़मीन तक झुका।
13 और यूसुफ़ उन दोनों को लेकर, या'नी इफ़्राईम को अपने
दहने हाथ से इस्राईल के बाएं हाथ के सामने और मनस्सी को
अपने बाएं हाथ से इस्राईल के दहने हाथ के सामने करके, उनको
उसके नज़दीक लाया।

14 और इस्राईल ने अपना दहना हाथ बढ़ा कर इफ़्राईम के
सिर पर जो छोटा था, और बाँया हाथ मनस्सी के सिर पर रख
दिया। उसने जान बूझ कर अपने हाथ यूँ रख्खे, क्यूँकि पहलौठा
तो मनस्सी ही था।
15 और उसने यूसुफ़ को बरकत दी और कहा कि ख़ुदा, जिसके
सामने मेरे बाप अब्रहाम और इस्हाक़ ने अपना दौर पूरा किया;
वह ख़ुदा, जिसने सारी उम्र आज के दिन तक मेरी रहनुमाई की।
16 और वह फ़रिश्ता, जिसने मुझे सब बलाओं से बचाया, इन
लड़कों को बरकत दे; और जो मेरा और मेरे बाप दादा अब्रहाम
और इस्हाक़ का नाम है उसी से यह नामज़द हों, और ज़मीन पर
बहुत कसरत से बढ़ जाएँ।
17 और यूसुफ़ यह देखकर कि उसके बाप ने अपना दहना हाथ
इफ़्राईम के सिर पर रख्खा, नाख़ुश हुआ और उसने अपने बाप का
हाथ थाम लिया, ताकि उसे इफ़्राईम के सिर पर से हटाकर मनस्सी
के सिर पर रख्खे।
18 और यूसुफ़ ने अपने बाप से कहा कि ऐ मेरे बाप, ऐसा न कर;
क्यूँकि पहलौठा यह है, अपना दहना हाथ इसके सिर पर रख।
19 उसके बाप ने न माना, और कहा, “ऐ मेरे बेटे, मुझे ख़ूब
मा'लूम है। इससे भी एक गिरोह पैदा होगी और यह भी बुज़ुर्ग
होगा, लेकिन इसका छोटा भाई इससे बहुत बड़ा होगा और
उसकी नसल से बहुत सी क़ौमें होंगी।”
20 और उसने उनको उस दिन बरकत बख़्शी और कहा,
इस्राईली तेरा नाम ले लेकर यूँ दुआ दिया करेंगे, 'ख़ुदा तुझ को
इफ़्राईम और मनस्सी को तरह कामयाब करे'!' तब उसने इफ़ाईम
को मनस्सी पर फ़ज़ीलत दी।
21 और इस्राईल ने यूसुफ़ से कहा, मैं तो मरता हूँ लेकिन ख़ुदा
तुम्हारे साथ होगा और तुम को फिर तुम्हारे बाप दादा के मुल्क में
ले जाएगा।

22 और मैं तुझे तेरे भाइयों से ज़्यादा एक हिस्सा, जो मैने
अमोरियों के हाथ से अपनी तलवार और कमान से लिया देता
हूँ।

# 49

*[illegible]*

1 और या'क़ूब ने अपने बेटों को यह कह कर बुलवाया कि तुम
सब जमा' हो जाओ, ताकि मैं तुम को बताऊँ कि आख़िरी दिनों
में तुम पर क्या — क्या गुज़रेगा।
2 ऐ, या'क़ूब के बेटों जमा' हो कर सुनो, और अपने बाप
इस्राईल की तरफ़ कान लगाओ।
3 ऐ रूबिन! तू मेरा पहलौठा, मेरी क़ुव्वत और मेरी शहज़ोरी
का पहला फल है। तू मेरे रौब की और मेरी ताक़त की शान है।
4 तू पानी की तरह बे सबात है, इसलिए मुझे फ़ज़ीलत नहीं
मिलेगी क्यूँकि तू अपने बाप के बिस्तर पर चढ़ा तूने उसे नापाक
किया; रूबिन मेरे बिछोने पर चढ़ गया।
5 शमौन और लावी तो भाई — भाई हैं, उनकी तलवारें ज़ुल्म
के हथियार हैं।
6 ऐ मेरी जान! उनके मधरे में शरीक न हो, ऐ मेरी बुज़ुर्गी!
उनकी मजलिस में शामिल न हो, क्यूँकि उन्होंने अपने ग़ज़ब में
एकआदमी को क़त्ल किया, और अपनी खुदराई से बैलों की कूँचें
काटीं।
7 ला'नत उनके ग़ज़ब पर, क्यूँकि वह तुन्द था। और उनके क़हर
पर, क्यूँकि वह सख़्त था; मैं उन्हें या'क़ूब में अलग अलग और
इस्राईल में बिखेर दूँगा।
8 ऐ यहूदाह, तेरे भाई तेरी मदह करेंगे, तेरा हाथ तेरे दुश्मनों
की गर्दन पर होगा। तेरे बाप की औलाद तेरे आगे सिज्दा करेगी।

9 यहूदाह शेर — ए — बबर का बच्चा है ऐ मेरे बेटे! तू शिकार
मार कर चल दिया है। वह शेर — ए — बबर, बल्कि *शेरनी की
तरह दुबक कर बैठ गया, कौन उसे छेड़े?
10 यहूदाह से सल्तनत नहीं छूटेगी। और न उसकी नसल से
हुकूमत का 'असा मौकूफ़ होगा। †जब तक शीलोह न आए और
क़ौमें उसकी फ़रमाबरदार होंगी।
11 वह अपना जवान गधा अंगूर के दरख़्त से, और अपनी गधी
का बच्चा 'आला दरजे के अंगूर के दरख़्त से बाँधा करेगा; वह
अपना लिबास मय में, और अपनी पोशाक आब — ए अंगूर में
धोया करेगा
12 उसकी आँखें मय की वजह से लाल, और उसके दाँत दूध की
वजह से सफ़ेद रहा करेंगे।
13 ज़बूलून समुन्दर के किनारे बसेगा, और जहाज़ों के लिए
बन्दरगाह का काम देगा, और उसकी हद सैदा तक फैली होगी।
14 इश्कार मज़बूत गधा है, ‡जो दो भेड़सालों के बीच बैठा है;
15 उसने एक अच्छी आरामगाह और खुशनुमा ज़मीन को देख
कर अपना कन्धा बोझ उठाने को झुकाया, और बेगार में ग़ुलाम
की तरह काम करने लगा।
16 दान इस्राईल के क़बीलों में से एक की तरह अपने लोगों का
इन्साफ़ करेगा।
17 दान रास्ते का साँप है, वह राहगुज़र का अज़दह है, जो घोड़े
के 'अकब को ऐसा डसता है किउसका सवार पछाड़ खा कर गिर
पड़ता है।
18 ऐ ख़ुदावन्द, मैं तेरी नजात की राह देखता आया हूँ।
19 जद्द पर एक फौज़ हमला करेगी लेकिन वह उसके दुम्बाला
पर छापा मारेगा।

---

* **49:9** बड़ा बब्बर शेर, शेरनी † **49:10** जब तक कि वह (ख़ुदा) न आए जिस का मैं हूँ ‡ **49:14** या दो बोझें

20 आशर नफ़ीस अनाज पैदा किया करेगा और बादशाहों के
लायक़ लज़ीज़ सामान मुहय्या करेगा।
21 नफ़्ताली ऐसा है जैसा छूटी हुई हिरनी, वह मीठी — मीठी
बातें करता है।
22 यूसुफ़ एक फलदार पौधा है, ऐसा फलदार पौधा जो पानी
के चश्मे के पास लगा हुआ हो, और उसकी शाखें। दीवार पर फैल
गई हों।
23 तीरंदाज़ों ने उसे बहुत छेड़ा और मारा और सताया है;
24 लेकिन उसकी कमान मज़बूत रही, और उसके हाथों और
बाजुओं ने या'क़ूब के क़ादिर के हाथ से ताक़त पाई, वहीं से वह
चौपान उठा है जो इस्राईल की चट्टान है।
25 यह तेरे बाप के §ख़ुदा का काम है, जो तेरी मदद करेगा,
उसी क़ादिर — ए — मुतलक का काम जो ऊपर से आसमान की
बरकतें, और नीचे से गहरे समुन्दर कि बरकतें 'अता करेगा।
26 तेरे बाप की बरकतें, *मेरे बाप दादा की बरकतों से कहीं
ज़्यादा हैं, और क़दीम पहाड़ों की इन्तिहा तक पहुँची हैं; वह यूसुफ़
के सिर, बल्कि उसके सिर की चाँदी पर जो अपने भाइयों से जुदा
हुआ नाज़िल होंगी।
27 बिनयमीन फाड़ने वाला भेड़िया है, वह सुबह को शिकार
खाएगा और शाम को लूट का माल बाँटेगा।
28 इस्राईल के बारह क़बीले यही हैं: और उनके बाप ने जो —
जो बातें कह कर उनको बरकत दीं वह भी यही हैं; हर एक को,
उसकी बरकत के मुवाफ़िक़ उसने बरकत दी।

§ **49:25** कादिर — ए — मुतलक़ ख़ुदा * **49:26** या अब्दी पहाड़ों

29 फिर उसने उनको हुक्म किया और कहा, कि मैं अपने लोगों
में शामिल होने पर हूँ; मुझे मेरे बाप दादा के पास उस मग़ारह
मारे में जो इफ़रोन हित्ती के खेत में है दफ़्न करना,
30 या'नी उस मग़ारे में जो मुल्क — ए — कना'न में ममरे
के सामने मकफ़ीला के खेत में है, जिसे अब्रहाम ने खेत के साथ
'इफ़रोन हित्ती से मोल लिया था, ताकि क़ब्रिस्तान के लिए वह
उसकी मिलिकयत बन जाए।
31 वहाँ उन्होंने अब्रहाम को और उसकी बीवी सारा को दफ़न
किया, वहीं उन्होने इस्हाक़ और उसकी बीवी रिबक़ा को दफ़न
किया, और वहीं मैंने भी लियाह को दफ़न किया,
32 या'नी उसी खेत के माग़ारे में जो बनी हित्ती से ख़रीदा था।
33 और जब या'क़ूब अपने बेटों को वसीयत कर चुका तो, उसने
अपने पाँव बिछौने पर समेट लिए और दम छोड़ दिया और अपने
लोगों में जा मिला।

# 50

1 तब यूसुफ़ अपने बाप के मुँह से लिपट कर उस पर रोया और
उसको चूमा।
2 और यूसुफ़ ने उन हकीमों को जो उसके नौकर थे, अपने बाप
की लाश में ख़ुशबू भरने का हुक्म दिया। तब हकीमों ने इस्राईल
की लाश में ख़ुशबू भरी।
3 और उसके चालीस दिन पूरे हुए, क्यूँकि ख़ुशबू भरने में इतने
ही दिन लगते हैं। और मिस्री उसके लिए सत्तर दिन तक मातम
करते रहे।
4 और जब मातम के दिन गुज़र गए तो यूसुफ़ ने फ़िर'औन के
घर के लोगों से कहा, अगर मुझ पर तुम्हारे करम की नज़र है तो
फ़िर'औन से ज़रा 'अर्ज़ कर दो,
5 कि मेरे बाप ने यह मुझ से क़सम लेकर कहा है, “मैं तो मरता
हूँ, तू मुझ को मेरी क़ब्र में जो मैंने मुल्क — ए — कना'न में

अपने लिए खुदवाई है, दफ़्न करना। इसलिए ज़रा मुझे इजाज़त
दे कि मैं वहाँ जाकर अपने बाप को दफ़्न करूँ, और मैं लौट कर
आ जाऊँगा।"
6 फ़िर'औन ने कहा, कि जा और अपने बाप को जैसे उसने तुझ
से क़सम ली है दफ़्न कर।
7 तब यूसुफ़ अपने बाप को दफ़्न करने चला, और फ़िर'औन के
सब ख़ादिम और उसके घर के बुज़ुर्ग, और मुल्क — ए — मिस्र के
सब बुज़ुर्ग,
8 और यूसुफ़ के घर के सब लोग और उसके भाई, और उसके
बाप के घर के आदमी उसके साथ गए; वह सिर्फ़ अपने बाल बच्चे
और भेड़ बकरियाँ और गाय — बैल जशन के 'इलाक़े में छोड़
गए।
9 और उसके साथ रथ और सवार भी गए, और एक बड़ा
क़ाफिला उसके साथ था।
10 और वह अतद के खलिहान पर जो यरदन के पार है पहुंचे,
और वहाँ उन्होंने बुलन्द और दिलसोज़ आवाज़ से नौहा किया;
और यूसुफ़ ने अपने बाप के लिए सात दिन तक मातम कराया।
11 और जब उस मुल्क के बाशिन्दों या'नी कना'नियों ने
अतद में खलिहान पर इस तरह का मातम देखा, तो कहने लगे,
"मिस्रियों का यह बड़ा दर्दनाक मातम है।" इसलिए वह जगह
*अबील मिस्रयीम कहलाई, और वह यरदन के पार है।
12 और या'क़ूब के बेटों ने जैसा उसने उनको हुक्म किया था,
वैसा ही उसके लिए किया।
13 क्यूँकि उन्होंने उसे मुल्क — ए — कना'न में ले जाकर ममरे
के सामने मकफ़ीला के खेत के मग़ारे में, जिसे अब्रहाम ने 'इफ़रोन
हित्ती से खरीदकर क़ब्रिस्तान के लिए अपनी मिल्कियत बना
लिया था दफ़न किया।

*[illegible]*

* **50:11** मिस्रियों का मातम

14 और यूसुफ़ अपने बाप को दफ़्न करके अपने भाइयों, और
उनके साथ जोउसके बाप को दफ़्न करने के लिए उसके साथ गए
थे, मिस्र को लौटा।
15 और यूसुफ़ के भाई यह देख कर कि उनका बाप मर गया
कहने लगे, कि यूसुफ़ शायद हम से दुश्मनी करे, और सारी बुराई
का जो हम ने उससे की है पूरा बदला ले।
16 तब उन्होंने यूसुफ़ को यह कहला भेजा, “तेरे बाप ने अपने
मरने से आगे ये हुक्म किया था,
17 'तुम यूसुफ़ से कहना कि अपने भाइयों की ख़ता और उनका
गुनाह अब बख़्श दे, क्यूँकि उन्होंने तुझ से बुराई की; इसलिए
अब तू अपने बाप के ख़ुदा के बन्दों की ख़ता बख़्श दे'।” और यूसुफ़
उनकी यह बातें सुन कर रोया।
18 और उसके भाइयों ने ख़ुद भी उसके सामने जाकर अपने सिर
टेक दिए और कहा, “देख! हम तेरे ख़ादिम हैं।”
19 यूसुफ़ ने उनसे कहा, “मत डरो! क्या मैं ख़ुदा की जगह पर
हूँ?
20 तुम ने तो मुझ से बुराई करने का इरादा किया था, लेकिन
ख़ुदा ने उसी से नेकी का क़स्द किया, ताकि बहुत से लोगों की
जान बचाए चुनाँचे आज के दिन ऐसा ही हो रहा है।
21 इसलिए तुम मत डरो, मैं तुम्हारी और तुम्हारे बाल बच्चों
की परवरिश करता रहूँगा।” इस तरह उसने अपनी मुलायम बातों
से उनको तसल्ली दी।

### [illegible]

22 और यूसुफ़ और उसके बाप के घर के लोग मिस्र में रहे, और
यूसुफ़ एक सौ दस साल तक ज़िन्दा रहा।
23 और यूसुफ़ ने इफ़्राईम की औलाद तीसरी नसल तक देखी,
और मनस्सी के बेटे मकीर की औलाद को भी यूसुफ़ ने अपने
घुटनों पर खिलाया।

24 और यूसुफ़ ने अपने भाइयों से कहा, “मैं मरता हूँ; और ख़ुदा
यक़ीनन तुम को याद करेगा, और तुम को इस मुल्क से निकाल
कर उस मुल्क में पहुँचाएगा जिसके देने की क़सम उसने अब्रहाम
और इस्हाक़ और या'क़ूब से खाई थी।”
25 और यूसुफ़ ने बनी — इस्राईल से क़सम लेकर कहा, ख़ुदा
यक़ीनन तुम को याद करेगा, इसलिए तुम ज़रूर ही मेरी हड्डियों
को यहाँ से ले जाना।
26 और यूसुफ़ ने एक सौ दस साल का होकर वफ़ात पाई; और
उन्होंने उसकी लाश में ख़ुशबू भरी और उसे मिस्र ही में ताबूत में
रख्खा।

# इंडियन रिवाइज्ड वर्जन (IRV) उर्दू - 2019

## The Holy Bible in the Urdu language of India: इंडियन रिवाइज्ड वर्जन (IRV) उर्दू - 2019

copyright © 2019 Bridge Connectivity Solutions Pvt. Ltd.

Language: اردو (Urdu)

Contributor: Bridge Connectivity Solutions Pvt. Ltd.

This translation is made available to you under the terms of the Creative Commons Attribution Share-Alike license 4.0.

You have permission to share and redistribute this Bible translation in any format and to make reasonable revisions and adaptations of this translation, provided that:

- You include the above copyright and source information.
- If you make any changes to the text, you must indicate that you did so in a way that makes it clear that the original licensor is not necessarily endorsing your changes.
- If you redistribute this text, you must distribute your contributions under the same license as the original.

Pictures included with Scriptures and other documents on this site are licensed just for use with those Scriptures and documents. For other uses, please contact the respective copyright owners.

Note that in addition to the rules above, revising and adapting God's Word involves a great responsibility to be true to God's Word. See Revelation 22:18-19.

2023-01-03

PDF generated using Haiola and XeLaTeX on 18 Apr 2025 from source files dated 19 Apr 2023

4a2fe4e0-ffe8-5377-87c7-19b3106ba2bc